चयन

महात्मा ज्योतिराव फुले की
संग्रहित रचनाएँ भाग II

Table of Contents

Selections

COLLECTED WORKS OF
MAHATMA JYOTIRAO PHULE
VOL. II

बैरिस्टर पी. जी. पाटिल

1. कवलपुर (जिला सांगली) में एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक का बेटा। कर्मवीर भाऊराव पाटिल द्वारा अपने 'रयत शिक्षण संस्थान', सतारा के माध्यम से प्यार से पाला-पोसा और शिक्षित किया गया।

2. बॉम्बे विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित ह्यूलिंग्स पुरस्कार (इंटर आर्ट्स 1942) और एलिस छात्रवृत्ति (बी.ए. 1945) के प्राप्तकर्ता। वे बॉम्बे विश्वविद्यालय के 134 साल के इतिहास में इन दोनों पुरस्कारों के आठ प्राप्तकर्ताओं में से एक हैं।

3. विलिंगडन कॉलेज, सांगली, फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे, किंग्स कॉलेज, लंदन और लिंकन इन, लंदन में अध्ययन किया।

4. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 1942-43 में पुणे के येरवडा केंद्रीय कारागार में कैद रहे।

5. शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के कुलपति (1975-78)।

6. महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग, बॉम्बे के सदस्य (1979-83)।

7. कर्मवीर भाऊराव पाटिल की स्मृतियों की पुस्तक 'कर्मवीरोपनिषद' (मराठी में) प्रकाशित।

8. कर्मवीर भाऊराव की दो खंडों वाली जीवनी (अंग्रेजी में) अभी-अभी पूरी की है।

9. महात्मा फुले के एकत्रित कार्यों से चयनित अंशों का अनुवाद - (खंड II) खंड-I (दासता) 28-11-91 को प्रकाशित हुआ।

महात्मा ज्योतिराव फुले की रचनाओं का संग्रह

खंड II

चयन

महात्मा ज्योतिराव फुले की रचनाओं का संग्रह

खंड II

चयन

अनुवादक
प्रो. पी. जी. पाटिल

एम.ए., बी.ए. (लंदन), बार-एट-लॉ

पूर्व कुलपति, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार

मंत्रालय, बॉम्बे 400 032

1991

महात्मा ज्योतिराव फुले की पुण्यतिथि के लिए

केंद्रीय समिति

पहला संस्करण: 28 नवंबर 1991

© सचिव

शिक्षा विभाग

महाराष्ट्र सरकार

पहला संस्करण: 10,000 प्रतियां, पृष्ठ: 182, मूल्य: ₹29.00

प्रकाशक

शिक्षा विभाग

महाराष्ट्र सरकार

बॉम्बे 400 032

महात्मा ज्योतिराव फुले की पुण्यतिथि के लिए

केंद्रीय समिति

प्रिंटर

प्रबंधक

सरकारी केंद्रीय प्रेस

नेताजी सुभाष रोड

मुंबई 400 004

विषयसूची
बैरिस्टर पी. जी. पाटिल

महात्मा ज्योतिराव फुले की रचनाओं का संग्रह

महात्मा जोतीराव फुले की मृत्यु शताब्दी

केंद्रीय समिति

प्रस्तावना

प्रतिबद्धता पूरी हुई

अनुवादक द्वारा प्रस्तुत सामग्री

ज्योतिराव गोविंदराव फुले - एक संक्षिप्त जीवन परिचय

सत्य का सार्वभौमिक धर्म
अध्याय 11: पुण्य (पुण्यपूर्ण कर्म)

एक चेतावनी

पुरोहितवाद का पर्दाफाश
परिचय
पुरोहितवाद का पर्दाफाश

Ballad on Chhatrapati Shivaji

परिचय

A Ballad about Chhatrapati Shivaji Raje Bhonsle

बड़ौदा राज्य के श्रीमंत महाराज सयाजीराव गायकवाड़ को एक पत्र

बड़ौदा के दीवान श्री लक्ष्मण जगन्नाथ को पत्र

पराजितों (दासों) का गीत

अछूतों की “अपोलोजिया” से

जोतिराव गोविंदराव फुले द्वारा रचित 'द कल्टीवेटर्स व्हिप-कॉर्ड' की प्रस्तावना (6 अप्रैल 1883)

"कृषक की चाबुक की डोर" का परिशिष्ट 'ए'

परिशिष्ट 'बी'

मराठी साहित्य सम्मेलन को एक पत्र

महात्मा फुले की एक कविता, जो अब तक अप्रकाशित थी।

भारत में शिशु विवाह पर श्री बी.एम. मालाबारी द्वारा लिखित नोट संख्या 1 पर जोतीराव गोविंदराव फुले की राय।

श्री बी. एम. मालाबारी द्वारा जबरन विधवापन पर लिखे गए नोट संख्या II पर जोत्तेराव गोविंदराव फुले की राय।

शिक्षा आयोग को संबोधित ज्ञापन

प्राथमिक शिक्षा

स्वदेशी स्कूल

उच्च शिक्षा

कविताएं

हमारी ब्राह्मण प्रधान नीति-शिक्षा प्रणाली

सत्य पर एक कविता ('अखंड')

Advice to the Shudras and Ati-Shudras ('Akhand ')

शाश्वत सत्य के लिए एक स्तुतिगान (प्रशंसा गीत)

(शाश्वत सत्य के लिए एक जयजयकार)

पुस्तक “सत्य का सार्वभौमिक धर्म” के अंत में दी गई कविताएँ (अखंड)

ब्राह्मणों का पाखंड

शूद्रों से स्थानीय निधि (कर) वसूलने की प्रथा की निंदा करने वाली कविताएँ (1 से 11)
ब्राह्मण पुरोहितवाद के बारे में अभंग

काव्य चयन
The Shudras Duped
किसी प्रवक्ता की आवश्यकता नहीं
सच का
ब्रैडलॉ
शूद्रों की दुर्दशा
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
एक माफी जो बहुत पहले ही मांगी जानी चाहिए थी
स्थानीय निधि
राष्ट्रीय कांग्रेस?
संतुष्टि
स्वर्ग कहाँ है?
सुकरात
सहानुभूतिपूर्ण समझ
दूसरों का उपकार करने का सिद्धान्त
आर्यन भाटों की धूर्तता
दूसरों का उपकार करने का सिद्धान्त
साहस या धैर्य
शूद्रों का शोषण किया गया
धन्य व्यक्ति
नीति
आत्म आत्मनिरीक्षण
आत्म आत्मनिरीक्षण
आत्म आत्मनिरीक्षण
प्रबुद्ध लोग

महात्मा जोतीराव फुले की मृत्यु शताब्दी केंद्रीय समिति

कार्यकारिणी निकाय

माननीय श्री सुधाकरराव नाइक (मुख्यमंत्री) - अध्यक्ष
श्री दादासाहेब रूपवते, कार्यकारी अध्यक्ष
श्री मुकुंदराव पाटिल - उपराष्ट्रपति
प्रिंट. एन. डी. पाटिल - उपाध्यक्ष
MRS. KAMAL VICHARE - VICE PRESIDENT
डॉ। जे । एम वाघमारे - महासचिव
डॉ. बाबा अधव - सचिव
प्रधान मंत्री पी बी पाटिल - सचिव
श्री एकनाथ साल्वे - सचिव
MRS. SEEMA SAKHARE - MEMBER
श्री हरि नारके - सदस्य
प्रो. बी. एन. कल्याणकर - सदस्य
वसंत चंद्रमा - सदस्य
सचिव-शिक्षा - सदस्य

सदस्यों
रामराव का भाई
शिक्षा निदेशक
Prakash Ambedkar
विलासराव देशमुख
वी. वी. शिरवाडकर
Nanabhau Embadwar
Sushilkumar Shinde
Kamalkishor Kadam
नरेंद्र टिडके
रामदास अठावले
Pratibha Patil
Manohar Phalke
Jayantrao Tilak

विट्ठलराव हांडे
रावसाहेब कासबे
अन्नासाहेब शिंदे
Shankarrao Jagtap
Ganpat Deshmukh
मनोहर जोशी
आर. एस. गवाई
चित्रा नाइक
इंदुताई पारिख
विट्ठल वाघ
Yashwant Choudhary
Mrunal Gore
Sudhir Bedekar
बी.सी. काले
Pushpa Bonde
एम. वाई. दलवी
जे. बी. लाइगुडे
Nilam Gorhe
वामनराव लोखंडे
लक्ष्मण माने
आर. एन. चव्हाण
जोतिराव राउत
यशवंतराव मोहिते
उत्तमराव पाटिल
Abasaheb Mukundrao
Narendra Dabholkar
G. P. Pradhan
पाटिल
Sham Manav
शरदचंद्र
N. M. Katkar
Prabhakar Sanzgiri
गोखले
Bapurao Jagtap
Gopinath Mundhe

प्रस्तावना

जोती का कहना है, "मानव जाति का सार्वभौमिक धर्म सत्य और नैतिकता पर आधारित है, और इसके अलावा सब कुछ अनैतिक है।"

'कल्टीवेटर्स व्हिप-कॉर्ड' की शुरुआती पंक्तियाँ बिल्कुल प्रसिद्ध हैं। "शिक्षा के अभाव में बुद्धि नष्ट हो गई; बुद्धि के अभाव में नैतिकता नष्ट हो गई... इत्यादि।"

उनकी रुचियों का दायरा विशाल था, उनकी बुद्धि असाधारण थी, और उनकी सहानुभूति और चिंता वास्तव में सार्वभौमिक थी। महाराष्ट्र में ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता और क्रांतिकारी के उदय के ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय कारणों की पड़ताल करना हमारे लिए न्यायसंगत होगा।

मैं पूरी ईमानदारी से आशा और प्रार्थना करता हूँ कि महाराष्ट्र की युवा पीढ़ी इन 'चयनित रचनाओं' का श्रद्धापूर्वक अध्ययन करेगी और इन महान मौलिक विचारों को अपने व्यक्तिगत जीवन में उतारने का भरसक प्रयास करेगी। जैसा कि डब्ल्यू. एच. लॉन्गफेलो ने कहा था:

महान पुरुषों का जीवन हमें यही याद दिलाता है,
हम अपने जीवन को उदात्त बना सकते हैं-

उन्हें इन प्रेरणादायक शब्दों को "पढ़ना, सीखना, समझना और आत्मसात करना" चाहिए। इस 'शाश्वत ज्वाला' का प्रकाश आने वाले वर्षों में भी हमारे मार्ग को प्रकाशित करता रहेगा। यह अंधकारमय परिवेश में हमारी निरंतर प्रगति में हमारा हौसला बढ़ाएगा और निकट भविष्य में हमें 'वादा किए गए देश' की एक झलक भी प्रदान करेगा।

मुझे महाराष्ट्र के विशेष रूप से और भारत के सामान्य रूप से, इन 'चयनित रचनाओं' को विवेकशील जनता के समक्ष प्रस्तुत करने में अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

शरद पवार
(रक्षा मंत्री, भारत सरकार)

नई दिल्ली :
18 दिसंबर, 1991

प्रतिबद्धता पूरी हुई

महात्मा फुले की पुण्यतिथि की शताब्दी मनाने के लिए गठित राज्य समिति की सिफारिश पर महाराष्ट्र सरकार ने महात्मा फुले के जीवन और मिशन से संबंधित स्रोत सामग्री के प्रकाशन के लिए एक अलग समिति का गठन किया। शताब्दी समिति ने शताब्दी वर्ष के दौरान महात्मा फुले की रचनाओं का अंग्रेजी में दो खंडों में संग्रह प्रकाशित करने का निर्णय लिया। पहला खंड, जिसका नाम 'गुलामगिरी' है, 28 नवंबर 1991 को महात्मा की पुण्यतिथि पर बंबई में विमोचित किया गया। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि इस परियोजना का दूसरा और अंतिम खंड अब प्रकाशित हो रहा है। इसका विमोचन 3 जनवरी 1991 को सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर उनके पैतृक गांव नाइगांव, खंडाला तहसील, जिला सतारा में राज्य शिक्षा मंत्री श्री अनंतराव थोपटे के हाथों किया जा रहा है। समिति निर्धारित समय में अपनी प्रतिबद्धता पूरी करने से स्वाभाविक रूप से प्रसन्न है। यह सब प्रो. पी. जी. पाटिल (वकील) के अथक प्रयासों और समर्पण के कारण ही संभव हो पाया। दोनों खंडों का अनुवाद उन्होंने बड़ी कुशलता से किया है। 'सिलेक्शंस' का चयन भी उन्हीं का है। हमने इस संबंध में उनकी बात मानकर सारा काम उन्हीं पर छोड़ दिया। यह सचमुच एक बहुत बड़ा काम था। सौ साल से भी अधिक पुरानी मराठी भाषा—वह भी महात्मा फुले की 'हथौड़ा और दरांती' वाली मराठी—का आज के समय की अंग्रेज़ी में अनुवाद करना एक बेहद कठिन काम था।

बैरिस्टर पी. जी. पाटिल स्वेच्छा से समिति को बचाने के लिए आगे आए। उन्होंने महात्मा गांधी के अखंडों का अनुवाद भी किया और मूल पाठ की काव्यमय चमक को जरा भी कम नहीं होने दिया! उनके प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। भारत ही नहीं, बल्कि पूरे अंग्रेजी भाषी विश्व में परिवर्तन के समर्थक, सुधारवादी, कट्टरपंथी और प्रोटेस्टेंट सभी प्रो. पाटिल की इस उपलब्धि की सराहना करेंगे। विश्वभर में पुनर्जागरण आंदोलन सदा उनके ऋणी रहेंगे।

क्या इस सामग्री का प्रकाशन पुरानी बातों को हवा दे रहा है? क्या यह मरी हुई चीज़ को फिर से कुरेद रहा है? या क्या यह पुराने विवादों को फिर से हवा दे रहा है? हमें ऐसा नहीं लगता। पहली बात तो यह इतिहास का हिस्सा है—ऐतिहासिक दस्तावेज़। दूसरी बात, यह महात्मा फुले के क्रांतिकारी स्वरूप और उनके अडिग मिशन को सामने ला रहा है। कई बार महात्मा फुले पर ब्राह्मण-विरोधी होने का आरोप लगाया गया है। क्या वे सचमुच ऐसे थे?

भारत में ब्रिटिश शासन के कारण—जिसे न्यायमूर्ति गोविंद महादेव रानाडे ने 'ईश्वरीय कृपा' बताया था—भारत पश्चिमी जगत की सामाजिक-आर्थिक क्रांतियों के संपर्क में आया। इससे देशी बुद्धिजीवियों के लिए आधुनिक ज्ञान के द्वार खुल गए। फ्रांस-इटली में पुनर्जागरण और अमेरिकी क्रांति, साथ ही अब्राहम लिंकन के नेतृत्व में अमेरिका में अश्वेतों की मुक्ति, भारतीय सामाजिक आंदोलनों के लिए एक प्रेरणास्रोत साबित हुई।

महात्मा फुले इन ऐतिहासिक विश्व घटनाओं से उत्पन्न विचारों और संदेशों से स्वाभाविक रूप से प्रभावित और विस्मित थे। शूद्रों और अति-शूद्रों (पिछड़े वर्गों) की दुर्दशा नीग्रो लोगों से भी बदतर थी। पश्चिमी पुनर्जागरण में विद्रोह पुरोहित वर्ग और उसके प्रभुत्व के विरुद्ध था। भारत में भी यह विद्रोह पुरोहित वर्ग के विरुद्ध ही होना था, जो सनातन (हिंदू) धर्म में ब्राह्मण थे। भारत की भाषा जन्म-आधारित जाति की भाषा थी और आज भी है। इसलिए पुरोहित वर्ग के विरुद्ध विद्रोह और संघर्ष एक विशेष जाति के विरुद्ध प्रतीत होता था। क्या इसके लिए महात्मा फुले, बाबासाहेब अंबेडकर या उनके जैसे अन्य सामाजिक क्रांतिकारियों को दोषी ठहराया जा सकता है? ब्राह्मणवादी समाज के विरुद्ध संघर्ष, जिसे भौगोलिक कारणों से गलत तरीके से हिंदू (सिंधु नदी से व्युत्पन्न) कहा जाता है, स्वाभाविक था। किसी भी समाज में सामाजिक सुधार की चर्चा उस समाज को नियंत्रित करने वाले धर्म के सिद्धांतों और प्रथाओं के विश्लेषण और चर्चा से ही शुरू होती है। भारत में ब्राह्मणवाद का प्रभाव इतना गहरा था कि वह गला घोंटने जैसा था! महात्मा फुले और बाबासाहेब अंबेडकर जैसे क्रांतिकारियों को जिस कठोर भाषा का प्रयोग करना पड़ा, वह उस व्यवस्था की क्रूरता और प्रभुत्व के अनुरूप थी। क्या एक साधारण रेज़र ब्लेड किसी बरगद के पेड़ के तने को काटने के लिए पर्याप्त होगा?

मैं महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और भारत के वर्तमान रक्षा मंत्री श्री शरदराव पवार को हमारे सभी प्रयासों को भरपूर आशीर्वाद देने और एक प्रेरणादायक प्रस्तावना लिखने के लिए धन्यवाद देता हूं।
इस खंड के लिए। मैं वर्तमान मुख्यमंत्री श्री सुधाकरराव नाइक को भी इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए धन्यवाद देता हूं। शिक्षा मंत्री श्री अनंतराव थोपटे को भी धन्यवाद।
हमारी समिति के अध्यक्ष।

श्री हरि नारके ने हमारी परियोजनाओं को कार्यान्वित करने में अथक प्रयास किए हैं, जिसके लिए हम उनकी सराहना और आशीर्वाद के पात्र हैं। श्री मुकुंदराव पाटिल, प्रो. एन.डी. पाटिल, श्रीमती कमलताई विचारे और अन्य सभी पदाधिकारियों का विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है।

डी.टी. रूपवाटे,
कार्यकारी अध्यक्ष

बॉम्बे:
3 जनवरी 1992
(सावित्रीबाई की जयंती)

अनुवादक द्वारा प्रस्तुत सामग्री

मुझे महात्मा ज्योतिराव फुले की रचनाओं के संग्रह से चयनित अंशों का दूसरा खंड प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पहला खंड 'दासता' 28 नवंबर 1991 को प्रकाशित हुआ था।

'सत्य का सार्वभौमिक धर्म' के अध्याय 11, 12, 13, 14, 18 (द्वितीय भाग), 19 (पृष्ठ 427-430 और पृष्ठ 433) और 24 का चयन किया गया है। अध्याय 19 में 'सत्य के सार्वभौमिक धर्म' के अनुयायियों की 33 परिभाषाएँ दी गई हैं। पृष्ठ 33 में संक्षेप में उन प्रमुख विशेषताओं का वर्णन किया गया है जो एक परिवार इन सिद्धांतों को दैनिक जीवन में व्यवहार में लाता है।

महात्मा फुले ने अपने समय के उन दार्शनिकों को स्पष्ट चेतावनी दी है जो केवल बातों का ज्ञान रखते हैं और जिन्होंने गलत तरीके से यह घोषणा की थी कि 'हमारे समय के किसानों की स्थिति लगभग तीस साल पहले की तुलना में कहीं बेहतर है'।

'प्रीस्टक्राफ्ट एक्सपोज्ड' में जोतिराव ने उन विभिन्न चालों का पर्दाफाश किया है जिनका इस्तेमाल पुरोहित वर्ग अपने समय के अज्ञानी और अंधविश्वासी शूद्रों और अति-शूद्रों पर किया करता था।

'छत्रपति शिवाजी की गाथा' के अंतिम दो खंड यहाँ शामिल किए गए हैं। ज्योतिराव घोषणा करते हैं कि उन्हें छत्रपति शिवाजी महाराज की महिमा का गुणगान करने पर गर्व है, जो 'खेती करने वालों के लिए एक गौरव' थे।

बड़ौदा के श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ को लिखे पत्र में जोतिराव ने अपने समय की जनता की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है और उनसे प्रार्थना की है कि वे अपनी प्रजा की स्थिति में सुधार के लिए तत्काल कदम उठाएं।

'द बैलाड ऑफ द कॉन्क्वर्ड स्लेव्स' (खंड 3 और 4) में जोतिराव जनता की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हैं और उन्हें हर हाल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे महात्मा गौतम बुद्ध की प्रशंसा भी करते हैं।

'द अनटचेबल्स अपोलोजिया' में जोतिराव एक काल्पनिक स्थिति की कल्पना करते हैं— अर्थात् महारानी विक्टोरिया की भारत यात्रा (विशेष रूप से उस समय के बॉम्बे प्रेसीडेंसी की)। जब महारानी गांव की सीमा से बाहर बसे अछूतों की गरीब झोपड़ियों का दौरा करती हैं, तो कुछ प्रतिनिधि महार और मांग ब्रिटिश राज के दौरान भी उनकी अमानवीय स्थिति का सजीव वर्णन करते हैं। वे उनसे यहाँ आधुनिक कृषि पद्धतियों को लागू करने के लिए तत्काल कदम उठाने का अनुरोध करते हैं। वे उनसे (1) सार्वजनिक उपयोगिता कार्यों और (2) उदार शैक्षिक सुधारों को शुरू करने का भी अनुरोध करते हैं।

‘द कल्टीवेटर्स व्हिपकॉर्ड’ की शुरुआती पंक्तियाँ, ‘ज्ञान के अभाव में बुद्धि का लोप हो गया’ आदि, अत्यंत प्रसिद्ध हैं। जोतिराव शूद्रों और अति-शूद्रों की दयनीय स्थिति पर बल देते हुए पुरोहित वर्ग और उदासीन ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा जनता पर किए जा रहे अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण को उजागर करते हैं। पुस्तक के अंत में, जोतिराव अंग्रेजी सरकार को यहाँ के अज्ञानी किसानों द्वारा अपनाई जा रही कृषि पद्धतियों और कार्यों में सुधार के लिए कुछ ठोस सुझाव देते हैं।

'द कल्टीवेटर्स व्हिपकॉर्ड' शीर्षक का चयन महत्वपूर्ण है।

'द कल्टीवेटर्स व्हिपकॉर्ड' के परिशिष्ट 'ए' और 'बी' भी समान रूप से प्रासंगिक हैं।

मराठी साहित्यिक सम्मेलन को लिखे संक्षिप्त पत्र में जोतिराव ने तथाकथित परिष्कृत साहित्यकारों यानी 'अमीर आदर्शवादियों' की कड़ी आलोचना की है और एक नए प्रकार के साहित्य की वकालत की है जो सार्वभौमिक, सर्वव्यापी और वास्तव में जनता का प्रतिनिधित्व करने वाला हो।

'कुलंबिन' (एक किसान महिला) में जोतिराव उसके दयनीय जीवन का वर्णन करते हैं और उसकी तुलना भट्ट महिला के जीवन से करते हैं।

मैंने महात्मा ज्योतिराव की कुछ चुनिंदा कविताओं (अखंडों) के अनुवाद भी शामिल किए हैं। महात्मा ज्योतिराव के दो गुण थे - अपोलो और मिनर्वा। वे गद्य और पद्य में निपुणता से कलम चलाते थे। वे सरकार द्वारा गरीब किसानों से 'स्थानीय निधि' वसूलने और जनता के हित में उसका उपयोग न करने की प्रथा की निंदा करते थे। वे ब्राह्मणों के पाखंड की आलोचना करते थे। वे 'शाश्वत सत्य' की स्तुति करते थे। वे दलितों को सलाह देते थे। वे अपने समय की ब्राह्मण-प्रधान शिक्षा नीति की खामियों को उजागर करते थे। उनकी सभी काव्य रचनाएँ उनके हृदय से निकली थीं और इसीलिए सहज रूप से लोगों के दिलों को छू जाती थीं।

ये ‘चयन’ 19वीं सदी के महान सामाजिक विचारक और क्रांतिकारी के विचारों और चिंतन की समृद्ध विविधता का महज एक नमूना मात्र हैं। डॉ. अंबेडकर महात्मा फुले को अपने तीन गुरुओं में से एक मानते थे (अन्य दो बुद्ध और कबीर थे), और उन्होंने अपनी एक पुस्तक के ‘समर्पण’ में उन्हें ‘आधुनिक युग का सबसे महान शूद्र’ बताया था।

महात्मा ज्योतिराव का हृदय पृथ्वी के सबसे निम्न और सबसे पिछड़े लोगों के लिए तड़पता था। वे उनके हित के लिए एक साहसी योद्धा थे।

यदि दूसरे महात्मा (गांधीजी) की महत्वाकांक्षा 'हर आंख से आंसू पोंछना' थी, तो जोतिराव की महत्वाकांक्षा शूद्रों और अति-शूद्रों के जीवन में सर्वांगीण परिवर्तन लाना थी। फ्रांसिस

बेकन ने कहा था, 'जितनी श्रेष्ठ आत्मा होती है, उतनी ही अधिक करुणा की पात्र वह होती है।' पेरिकल्स ने वर्षों पहले कहा था, 'संपूर्ण पृथ्वी प्रसिद्ध पुरुषों की समाधि है।'

मैंने इस खंड में महात्मा फुले द्वारा शिक्षा आयोग को संबोधित ज्ञापन (अक्टूबर 1882) के साथ-साथ शिशु विवाह और जबरन विधवापन पर उनके विचारों (मूल रूप से अंग्रेजी में) को भी शामिल किया है।

आशा है कि विवेकशील पाठक महात्मा फुले की रचनाओं के संग्रह का व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए प्रेरित होंगे, और 'वे दिन में उनके बारे में सोचेंगे और रात में उनके सपने देखेंगे।' ओलिवर गोल्डस्मिथ के शब्दों में, महात्मा ज्योतिराव फुले एक महान व्यक्तित्व थे।

जैसे कोई विशाल चट्टान अपने भयानक रूप को ऊपर उठाती है,
घाटी से लहरें उठती हैं और बीच रास्ते में ही तूफान थम जाता है।
यद्यपि इसके सीने के चारों ओर घूमते हुए बादल फैले हुए हैं,
शाश्वत सूर्यप्रकाश अस्त हो जाता है और अपना सिर ऊपर उठा लेता है!

इस कठिन कार्य में अटूट सहयोग देने के लिए मैं निम्नलिखित मित्रों का बहुत आभारी हूँ:

श्री दादासाहेब रूपवते, श्रीमती कमलताई विचारे, श्री मुकुंदराव पाटिल, प्रो. एन.डी. पाटिल, श्री बाबा आधव, डॉ. वाई. डी । फड़के, प्रो. (अब, अफसोस! दिवंगत) आर.बी. जोशी, श्री वसंत मून, प्रो. जी.एच. महाजन, डॉ. एन.बी. पाटिल, डॉ. एस.जी. मालशे, श्री एन.एस. कुलकर्णी, श्री डी.एन. चौधरी, प्रो. एम.पी. मंगुडकर, प्रिं. टी.के. टोपे, डॉ. एस.डी. कार्णिक, श्री हरि नारके आदि।

मैं सरकारी प्रेस के निदेशक श्री प्रकाश मोरे, उप निदेशक श्री पी. एल. पुरकर और उनके सहयोगियों को मेरे इस कठिन कार्य में उनके तत्पर सहयोग और अटूट शिष्टाचार के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ।

पी. जी. पाटिल
अनुवादक।

बॉम्बे:
11 दिसंबर 1991।

ज्योतिराव गोविंदराव फुले - एक संक्षिप्त जीवन परिचय
(1827-90)

[महात्मा ज्योतिराव फुले का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रख्यात विद्वान डॉ. वाई. डी. फड़के द्वारा लिखा गया है। वे मराठी में महात्मा फुले के संकलित कार्यों (महात्मा फुले समग्र वाङ्मय) के संपादक हैं। वे महात्मा फुले और सत्यशोधक आंदोलन के भी एक प्रतिष्ठित विद्वान हैं।]

उन्नीसवीं शताब्दी में महाराष्ट्र के समाज सुधारकों में ज्योतिराव गोविंदराव फुले का एक अनूठा स्थान है। अन्य सुधारकों ने परिवार और विवाह जैसी सामाजिक संस्थाओं में सुधार लाने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, विशेष रूप से महिलाओं की स्थिति और अधिकारों पर। वहीं, ज्योतिराव फुले ने उस अन्यायपूर्ण जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया, जिसके तहत लाखों लोग सदियों से पीड़ित थे। विशेष रूप से, उन्होंने साहसपूर्वक अछूतों के अधिकारों की रक्षा की और गरीब किसानों के लिए संघर्ष किया। वे उनके अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। उनके संघर्षपूर्ण जीवन की कहानी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरुद्ध उनके निरंतर और अथक संघर्ष की एक प्रेरणादायक गाथा है। उनकी सबसे उल्लेखनीय क्षमता यह थी कि वे हर प्रकार के दबाव का सामना बिना विचलित हुए करते रहे और हमेशा अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे। हालांकि नारायण महादेव परमानंद जैसे महाराष्ट्र के सामाजिक परिदृश्य के कुछ गहन पर्यवेक्षकों ने उनके जीवनकाल में ही उनकी महानता को स्वीकार किया था, लेकिन हाल के दशकों में ही जन उत्थान में उनके योगदान और बलिदान की सराहना बढ़ रही है।

जोतिराव फुले का जन्म 1827 में हुआ था। उनके पिता गोविंदराव पुणे में सब्जी विक्रेता थे। मूल रूप से जोतिराव का परिवार, जिसे गोरहे के नाम से जाना जाता था, महाराष्ट्र के सतारा जिले के कटगुन गांव से आया था। उनके दादा शेतिबा गोरहे पुणे में बस गए थे। चूंकि जोतिराव के पिता और दो चाचा अंतिम पेशवाओं के अधीन पुष्प विक्रेता के रूप में काम करते थे, इसलिए उन्हें 'फुले' के नाम से जाना जाने लगा। जोतिराव की माता का देहांत तब हुआ जब वे लगभग एक वर्ष के थे। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, जोतिराव को स्कूल छोड़ना पड़ा और परिवार के खेत में काम करके अपने पिता की मदद करनी पड़ी। जोतिराव का विवाह तेरह वर्ष की आयु से पहले ही संपन्न हो गया था।

जोतिराव की बुद्धिमत्ता और ज्ञान के प्रति उनकी लगन से प्रभावित होकर उनके दो पड़ोसियों, जिनमें एक मुस्लिम शिक्षक और एक ईसाई सज्जन थे, ने उनके पिता गोविंदराव को उन्हें माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने की अनुमति देने के लिए राजी किया। 1841 में, जोतिराव को पुणे स्थित स्कॉटिश मिशन के हाई स्कूल में दाखिला मिल गया। इसी विद्यालय में उनकी मुलाकात सदाशिव बल्लाल गोवंदे नामक एक ब्राह्मण से हुई, जो जीवन भर उनके घनिष्ठ मित्र रहे।

जोतिराव और गोवंदे दोनों ही थॉमस पेन के विचारों से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने पेन की प्रसिद्ध पुस्तक 'द राइट्स ऑफ मैन' को बड़े चाव से पढ़ा। मोरो विठ्ठल वाल्वेकर और

सखाराम यशवंत परांजप्ये जोतिराव के दो अन्य ब्राह्मण मित्र थे, जिन्होंने बाद के वर्षों में उनके सभी कार्यों में उनका साथ दिया। 1847 में अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद जोतिराव ने सरकारी नौकरी न करने का निर्णय लिया।

सन् 1848 में घटी एक घटना ने उन्हें जाति व्यवस्था की असमानताओं और सामाजिक ढांचे में ब्राह्मणों की श्रेष्ठ स्थिति से अवगत कराया। उन्हें अपने एक ब्राह्मण मित्र के विवाह में आमंत्रित किया गया था। जब दूल्हे को बारात में ले जाया जा रहा था, तो जोतिराव अपने ब्राह्मण मित्र के रिश्तेदारों के साथ उसके साथ गए। यह जानते हुए कि जोतिराव माली जाति से थे, जिसे ब्राह्मण निम्न मानते थे, दूल्हे के रिश्तेदारों ने उनका अपमान किया और उन्हें अपशब्द कहे। जोतिराव बारात छोड़कर घर लौट आए। आँखों में आँसू लिए उन्होंने अपने पिता को अपनी आपबीती सुनाई, जिन्होंने उन्हें शांत करने का प्रयास किया। इस घटना के बाद जोतिराव ने जाति व्यवस्था का विरोध करने और शूद्रों और महिलाओं की सेवा करने का निश्चय किया, जिन्हें जाति व्यवस्था के तहत मानव अधिकारों से वंचित रखा गया था।

उनका मानना था कि महिलाओं और निचली जातियों की शिक्षा को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इसलिए उन्होंने घर पर ही अपनी पत्नी सावित्रीबाई को शिक्षित करना शुरू किया और अगस्त 1848 में एक बालिका विद्यालय खोला। जोतिराव के कट्टरपंथी विरोधी भड़क उठे और उन्होंने उनके खिलाफ एक दुर्भावनापूर्ण अभियान शुरू कर दिया। लेकिन वे उनके दुर्भावनापूर्ण प्रचार से विचलित नहीं हुए। चूंकि कोई भी शिक्षक ऐसे विद्यालय में पढ़ाने की हिम्मत नहीं करता था जिसमें अछूतों को छात्र के रूप में प्रवेश दिया जाता था, इसलिए जोतिराव ने अपनी पत्नी से अपने विद्यालय में लड़कियों को पढ़ाने के लिए कहा। विद्यालय जाते समय उन पर पत्थर और ईंटें फेंकी गईं। प्रतिक्रियावादियों ने जोतिराव के पिता को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी, यदि वे अपने पुत्र के कार्यों से खुद को अलग नहीं करते। दबाव के आगे झुकते हुए, जोतिराव के पिता ने अपने पुत्र और बहू को घर छोड़ने के लिए कहा क्योंकि दोनों ने अपने इस नेक प्रयास को छोड़ने से इनकार कर दिया था।

धन की कमी के कारण विद्यालय को कुछ समय के लिए बंद करना पड़ा, लेकिन जोतिराव ने अपने ब्राह्मण मित्रों गोवंदे और वाल्वेकर की सहायता से इसे पुनः आरंभ किया। 3 जुलाई 1851 को उन्होंने एक बालिका विद्यालय की स्थापना की, जिसमें पहले दिन आठ छात्राओं को प्रवेश दिया गया। धीरे-धीरे छात्राओं की संख्या बढ़ती गई। सावित्रीबाई ने इस विद्यालय में अध्यापन किया और रूढ़िवादी लोगों की शत्रुता के कारण उन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ा। जोतिराव ने 1851-52 के दौरान दो और बालिका विद्यालय खोले। 1882 में शिक्षा आयोग (जिसे हंटर आयोग के नाम से जाना जाता है) को संबोधित एक ज्ञापन में उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपने कार्यों का वर्णन किया। 'लड़की विद्यालय की स्थापना के एक वर्ष बाद, मैंने निम्न वर्गों, विशेषकर महार और मांग समुदायों के लिए एक स्वदेशी मिश्रित विद्यालय भी स्थापित किया। बाद में इन वर्गों के लिए दो और विद्यालय जोड़े गए। मैंने लगभग नौ से दस वर्षों तक उनमें कार्य किया।'

जोतिराव को इस बात का पूरा ज्ञान था कि बंबई प्रेसीडेंसी में आम जनता की प्राथमिक शिक्षा की घोर उपेक्षा की जा रही है। उनका तर्क था कि 'उनकी गरीबी, आत्मनिर्भरता की कमी और विद्वान एवं बुद्धिमान वर्गों पर उनकी पूर्ण निर्भरता' का एक बड़ा कारण 'किसानों की शिक्षा की दयनीय स्थिति' थी। उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर उच्च वर्गों की शिक्षा पर राजस्व का एक बड़ा हिस्सा खर्च करने का आरोप लगाया। उनके अनुसार, इस नीति के परिणामस्वरूप सरकार के सभी उच्च पदों पर ब्राह्मणों का लगभग एकाधिकार हो गया था।

जोतिराव ने ब्राह्मणों के वर्चस्व पर पुरजोर प्रहार किया, जिन्होंने दूसरों को ज्ञान और प्रभाव के सभी मार्गों तक पहुँचने से रोक रखा था। उन्होंने ब्राह्मणों को धोखेबाज और पाखंडी बताया। उन्होंने जनता से ब्राह्मणों के अत्याचार का विरोध करने का आह्वान किया। उनके सभी लेखन इसी विषय पर आधारित थे। उनके आलोचकों ने व्याकरण और भाषा विज्ञान के उनके अज्ञान, उनकी भद्दी भाषा और भारतीय इतिहास एवं प्राचीन ग्रंथों की उनकी अतिरंजित व्याख्याओं का उपहास उड़ाया। उन्होंने उनकी आलोचना को यह कहकर खारिज कर दिया कि वे केवल वही दोहरा रहे थे जो ईसाई मिशनरियों ने भारतीय समाज और विशेष रूप से ब्राह्मणों के बारे में कहा था। उनके समय के स्थापित विद्वानों ने फुले के तर्कों को गंभीरता से नहीं लिया। उनके आलोचक यह नहीं समझ पाए कि जोतिराव की तीखी आलोचना वास्तव में मानव अधिकारों की समानता के प्रति उनकी सच्ची चिंता का सहज विस्फोट थी। वे भावनात्मक रूप से अपने काम में इतने मग्न थे कि वे निष्पक्ष विश्लेषण नहीं कर सके और सामाजिक शक्तियों का तटस्थ दृष्टिकोण नहीं अपना सके। ज्योतिराव की बुनियादी मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के कारण, जब उन्होंने धर्म के नाम पर उन लोगों द्वारा किए गए अन्याय और अत्याचारों को देखा, जिन्हें धर्म का संरक्षक माना जाता था, तो उनके लिए खुद को रोकना मुश्किल हो गया।

तत्कालीन हिंदू समाज में विधवा पुनर्विवाह निषिद्ध था और ब्राह्मणों तथा अन्य उच्च जातियों में बाल विवाह बहुत प्रचलित था। कई विधवाएँ युवा थीं और उनमें से सभी रूढ़िवादी समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप जीवन यापन नहीं कर सकती थीं। कुछ विधवाएँ गर्भपात का सहारा लेती थीं या अपने नाजायज बच्चों को सड़कों पर छोड़ देती थीं। अनाथों पर दया करके ज्योतिराव फुले ने एक अनाथालय की स्थापना की, जो संभवतः किसी हिंदू द्वारा स्थापित पहला ऐसा संस्थान था। ज्योतिराव ने गर्भवती विधवाओं को संरक्षण दिया और उन्हें आश्वासन दिया कि अनाथालय उनके बच्चों की देखभाल करेगा। ज्योतिराव द्वारा संचालित इसी अनाथालय में 1873 में एक ब्राह्मण विधवा ने एक लड़के को जन्म दिया और ज्योतिराव ने उसे गोद ले लिया।

कुछ समय तक जोतिराव ने सरकार के लिए ठेकेदार के रूप में काम किया और पुणे के पास खड़कवासला में एक विशाल बांध के निर्माण के लिए आवश्यक निर्माण सामग्री की आपूर्ति की। उन्हें लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ काम करने का प्रत्यक्ष

अनुभव था, जो भ्रष्टाचार के गढ़ के रूप में कुख्यात था। विभाग में उच्च पदों पर आसीन ब्रिटिश अधिकारियों को छोड़कर, क्लर्क और अन्य अधिकारी लगभग सभी ब्राह्मण थे और वे अशिक्षित श्रमिकों का शोषण करते थे। जोतिराव ने श्रमिकों को यह समझाना आवश्यक समझा कि ब्राह्मण अधिकारी उन्हें किस प्रकार ठगते थे। उनके द्वारा रचित एक कविता में, उन्होंने लोक निर्माण विभाग में ब्राह्मण अधिकारियों द्वारा अपनाई गई धोखाधड़ी की प्रथाओं का सजीव वर्णन किया है ('दासता' के अंत में मुद्रित)।

1868 में, जोतिराव ने अपने घर के पास स्थित एक छोटे स्नानघर में अछूतों को प्रवेश देने का निर्णय लिया। जून 1873 में प्रकाशित अपनी विवादास्पद पुस्तक 'दासता' में, जोतिराव ने एक घोषणापत्र शामिल किया जिसमें उन्होंने कहा कि वे जाति, धर्म या मूल देश की परवाह किए बिना सभी के साथ भोजन करने को तैयार हैं। यह महत्वपूर्ण है कि कई समाचार पत्रों ने इसकी विषयवस्तु के कारण इस घोषणापत्र को प्रकाशित करने से इनकार कर दिया। उनकी पुस्तक 'दासता' की ब्राह्मणों के विरुद्ध 'विषाक्त प्रचार' के लिए कड़ी आलोचना की गई। जोतिराव ने इस पुस्तक को 'संयुक्त राज्य अमेरिका के भले लोगों को, नीग्रो दासता के लिए उनके उदात्त, निस्वार्थ और आत्म-बलिदानपूर्ण समर्पण के प्रति प्रशंसा के प्रतीक के रूप में' समर्पित किया। यह पुस्तक संवाद के रूप में लिखी गई है। भारत में ब्राह्मणों के वर्चस्व के इतिहास का पता लगाने के बाद, जोतिराव ने ब्राह्मणों द्वारा बनाए गए क्रूर और अमानवीय कानूनों के उद्देश्यों और प्रयोजनों की जांच की। इन झूठों को गढ़ने का उनका मुख्य उद्देश्य अज्ञानी लोगों के मन को भ्रमित करना और उन्हें उस शाश्वत बंधन और गुलामी की जंजीरों में जकड़ना था, जिसे उन्होंने अपने स्वार्थ और धूर्तता से गढ़ा था। शूद्रों पर लागू कानूनों की कठोरता और ब्राह्मणों द्वारा उनके प्रति दिखाई जाने वाली तीव्र घृणा का एकमात्र कारण यही हो सकता है कि मूल रूप से दोनों के बीच एक घातक शत्रुता थी, जो ब्राह्मणों के इस भूमि में आगमन से उत्पन्न हुई थी। ज्योतिराव का तर्क था कि शूद्र इस भूमि के पुत्र थे, जबकि ब्राह्मण बाहर से आए और शूद्रों की हर संपत्ति पर कब्जा कर लिया। उन्होंने यह भी दावा किया कि उनकी पुस्तक में वर्णित बातें उनके 'गरीब, अनपढ़ और अज्ञानी शूद्र भाइयों' पर होने वाले अत्याचारों का सौवां हिस्सा भी नहीं थीं।

24 सितंबर 1873 को जोतिराव ने अपने अनुयायियों और प्रशंसकों की एक बैठक बुलाई और यह निर्णय लिया गया कि 'सत्य शोधक समाज' (सत्य के खोजियों का समाज) का गठन किया जाए, जिसके प्रथम अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष जोतिराव थे। प्रत्येक सदस्य को ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति निष्ठा की शपथ लेनी थी। संगठन के मुख्य उद्देश्य शूद्रों और अति-शूद्रों को मुक्ति दिलाना और ब्राह्मणों द्वारा उनके शोषण को रोकना था।

सत्य शोधक समाज के सभी सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे सभी मनुष्यों को ईश्वर की संतान मानकर किसी मध्यस्थ की सहायता के बिना सृष्टिकर्ता की उपासना करें। सदस्यता सभी के लिए खुली थी और उपलब्ध प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि कुछ यहूदियों को भी सदस्य के रूप में शामिल किया गया था। 1876 में सत्य शोधक समाज

के 316 सदस्य थे।

जोतिराव ने वेदों को पवित्र मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया और चतुर्वर्ण व्यवस्था की निंदा की। 1891 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक' में उन्होंने धार्मिक और सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार संवाद के रूप में प्रस्तुत किए हैं। उनके अनुसार, पुरुष और स्त्री दोनों को समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए और लिंग के आधार पर भेदभाव करना पाप है। उन्होंने मानव एकता पर बल दिया और स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित समाज की परिकल्पना की। वे इस बात से भली-भांति परिचित थे कि धार्मिक कट्टरता और आक्रामक राष्ट्रवाद मानव एकता को नष्ट कर देते हैं।

1876 में, जोतिराव पुणे नगरपालिका के सदस्य के रूप में मनोनीत हुए। 1877 में जब महाराष्ट्र के अकालग्रस्त क्षेत्रों में भीषण अकाल पड़ा और ग्रामीण इलाकों के लोगों को अपने गाँव छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा, तब जोतिराव ने वहाँ के लोगों की मदद करने का प्रयास किया। कुछ लोगों को अपने बच्चों को पीछे छोड़ना पड़ा और 17 मई 1877 को जोतिराव द्वारा जारी एक अपील से पता चलता है कि इन अनाथालयों की देखभाल के लिए सत्य शोधक समाज के तत्वावधान में विक्टोरिया अनाथालय की स्थापना की गई थी। 1879 की शुरुआत से ही उनके सहयोगी कृष्णराव भालेकर ने सत्य शोधक समाज के मुखपत्र 'दीनबंधु' नामक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया। इस साप्ताहिक पत्रिका में किसानों और श्रमिकों की शिकायतों को उठाया जाता था। जब रूढ़िवादी राष्ट्रवादियों के एक प्रभावशाली प्रवक्ता विष्णुशास्त्री चिपलुनकर ने जोतिराव के लेखन पर अत्यंत कटु शब्दों में हमला किया, तब 'दीनबंधु' ने जोतिराव का बचाव किया।

नारायण मेघाजी लोखंडे, ज्योतिराव के एक अन्य प्रमुख सहयोगी थे। लोखंडे को भारत में ट्रेड यूनियन आंदोलन का जनक माना जाता है। 1880 से उन्होंने बंबई से प्रकाशित होने वाले दीनबंधु पत्रिका का प्रबंधन संभाला। लोखंडे के साथ ज्योतिराव ने बंबई में कपड़ा श्रमिकों की सभाओं को भी संबोधित किया। यह महत्वपूर्ण है कि ज्योतिराव और उनके सहयोगियों भालेकर और लोखंडे द्वारा किसानों और श्रमिकों को संगठित करने के प्रयास से पहले, किसी भी संगठन ने उनकी शिकायतों के निवारण के लिए कोई प्रयास नहीं किया था।

जोतिराव द्वारा ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज, सार्वजनिक सभा और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं पर लगाए गए आरोपों में से एक यह था कि अपने कार्यक्रमों के बावजूद, वास्तविकता में उन्होंने जनता की स्थिति में सुधार के लिए बहुत कम काम किया।

उनका मानना था कि इन संगठनों पर ब्राह्मणों का वर्चस्व है और ये वास्तव में प्रतिनिधि नहीं हैं। जून 1885 में प्रकाशित अपनी पुस्तिका सत्सर (सत्य का सार) में उन्होंने ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज की आलोचना की। उनके नेताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने

कहा, 'हमें आपके संगठनों की मदद की ज़रूरत नहीं है। हमारी चिंता मत कीजिए।' अपनी मरणोपरांत प्रकाशित पुस्तक सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक में उन्होंने कहा कि किसान और अछूत न तो सार्वजनिक सभा के सदस्य थे और न ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के। उन्होंने चेतावनी दी कि इन संगठनों द्वारा प्रशासनिक सेवाओं के भारतीयकरण की लगातार मांग, यदि स्वीकार कर ली गई, तो भारत में सेवाओं का ब्राह्मणीकरण हो जाएगा। उनका मानना था कि जब तक अलग-अलग जातियों के लोग अपने से बाहर खान-पान और विवाह पर प्रतिबंध का पालन करते रहेंगे, तब तक राष्ट्रवाद की भावना पैदा करना मुश्किल होगा। जन-शिक्षा से राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जिस प्रकार जोतिराव ने सुधारवादी आंदोलन के नेताओं की आलोचना करते समय कोई संकोच नहीं किया, उसी प्रकार वे विदेशी शासकों के उन निर्णयों की आलोचना करने में भी उतने ही निर्भीक थे जो जनता के कल्याण में योगदान नहीं देते थे। जब सरकार शराब की दुकानों के लिए अधिक लाइसेंस जारी करना चाहती थी, तो जोतिराव ने इस कदम की निंदा की क्योंकि उनका मानना था कि शराब की लत कई गरीब परिवारों को बर्बाद कर देगी। 30 नवंबर 1880 को, पुणे नगर पालिका के अध्यक्ष ने सदस्यों से भारत के गवर्नर-जनरल लॉर्ड लिटन की यात्रा के अवसर पर एक हजार रुपये खर्च करने के अपने प्रस्ताव को मंजूरी देने का अनुरोध किया। अधिकारी पुणे यात्रा के दौरान लिटन को एक संबोधन प्रस्तुत करना चाहते थे। लिटन ने एक ऐसा अधिनियम पारित किया था जिसके परिणामस्वरूप प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और सत्य शोधक समाज के मुखपत्र दीनबंधु ने प्रेस की स्वतंत्रता के अधिकार पर प्रतिबंध का विरोध किया था। जोतिराव को लिटन जैसे अतिथि के सम्मान में करदाताओं का पैसा खर्च करने का विचार पसंद नहीं आया। उन्होंने साहसपूर्वक सुझाव दिया कि यह राशि पुणे के गरीब लोगों की शिक्षा पर खर्च की जा सकती है। पुणे नगरपालिका के बत्तीस मनोनीत सदस्यों में से वे एकमात्र ऐसे सदस्य थे जिन्होंने आधिकारिक प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान किया।

एक अन्य घटना से गरीब किसानों के प्रति उनका लगाव और ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की पीड़ा की ओर ब्रिटिश शाही परिवार के एक सदस्य का ध्यान आकर्षित करने का उनका साहस भी प्रकट हुआ। 2 मार्च 1888 को, जोतिराव के मित्र हरि रावजी चिपलुनकर ने ड्यूक और डचेस ऑफ कनॉट के सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया। किसान के वेश में जोतिराव समारोह में शामिल हुए और भाषण दिया। उन्होंने हीरे जड़े आभूषण पहनकर अपनी दौलत का प्रदर्शन करने वाले धनी अतिथियों पर टिप्पणी की और उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों को चेतावनी दी कि वहां एकत्रित लोग भारत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

यदि ड्यूक ऑफ कॉनॉट वास्तव में इंग्लैंड की महारानी के भारतीय प्रजाजनों की स्थिति जानने में रुचि रखते थे, तो जोतिराव ने सुझाव दिया कि उन्हें आस-पास के कुछ गांवों के साथ-साथ शहर के उन क्षेत्रों का भी दौरा करना चाहिए जहां अछूत रहते हैं। उन्होंने

महारानी विक्टोरिया के पोते ड्यूक ऑफ कॉनॉट से अनुरोध किया कि वे उनका संदेश महारानी तक पहुंचाएं और गरीबों को शिक्षा प्रदान करने की पुरजोर अपील की। जोतिराव के भाषण ने काफी हलचल मचा दी।

अपने पूरे जीवन में, ज्योतिराव फुले ने दलितों के उद्धार के लिए संघर्ष किया और कम उम्र में शुरू किया गया उनका यह संघर्ष 28 नवंबर 1890 को उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हुआ। वे कई क्षेत्रों में अग्रणी थे और अपने समकालीनों में सत्य और न्याय की खोज में कभी विचलित न होने वाले व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। यद्यपि उन पर अक्सर ब्राह्मणों और गैर-ब्राह्मणों के बीच घृणा भड़काने का आरोप लगाया जाता था, फिर भी उनकी तीखी आलोचना को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास बहुत कम ही किया गया। बाद की पीढ़ियों को भी 'मानवाधिकारों' के प्रति उनके अडिग समर्थन के गहन महत्व को समझने और सराहने में काफी समय लगा, जो उनके जीवन के अंत तक उनके लेखन का एक प्रमुख विषय और उनके कार्यों का लक्ष्य बना रहा।

महात्मा ज्योतिराव फुले की रचनाओं से चयनित अंश

यह महात्मा सचमुच धन्य थे:

(महर्षि विट्ठल रामजी उर्फ अन्नासाहेब शिंदे द्वारा)

सत्य की सच्ची अनुयायी, जोतिबा सचमुच धन्य थीं!
दलितों का सच्चा संरक्षक,

यह महात्मा सचमुच भाग्यशाली थे!

जाति से माली (बागवानी विशेषज्ञ), उसके कर्म एक चमकती तलवार (एक्सकैलिबर!) के समान थे।

आम जनता के अधिकारों के लिए हमेशा सतर्क रहने वाला एक योद्धा। बताइए, उनके जैसा कोई दूसरा नहीं हो सकता? (वे सचमुच अतुलनीय हैं!)

यह महात्मा सचमुच भाग्यशाली थे!

वह अपनी वाणी में अत्यंत स्पष्टवादी और मुखर थे (एकदम सीधे, जैसे छड़ी), और उनका आचरण दृढ़, अटल और सीधा था (जैसे एक रेखा या तीर)। वह रक्षक थे।
उन्हें सच्चाई से गहरा लगाव था और वे सच्चे धर्म को बहुत पसंद करते थे।

माली ज्योति सचमुच भाग्यशाली था! वह किताबी विद्वानों से कहीं अधिक कुशल था और असहाय एवं दलितों का सच्चा हिमायती था।

उनके अनेक मनमोहक कार्यों का वर्णन करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं।

यह महात्मा सचमुच भाग्यशाली थे!

अपने शत्रुओं द्वारा निंदा, निंदा और उत्पीड़न का शिकार होने के बावजूद उन्होंने इसे साहसपूर्वक मुस्कुराते हुए सहन किया। उन्होंने लोगों के मन से मूर्खतापूर्ण अंधविश्वासों का नाश किया। उन्होंने समाज के चार प्रकार के भयावह विभाजन को उल्टी या थूक के समान घृणित बना दिया।

कुछ ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और (इसीलिए) विद्वान कहलाए। कुछ ने अपनी आत्मा बेचकर या सौदेबाजी करके नेता बन गए। कुछ ने भीख मांगकर महात्मा पद प्राप्त किया। लेकिन सच्चे मन से जनता का सेवक मिलना वाकई बहुत दुर्लभ है! यह महात्मा सचमुच भाग्यशाली थे!

वेदों ने ईश्वर की सच्ची छवि को विकृत कर दिया। धर्म में पाखंडियों और ढोंगियों ने सच्चे धर्म को अपवित्र और निष्कलंक बना दिया। यहाँ तक कि विद्वान भी इससे भ्रमित हो गए। उस समय क्षितिज पर ज्योति (तेज प्रकाश) उदय हुई।

महाराष्ट्र के लोग ज्ञानेश्वर और तुकाराम का आदर करते हैं और उनकी पूजा करते हैं। ज्योतिबा भारत में जनता के सर्वमान्य नेता हैं।

इसीलिए महाराष्ट्र सामाजिक सुधारकों (और क्रांतिकारियों) में अग्रणी है, और यही इसकी विशिष्ट खूबी (विशेषता) है।

सत्य का सार्वभौमिक धर्म

अध्याय **11:** पुण्य (पुण्यपूर्ण कर्म)

बलवंत हरि सलवणकर: पुण्य (या पुण्य कर्म) वास्तव में क्या है?

जोतिराव गोविंदराव फुले: यदि हम स्वयं सुखी होने के लिए अपने साथी मनुष्यों को मानसिक या शारीरिक यातना नहीं देते हैं, तो उसे पुण्य कर्म कहा जाना चाहिए।

बलवंतराव: ऐसा कैसे हो सकता है? बेहतर होगा कि आप कृपया मुझे स्पष्ट रूप से समझा दें।

जोतिराव: यदि कोई व्यक्ति आपसे जबरदस्ती या धर्म के बहाने कोई वस्तु छीन ले, जिससे आपको काफी पीड़ा हो, और ऐसा करने से उसे अत्यधिक आनंद मिले, और यदि वह आपके सामने उस आनंद का अनुभव करे, तो क्या आपको उस व्यक्ति का यह कृत्य पसंद आएगा?

बलवंतराव: मुझे तो यह बिलकुल भी पसंद नहीं आएगा, और न ही पूरी दुनिया में किसी को।

जोतिराव: तो क्या हमें किसी व्यक्ति से जबरदस्ती या धर्म के बहाने कोई वस्तु छीनने और उनकी उपस्थिति में उसका आनंद लेने का कोई अधिकार है?

बलवंतराव: हमें ऐसा कोई अधिकार नहीं है। और पृथ्वी-देवताओं, अर्थात् आर्य ब्राह्मणों के (नकली) शास्त्रों में एक स्पष्ट कथन है कि "दूसरों की सहायता करना (परोपकारी कार्य) पुण्य का काम है और दूसरों को यातना देना पाप है।"

जोतिराव: यदि यही आपके शास्त्रों का कथन है, तो फिर पृथ्वी-देवता—आर्य ब्राह्मण—निषेधों से ग्रस्त होकर, स्वयं को दूसरों से अलग (मासिक धर्म वाली महिलाओं की तरह) क्यों कर लेते हैं और ईसाइयों, मुसलमानों के साथ-साथ सभी शूद्रों और अति-शूद्रों (हमारे देश में) की निंदा करते हैं और उन्हें हर प्रकार के उत्पीड़न का शिकार बनाते हैं?

बलवंतराव: यदि आप (इस अन्याय के) कुछ सार्वजनिक उदाहरण उद्धृत करें, तो इससे जनता को बहुत लाभ होगा।

जोतिराव: सर्वप्रथम, आर्य ब्राह्मण स्वार्थवश, अंग्रेजों के साथ उनके भोज में मांसाहार और शराब पीने में लिप्त रहते हैं। परन्तु घर जाकर वे स्वयं को अत्यंत रूढ़िवादी बताते हैं, उनके पवित्र धर्म (ईसाई धर्म) की निंदा करते हैं और अज्ञानी लोगों के मन में उनके प्रति पूर्वाग्रह उत्पन्न करते हैं। द्वितीय, यौवनमय कामुकता से ओतप्रोत होकर वे वेश्याओं के साथ यौन संबंध बनाते हैं, जिनकी यौवन और सौंदर्य की तुलना पौराणिक मस्तानी से की जा सकती है। परन्तु घर जाकर वे स्वयं को अत्यंत रूढ़िवादी (और वर्जित) बताते हैं और पवित्र इस्लाम धर्म की निंदा करते हैं। वे उन्हें कुओं का पानी भी छूने नहीं देते, अज्ञानी जनता के मन में उनके (मुसलमानों के) विरुद्ध पूर्वाग्रह उत्पन्न करते हैं और इस प्रकार उनके मन में उनके प्रति घृणा भर देते हैं। तीसरे, वे शूद्रों और अति-शूद्रों द्वारा अपनी मेहनत की कमाई से जुटाए गए धन से पार्वती (पुणे) जैसे धार्मिक परिसर स्थापित करते हैं, रूढ़िवादी पुरोहितों की तरह खुलेआम घूमते हैं और धार्मिक भोजों में जी भरकर स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेते हैं। लेकिन वे इतने निर्दयी हैं कि भूखे-प्यासे शूद्रों और अति-शूद्रों को, जो कि

(वास्तविक) करदाता हैं, बासी ज्वार या बाजरे की रोटी का एक टुकड़ा भी देने में उन्हें संकोच होता है। परन्तु घर लौटकर वे रूढ़िवादिता और वर्जनाओं का पालन करते हैं और सिंधिया, होल्कर और गायकवाड़ जैसे कुलीन राजकुमारों को छूने तक की जहमत नहीं उठाते, उन्हें शूद्र कहकर पशुओं से भी बदतर समझते हैं और घमंड करते हैं।

एक चेतावनी

“जिस व्यक्ति को स्वयं चोट लगी हो, वही शारीरिक पीड़ा को जान सकता है। हे अज्ञानी (ग्रामीण) व्यक्ति, कोई और इसे कैसे जान सकता है?”

भारत की सामान्य स्थिति पर ध्यानपूर्वक विचार करने पर हमें शीघ्र ही यह अहसास होता है कि अनेक विदेशी शक्तियों ने हमारी इस सुंदर भूमि पर आक्रमण किया। इन विदेशी आक्रमणकारियों ने शूद्र और अतिशूद्र प्रजाजनों के सुख-सुविधाओं के लिए कुछ भी नहीं किया। उन्होंने इस भूमि की समृद्धि और उन्नति के लिए कोई प्रयास नहीं किया। भारत पर आक्रमण करने वाले पहले लोग ईरानी थे, जिन्हें अब आर्य या ब्राह्मण कहा जाता है (पूरे भारत में इसी नाम से जाना जाता है)। उन्होंने इस भूमि पर विजय प्राप्त कर अपना शासन स्थापित किया। परशुराम की विजय और भारत पर उनके शासन का उदाहरण ही इसका पर्याप्त प्रमाण है। आर्यों ने फिर पूर्णतः अन्यायपूर्ण और अनैतिक कानून और नियम बनाए और उन्हें 'मनु संहिता' के नाम से संहिताबद्ध किया। ये कानून मनमाने ढंग से और हमेशा आर्यों के स्वार्थों को ध्यान में रखते हुए बनाए गए थे। उन्होंने इन 'कानूनों' को एक पवित्र धर्म का दर्जा देकर उन्हें विशेष प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान किया। वे यहाँ शूद्रों और अस्तिशूद्रों पर इन अन्यायपूर्ण कानूनों को लागू करने में सफल रहे, जो घोर अज्ञानता के सागर में डूब गए। बाद में, मुसलमानों (अफगान, मुगल आदि) ने इस देश पर आक्रमण किया।

18वीं शताब्दी में डच, पुर्तगाली और फ्रांसीसी आक्रमणकारियों ने भी भारत पर आक्रमण किया। लेकिन ये आक्रमण अधिक महत्वपूर्ण नहीं थे क्योंकि वे भारत के कुछ ही क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमा सके और उनका शासन यहाँ केवल थोड़े समय के लिए ही चला। उन्होंने यहाँ की जनता पर कोई विशेष छाप नहीं छोड़ी। जिस प्रकार उन्होंने जनता को सताया नहीं, उसी प्रकार उनके लाभ के लिए भी कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया। उपर्युक्त विदेशी आक्रमणकारियों में से केवल दो - आर्य और मुसलमान - ने ही यहाँ की जनता (इस पुस्तिका में आगे भी 'प्रजा' शब्द का अर्थ शूद्र और अतिशूद्र है) को सताया। आक्रमणकारी वास्तव में छल, ईर्ष्या, क्रूरता और स्वार्थ के साक्षात रूप थे। अपने निरर्थक (और स्वार्थी) उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, उन्होंने अपने शासन और शक्ति का उपयोग उन निर्धन, असहाय प्रजाजनों पर बेरहमी से अत्याचार करने के लिए किया, जिन्हें उन्होंने अधीन कर लिया था। प्रजा को प्रताड़ित करने में वे माहिर थे, क्योंकि उन्होंने उनकी स्थिति

सुधारने के लिए कोई कदम नहीं उठाया (जिससे उनकी हालत सुधर सकती थी)। भारत के इतिहास पर सरसरी नज़र डालने से पता चलता है कि विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत की गरीब प्रजा को कई तरह से प्रताड़ित किया: कभी वे उन्हें मामूली या निराधार अपराधों के लिए (जिनके बारे में माना जाता था कि उन्होंने किए हैं) सताते और अंततः बेरहमी से मार डालते थे। कभी वे जीती हुई प्रजा की सुंदर, उच्च कुल की और सदाचारी महिलाओं के प्रति कामुक इच्छा रखते थे (और उनकी मर्यादा भंग करते थे, उन्हें परेशान करते थे या उनका अपमान करते थे) ताकि अपनी वासना को संतुष्ट कर सकें। प्रजा द्वारा किए गए मामूली अपराधों के लिए भी विदेशी आक्रमणकारी उन्हें अमानवीय यातनाएँ देते थे, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो जाती थी।

यहां के गरीबों पर जो सजाएं दी जाती थीं, वे बहुत ही विचित्र, क्रूर और बर्बर थीं। इन यातनाओं का वर्णन मात्र ही कठोर हृदय वालों के हृदय को भी भयभीत कर देगा। पीड़ितों के लिए उनका हृदय दया से फट उठेगा और उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी व्यक्ति को मृत्युदंड देना कितना भयानक होता है! दोषी व्यक्ति को एक नुकीले लोहे के खंभे पर बिठाया जाता है और उसे खंभे की लंबाई में तब तक धकेला जाता है जब तक कि उसका नुकीला सिरा उसके सिर से बाहर न निकल जाए, जो अमानवीयता की पराकाष्ठा है! कभी-कभी पीड़ित को कोड़ों से या पेड़ की पतली टहनी से तब तक बुरी तरह पीटा जाता है जब तक कि उसकी त्वचा फट न जाए और बहुत खून न बहने लगे। फिर खारा पानी या पानी में भीगी हुई इमली फटी हुई त्वचा पर डाली जाती है जिससे उसे असहनीय पीड़ा होती है, वह दर्द से तड़पता है और अंत में दम तोड़ देता है। उसके यातना देने वाले उसे इस पीड़ा को सहते देखकर व्यभिचारी आनंद प्राप्त करते हैं। कभी-कभी उसे किले की प्राचीर से नीचे गहरी खाई में फेंक दिया जाता था, या उसे किसी क्रोधित हाथी (शराब आदि के नशे में) के पैरों से बांध दिया जाता था और उसे पथरीले, ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर दौड़ाया जाता था (जिसके परिणामस्वरूप पीड़ित की मृत्यु हो जाती थी)। (पाठकों से अनुरोध है कि वे उस अमानवीय मृत्यु को याद करें, जो वीर और प्रसिद्ध विठोजीराव होल्कर को उपरोक्त तरीके से पुणे में (16 अप्रैल 1801 को) धूर्त और कृतघ्न पेशवा द्वारा दी गई थी)। कभी-कभी पीड़ितों के मुंह में खौलता तेल, सिंदूर या सीसा डाल दिया जाता था, जिससे स्वाभाविक रूप से उनकी मृत्यु हो जाती थी। ऊपर वर्णित जैसे रोंगटे खड़े कर देने वाले दंड गरीब और असहाय प्रजाजनों को छोटी-मोटी चोरी या अपराधों के लिए, केवल द्वेषवश दिए जाते थे। हाल ही तक, कुख्यात पेशवा वंश के अंतिम शासक बाजिओ पेशवा द्वितीय के (अपमानजनक) शासनकाल के अंत तक, यदि किसान समय पर भूमि कर अदा करने में चूक करते थे, तो उन्हें सार्वजनिक रूप से (चावड़ी के सामने) भारी पत्थरों से पीठ ढककर झुकाया जाता था, या कभी-कभी उनकी पत्नियों को उनकी झुकी हुई पीठ पर बैठाकर उनके चेहरों के नीचे जलाई गई मिर्चों का तीखा, घिनौना धुआं सूंघने के लिए मजबूर किया जाता था। यदि हम पेशवाओं के शासनकाल में पीड़ितों पर किए गए अत्याचारों और दंडों की तुलना अन्य देशों और शासन व्यवस्थाओं में प्रचलित अत्याचारों से करें (हम यह कहने का साहस करते हैं), तो पेशवाओं के दंड कहीं अधिक क्रूर साबित होते हैं। (यदि हम इन कठोर दंडों पर निष्पक्ष रूप से विचार करें) तो हमें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि

क्या पेशवाओं के जातिवादी कानून लागू करने वाली एजेंसियां (अधिकारी) दिन-रात गरीब प्रजा को प्रताड़ित और परेशान करने के विभिन्न तरीकों की योजना बना रही थीं और उन पर विचार कर रही थीं। दंडों की विधि तैयार करते समय उनका एकमात्र उद्देश्य यही था। प्रजा को दंडित करने के उनके दृष्टिकोण में अनेक पहलू शामिल थे—जैसे कि पिटाई या कोड़े मारना, शरीर को अपंग करना, लूटपाट करना या विभिन्न प्रकार से उत्पीड़न करना (मानसिक और शारीरिक)। प्रजा की पीड़ा से ब्राह्मणों को असीम आनंद और संतुष्टि मिलती थी। ब्राह्मणों का दण्डारोपण गरीब प्रजा को कीड़े-मकोड़ों से भी नीचा या खेत में मूक जानवरों से भी कमतर समझता था। भाटों के अनुसार, गरीब प्रजा को विशेष रूप से (ईश्वर द्वारा) भाट पेशवाओं और उनके जाति-वासियों की सेवा करने के लिए बनाया गया था। इन सेवकों का कार्य खेतों की जुताई करना और भरपूर फसल काटना, कपड़े बुनना, चिलचिलाती धूप में परिश्रम करना और पेशवाओं, उनके जाति-वासियों, उनकी स्त्रियों और बच्चों की ज़रूरतों के अनुसार विभिन्न प्रकार की विलासिता की वस्तुएँ बनाना और आपूर्ति करना था। ऐसा ही हो!

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पेशवा और उसके दुष्ट जातिगत सलाहकारों (सत्ता के नशे में चूर होकर गरीब प्रजा पर अत्याचार करने वाले उनके समूह) को गद्दी से उतार दिया। उनके कुशासन और कुकर्मों का यह उचित दंड था। ईश्वरीय कृपा से यहाँ अंग्रेजी शासन स्थापित हुआ, जो न्यायपूर्ण, दयालु, कल्याणकारी, लाभकारी, धर्मपरायण और शांतिपूर्ण था - भारत की पीड़ित जनता के सुख-सुविधाओं के लिए। किसान सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति सदा कृतज्ञ और ऋणी रहते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं, "हे प्रभु! यह शासन दीर्घायु हो! (हम यह कथन इसलिए कर रहे हैं क्योंकि) यहाँ अंग्रेजी राज के आगमन के बाद, आम लोगों ने राहत की सांस ली, क्योंकि वे अंततः अमानवीय उत्पीड़न और अत्याचार (ईर्ष्या और जलन से उत्पन्न) से मुक्त हो गए थे - धार्मिक, नैतिक, प्रशासनिक और अन्य कई रूपों में।

आजकल, अंग्रेज़ शासन के अधीन प्रजा को वे काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो उन्हें पसंद हैं - जो उनके हित में हैं और जो दूसरों के लिए हानिकारक नहीं हैं। पहले (पेशवा शासन के अधीन) प्रजा की संपत्ति लुटेरों के हमलों के प्रति असुरक्षित थी। वे उच्च सरकारी अधिकारियों और हिंसक लुटेरों (यानी पिंडारियों) के निरंतर भय में जीते थे - जिन्हें शासक वर्ग (राजाओं) का संरक्षण प्राप्त था। इसलिए, लोग अपनी मेहनत से कमाए गए धन का उपयोग अपने आराम के लिए नहीं कर पाते थे, न ही इतने खतरों और कठिनाइयों के कारण उसे सुरक्षित रख पाते थे। परिणामस्वरूप, आम लोगों ने जीवन में रुचि खो दी और आलसी, निकम्मे और निर्धन हो गए। आज प्रजा की कमाई (जो उन्होंने मेहनत से कमाई है) पूरी तरह सुरक्षित है। इसीलिए वे इसे अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते हैं, बचा सकते हैं या अपनी इच्छानुसार इसका निपटान कर सकते हैं। संक्षेप में, वे अपनी कमाई के निर्विवाद स्वामी हैं। इसीलिए उन्होंने अपनी आलसी आदतें त्याग दी हैं और अपने उपयोग के लिए अधिक से अधिक धन अर्जित करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। (अंग्रेज़ी) सरकार ने प्रजा के कल्याण के लिए अनेक अच्छे सुधार किए हैं और जनहित

में अनेक नई परियोजनाएँ शुरू करने की योजना बना रही है। पूर्व में यात्रा करना लोगों के लिए एक बड़ी चुनौती थी, क्योंकि इसमें अनेक खतरे थे। सरकार ने अब नई सड़कें बनवाकर यात्रियों की यात्रा को सुरक्षित बना दिया है। इसलिए यात्रा करना उनके लिए आनंददायक हो गया है। सरकार ने लोगों की सुविधा के लिए (नए) पुल बनवाए हैं, अनेक नए अंग्रेज़ी विद्यालय, अनेक अस्पताल और जरूरतमंदों के लिए अनेक सराय खुलवाए हैं। ऐसी अनेक और नई सुविधाओं का उल्लेख किया जा सकता है। लेकिन सरकार ने एक ऐसी महान परियोजना शुरू की है जो वास्तव में लोगों के लिए लाभकारी है और सरकार के लिए प्रशंसनीय एवं सदा प्रशंसनीय है। आम आदमी के लिए इसके महत्व को रेखांकित करने की आवश्यकता नहीं है। सरकार द्वारा शुरू की गई यह उत्तम और मूल्यवान परियोजना उन लोगों के लिए आशा और उत्साह का स्रोत है जो इतने वर्षों से गरीबी के अभिशाप से ग्रस्त हैं। यह परियोजना हमारे देश की पर्वत श्रृंखलाओं में फैले कई दर्रों को आपस में जोड़ने और कई विशाल झीलें (रिसने वाले तालाब) बनाने से संबंधित है। सरकार विभिन्न स्थानों पर कई नहरें बनाने की योजना बना रही है, जिनके माध्यम से जरूरतमंद किसानों की जमीनों को जीवनदायी जल उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे वे साल भर खेती कर सकेंगे। सरकार इन झीलों से उन प्यासे लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने का भी इरादा रखती है जो इतने वर्षों से पीने के पानी की कमी से जूझ रहे थे। यह एक अत्यंत आवश्यक सुविधा थी और ईश्वर की कृपा से अब साकार हो गई है।

एक सदी से भी अधिक समय तक भाट शासकों ने गरीब प्रजा पर अन्यायपूर्ण और भारी कर लगाकर करोड़ों रुपये (अपने निजी सुख-सुविधाओं के लिए) हड़प लिए, लेकिन उन्होंने ईमानदारी से इस अवैध रूप से अर्जित धन का एक पैसा भी गरीब प्रजा के कल्याण के लिए खर्च करने की जहमत नहीं उठाई। भाट शासकों द्वारा इस विशाल धन को खर्च करने के विभिन्न तरीकों का वर्णन करते हुए हमें अत्यंत शर्म आती है। उन्होंने अपने ही जाति के लोगों के लिए विभिन्न स्थानों पर मंदिर परिसर स्थापित किए और उनके लिए मुफ्त भोजन वितरण केंद्र खोले। करों की राशि खजाने में जमा होते ही भाट शासक मंदिर परिसर X को दो लाख रुपये और मंदिर परिसर Y को पचास हजार रुपये दान करने के तत्काल आदेश जारी कर देते थे। पुणे स्थित 'पार्वती मंदिर परिसर' का मामला तो अपने आप में अनूठा था। ब्राह्मणों को घी में तले हुए मीठे पकवान परोसे जाते थे और उन्हें प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दस रुपये का अतिरिक्त दान दिया जाता था। अगले दिन लड्डू परोसे गए और प्रति व्यक्ति बीस रुपये का दान दिया गया। उसके अगले दिन केसर से सुगंधित चावल परोसे गए और उन्हें भरपेट दान दिया गया। धोती पहने ब्राह्मणों को दो-दो शॉल दिए गए और कुछ मामलों में कुछ ब्राह्मणों को अच्छी-खासी वार्षिक राशि भी दी गई। इस प्रकार पेशवाओं ने किसानों द्वारा अपनी मेहनत से कमाए गए करों की राशि को भव्य दैनिक भोज और उदार दान एवं पुरस्कारों के रूप में (अयोग्य) ब्राह्मणों पर लुटाकर बर्बाद कर दिया, जिससे गरीब किसानों के साथ घोर अन्याय हुआ और उनमें गहरी पीड़ा उत्पन्न हुई।

(कोई यह सवाल पूछ सकता है) क्या गरीब किसान इतने संपन्न थे कि वे ब्राह्मण शासकों को इतना भारी कर चुका सकें? इसका उत्तर स्पष्ट रूप से 'नहीं' है। उनकी दयनीय स्थिति

का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। गरीब शूद्रों को साल भर (हर मौसम में - चिलचिलाती गर्मी, मूसलाधार बारिश और कड़ाके की सर्दी) अपने खेतों में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। उनके पास शरीर ढकने के लिए मोटे कपड़े और भूख मिटाने के लिए मोटा-मोटा, पोषणहीन भोजन भी नहीं था। लगभग बीस फीट लंबा फटा हुआ कपड़ा उनके सिर को ढकने का काम करता था, जो नाममात्र की पगड़ी थी। वे साल भर फटे-पुराने मोटे कंबलों से अपना शरीर ढके रहते थे। उनके जूते (चप्पल, चप्पल) जगह-जगह से टूटे-फूटे होते थे और वे उन्हें केवल गर्मियों में ही पहनते थे और अगली गर्मियों में इस्तेमाल करने के लिए उन्हें अटारी में सुरक्षित रख देते थे। वे साल के बाकी बचे समय नंगे पैर ही रहते थे। उनके पास कमीज के नाम पर एक कपड़ा भी नहीं होता था। अगर वे बाजार से कुछ भी खरीदते (जैसे किराने का सामान, सब्जियां आदि), तो उसे अपने बेहद छोटे कपड़े (जिसे कमीज भी नहीं कहा जा सकता) या अपनी पगड़ी में ही रखना पड़ता था। संक्षेप में, यही किसानों के कपड़ों की (दयनीय) स्थिति थी।

किसानों की स्त्रियों के वस्त्रों का वर्णन करते हुए हमें अत्यंत दुख होता है। वे जैसे-तैसे अपना जीवन व्यतीत करती थीं, क्योंकि उनके पुरुष उन्हें कोई सुख-सुविधा नहीं दे पाते थे। यदि सौभाग्यवश उन्हें दो या ढाई रुपये की कोई खुरदरी साड़ी मिल भी जाती, तो उन्हें कम से कम दो साल तक उसी से काम चलाना पड़ता था। उनके पास कोई अतिरिक्त साड़ी नहीं होती थी। कठिन शारीरिक श्रम (घरेलू कामकाज और खेतों में काम) में डूबी रहने के कारण, उन्हें चार-पाँच दिन तक एक ही खुरदरी, बिना धुली साड़ी पहननी पड़ती थी। यदि उन्हें अपने व्यस्त कार्य से कुछ पल का अवकाश मिल पाता, तो वे पास की नदी पर जातीं, जहाँ वे अपनी साड़ियों को टुकड़ों में धोतीं, एक बार में आधा धोतीं और बाकी आधा अपने शरीर पर ही पहने रहतीं, जिससे उन्हें बहुत शर्म आती थी। समय के साथ-साथ साड़ी पूरी तरह घिसकर फट जाती। तब वे आधे हिस्से को एक बार में सिल लेतीं और बाकी आधे को बाद में सिलतीं। बाद में, साड़ी इतनी जर्जर और फटी हुई हो जाती थी कि बेचारी औरत को उसे रंग-बिरंगे कपड़ों के टुकड़ों से सिलना पड़ता था। इस वजह से, साड़ी का असली रंग निश्चित रूप से बताना मुश्किल था (जो असल में एक पैचवर्क रजाई जैसी थी)। फटे-पुराने और पैबंद लगे कपड़े से अपना शरीर ढके और गोबर के उपलों से भरी भारी टोकरी ढोते हुए उसे बाजार जाना पड़ता था। हाय! हाय! यह हालत कितनी दर्दनाक और दयनीय है!

शूद्र अपने मित्रों को अपनी पीड़ा की कहानी सुनाते हुए सचमुच हृदयविहीन हो गए होंगे (उनका हृदय अवश्य ही चकनाचूर हो गया होगा)। वे अवश्य कहेंगे - 'जिस दिन हम पैदा हुए, उस दिन पर लानत हो! जन्म के समय ही मर जाना कितना अच्छा होता। हम अपनी स्त्रियों की यह दयनीय स्थिति सहन नहीं कर सकते!' मनुष्य शारीरिक पीड़ा को धैर्यपूर्वक सहन कर सकता है, परन्तु अपने प्रियजनों की पीड़ा को सहन करना मनुष्य की क्षमता से परे है। वह अपने रिश्तेदारों की इस दयनीय स्थिति को देखकर पीड़ा और दुःख से व्याकुल है। परन्तु ऐसे संकट में बेचारे किसान सचमुच असहाय हैं। कल्पना कीजिए कि वे कितना अपोषक और बेस्वाद भोजन खा रहे होंगे। उन्हें सूखा ज्वार, नाचनी (नागली) या बाजरे की

रोटी खानी पड़ती है, जिसमें नमक, मिर्च या प्याज मिला होता है। उनकी सब्जियां तो पकी होती हैं, परन्तु उन्हें तेल, नमक या मिर्च पाउडर से सजाने का सामर्थ्य भी नहीं होता। कभी-कभी उसे ज्वार या नागली के दरदरे पिसे आटे से बना दलिया खाने को मजबूर होना पड़ता है। कभी-कभी उसे सिर्फ उबली हुई सब्जियां खानी पड़ती हैं। कभी-कभी उसे जंगली बेर खाकर ही काम चलाना पड़ता है। सबसे बुरी बात यह है कि उसे कभी-कभी भोजन के बदले खूब सारा पानी पीना पड़ता है, पेट में रस्सी बांधनी पड़ती है और पूरे दिन खाली पेट खेत में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

सदा गरीब किसानों से कर के रूप में एकत्र किए गए धन को, जो किसानों के पसीने से कमाया गया था, अपने ही जाति के लोगों (ब्राह्मणों) के भोज पर खर्च करना घोर अनैतिकता है। यदि भाट शासकों ने किसानों से एकत्र किए गए धन का एक हिस्सा सिंचाई के लिए नहरों के निर्माण या जनता के हित में किसी अन्य परियोजना में लगाया होता और शेष धन अपने आलसी जाति के लोगों को तृप्त करने में खर्च किया होता, तो जनता को काफी लाभ होता और उन्हें भोजन और वस्त्र की कमी का सामना नहीं करना पड़ता। यह भाट शासकों के लिए गर्व की बात होती। यदि उन्होंने किसानों के खेतों में सिंचाई की सुविधा (ऊपर बताए गए सुझाव के अनुसार नहरों का निर्माण करके) उपलब्ध कराई होती, तो किसान नियमित रूप से भरपूर फसलें प्राप्त कर पाते और पेशवाओं को दुगुना या चौगुना कर चुका पाते। बदले में, पेशवा और भी अधिक ब्राह्मणों को भव्य भोज और उदारतापूर्वक आर्थिक उपहार दे पाते। जब ब्राह्मण भिक्षुओं को लड्डू आदि जैसे उत्तम व्यंजनों से भरपेट भोजन कराया जाता, और यदि वे फिर भी कुछ लड्डू खा पाते, तो किसानों की भूमि सिंचित होती। यदि किसानों की भूमि सिंचित होती, तो पेशवा अपने लालची जातिवासियों को खाए गए प्रत्येक अतिरिक्त लड्डू पर बीस या तीस रुपये का इनाम दे पाते। लेकिन स्वार्थवश ग्रस्त होने के कारण उन्हें यह विचार कभी सूझा ही नहीं।

सिंचाई सुविधाओं के अभाव में किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। सैकड़ों (बल्कि हजारों) किसान आज भी इन सुविधाओं के अभाव में भीषण कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। यह सर्वविदित सत्य है कि जिन देशों में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, वहां के किसानों को कृषि कार्यों में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। चूंकि उनकी आजीविका पूरी तरह से कृषि पर निर्भर है, इसलिए ऐसी सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध कराना ही उन्हें गरीबी के अभिशाप से मुक्ति दिलाने का एकमात्र उपाय है। अधिकांश लोग इस तथ्य से अवगत हैं कि ब्रिटिश सरकार ने अपने देश (इंग्लैंड) में किसानों को पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं प्रदान की हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनके परिवार और समुदाय की आर्थिक स्थिति में सर्वांगीण सुधार हुआ है। हैदराबाद के निज़ाम ने अपने राज्य के कुछ क्षेत्रों में नहरों का निर्माण कराया है, जिसके परिणामस्वरूप उन क्षेत्रों के किसान आर्थिक रूप से काफी समृद्ध हुए हैं। चूंकि हमारे देश में किसानों को ऐसी सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं, इसलिए उनकी आजीविका का मुख्य साधन कृषि बुरी तरह प्रभावित हुई। परिणामस्वरूप, अतीत में सबसे अधिक पीड़ित आम किसान ही रहा है, जो अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से अपने खेत पर निर्भर था। सिंचाई कृषि की जीवनरेखा है।

इसलिए, पानी वास्तव में किसान के लिए जीवनदायी उपहार है। ऐसे उपहार या सुविधा के अभाव में, उसका पतन निश्चित है। यदि किसान को यह सुविधा मिल जाए, तो कृषि उसके लिए वास्तव में आर्थिक रूप से लाभकारी होगी, चाहे उसका खेत कितना भी ऊबड़-खाबड़, पथरीला या कंकड़युक्त क्यों न हो। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यदि इस खेत को भरपूर पानी मिले, चाहे वह कितना भी पथरीला, बंजर या ऊबड़-खाबड़ क्यों न हो, किसान अपने खेत में कई फलदार वृक्ष और विभिन्न प्रकार की फसलें उगा सकेगा, यहाँ तक कि गैर-मौसम (अर्थात, केवल बरसात के मौसम तक सीमित नहीं) में भी। एक छोटा सा उदाहरण लीजिए। औंध में राज्यपाल के आलीशान निवास के आसपास की ज़मीनें कुछ समय पहले तक बंजर, पथरीली और अनुत्पादक मानी जाती थीं। देखिए, उसी जगह पर अब कितना अद्भुत परिवर्तन हुआ है! पूरा परिसर बागों, फूलों वाली झाड़ियों और अन्य कई प्रकार की झाड़ियों, जड़ी-बूटियों, पेड़ों आदि से भरा हुआ है। यह अब एक रमणीय विशाल उद्यान में परिवर्तित हो गया है, बल्कि एक वास्तविक स्वर्ग में बदल गया है। (इसे देखकर ही विश्वास होगा)। पुणे की काली, जलोढ़ मिट्टी में भी ऐसा कोई दूसरा उद्यान खोजना मुश्किल (बल्कि असंभव) होगा। इतनी बंजर (ऊबड़-खाबड़, अनुत्पादक) मिट्टी पर ऐसे सुंदर उद्यान का निर्माण वास्तव में आश्चर्यजनक है। थोड़ा सोचने पर ही इसका कारण पता चल जाता है। पास की नदी से पानी लाकर इस बंजर ज़मीन को भरपूर पानी दिया गया है। मजदूरों की कड़ी मेहनत भी इस परिवर्तन का कारण है, लेकिन यह मुख्य कारण नहीं है। इस परिवर्तन की कुंजी प्रचुर मात्रा में जल की आपूर्ति है। इससे स्पष्ट होता है कि कुशल सिंचाई प्रणाली के माध्यम से किसानों को उनकी कृषि गतिविधियों के लिए जल की आपूर्ति करना कितना आवश्यक है। (वास्तव में, जल जीवनदायी है!)

किसान यह मानते हैं कि पानी की प्रचुर आपूर्ति ही उनकी समृद्धि की कुंजी है (यही उनका सच्चा धन है)। लेकिन पानी की अनिश्चित आपूर्ति उनके लिए विपत्ति का कारण बन जाती है। वे कंगाल हो जाते हैं और अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ बुरे दिन देखने लगते हैं। कुछ को अपना घर छोड़कर दूसरे क्षेत्रों में पलायन करना पड़ता है। कुछ कंगाल होकर घर-घर भीख मांगने को मजबूर हो जाते हैं। कुछ आत्महत्या कर लेते हैं। अब मैं भारतीय किसानों की इस दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार कारणों पर चर्चा करूंगा।

हम प्रकृति के नियम का संचालन देखते हैं—कि यदि एक क्षेत्र में भरपूर वर्षा होती है, तो कोई दूसरा क्षेत्र सूखे से ग्रस्त हो जाता है। यह पूरे देश में एक समान नहीं होता। यही कारण है कि किसानों को हर दस या पंद्रह साल में भीषण सूखे का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप फसलें बर्बाद हो जाती हैं। तब किसान पिछले वर्ष की फसल से भंडारित अनाज पर निर्भर हो जाता है। लेकिन वह भंडार उसके परिवार के सभी सदस्यों को अधिकतम छह महीने तक खिलाने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त होता है। जब वह भी खत्म हो जाता है, तो उसके पास अगली बुवाई के मौसम के लिए बीज खरीदने के लिए भी पैसे नहीं बचते। किसान की यह विपत्ति ब्राह्मणों और मारवाड़ी साहूकारों के लिए गरीब किसान को लूटने का सुनहरा अवसर होती है। वे गरीब, निर्धन किसान की दुर्दशा पर प्रसन्न होते हैं, और मीठी बातों से उसे अपने वश में कर लेते हैं। कुछ ब्राह्मण साहूकार

उसके घर जाकर उससे विनम्रतापूर्वक पूछते हैं— 'नमस्कार, प्रिय पाटिल! आप बहुत दुखी लग रहे हैं। क्या मैं कारण जान सकता हूँ?' इस पर गरीब किसान ने जवाब दिया, "महोदय, मैं अपनी दुर्दशा आपको कैसे समझाऊँ? पिछले साल सूखा पड़ा था (जिसके कारण फसलें बर्बाद हो गईं)। इसलिए मुझे पिछले साल (दो साल पहले) बचाए गए थोड़े से अनाज पर निर्भर रहना पड़ा। अब मैं पूरी तरह से कंगाल हो गया हूँ और बुवाई का मौसम शुरू होने वाला है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि इस संकट से कैसे निपटूँ।" इस पर दयालु ब्राह्मण साहूकार ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "बिल्कुल भी चिंता न करें। मैं आपको खुशी-खुशी दस-बारह रुपये उधार दे दूँगा। जाइए और बीज खरीद लीजिए (और उन्हें अपने खेत में बो दीजिए)।" गरीब शूद्र किसान ब्राह्मण साहूकार की मीठी बातों में आसानी से आ जाता है। इतना ही नहीं, वह उस अजनबी की उदार पेशकश से अभिभूत हो जाता है, जिसने उसकी घोर संकट की घड़ी में उसकी मदद करने के लिए इतनी दूर उसके जर्जर घर तक आने का कष्ट उठाया (दस-बारह रुपये का ऋण देकर)। लालची साहूकार की बुरी साजिश—(उसे ऋण देकर) उसका घर और अन्य संपत्ति छीन लेने की—उसके भोले मन में जरा भी नहीं आती। लेकिन वह अपनी घोर संकट की घड़ी में समय पर मदद मिलने की उम्मीद से खुश हो जाता है और साहूकार से दस-बारह रुपये का ऋण देने की विनती करता है। चालाक ब्राह्मण साहूकार उससे कहता है, "ठीक है। कृपया कल राजस्व स्टांप पत्र (बॉन्ड) लेकर मेरे पास वापस आना और अपने कुछ रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों को लाना मत भूलना। निश्चिंत रहो, मैं तुम्हारी संकट की घड़ी में मदद करूंगा।" मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा अगर मैं आपसे कल एक स्टांप पत्र (बॉन्ड) लेकर आने का अनुरोध करूं। कृपया मुझे गलत न समझें। मुझे आप पर पूरा भरोसा है। मैं आपकी योग्यता पर शक नहीं करता। हम दोनों एक ही गांव के हैं, है ना? हम दोनों एक ही धर्म (हिंदू धर्म) को मानते हैं। मैं सपने में भी आपको धोखा देने (आपके साथ अन्याय करने) के बारे में नहीं सोचूंगा। आपको मेरी अच्छाई पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। अगर आपके प्रति मेरी मंशा बेईमान होती, तो क्या मैं अपनी मर्जी से इतनी दूर आपके घर आता, पाटिल, और आपकी इस मुश्किल घड़ी में कर्ज देकर हर संभव मदद करने की पेशकश करता? कभी नहीं! वह भोले-भाले किसान के मन को मीठी, धोखे भरी बातों से बहलाता, ताकि वह जल्दी से समझौता कर ले। भोला-भाला किसान अगले दिन आवश्यक समझौता पत्र लेकर ब्राह्मण साहूकार के घर लौटता। साहूकार कुलकर्णी से उस समझौते में कई अनुचित शर्तें जुड़वा देता, क्योंकि कुलकर्णी गुप्त रूप से ब्राह्मण साहूकार के साथ मिला हुआ होता। फिर वह गरीब शूद्र किसान और उसके परिवार के सदस्यों या रिश्तेदारों से उस समझौते पर अंगूठे के निशान लगवाता। इसके बाद वह समझौते को लिखने के लिए कुलकर्णी की फीस के रूप में दो या तीन रुपये काट लेता और ऋण के रूप में नौ या दस रुपये देता (दस या बारह रुपये के बजाय)। कुछ समय बाद किसान ऋण की राशि चुका देता, लेकिन धूर्त साहूकार उससे मूल ऋण पर ब्याज पर ब्याज वसूलता और कुछ समय बाद कुल राशि पर भी ब्याज वसूलता (हालांकि मूल ऋण पहले ही चुका दिया गया होता)। किसान के बेटे की शादी होने वाली थी। इसलिए साहूकार किसान को एक और छोटा ऋण देता और उसे नए ऋण के लिए एक नया बांड निष्पादित करने के लिए मजबूर करता। किसान ऋण चुकाने की स्थिति में नहीं था। इसलिए साहूकार मूल ऋण में ब्याज जोड़कर

किसान से एक नया बांड निष्पादित करवाता। यह (गलत) प्रथा तीन से चार साल तक चलती रही। इस दौरान मूल ऋण की राशि, जो 10 रुपये से 12 रुपये थी, बढ़कर 200 रुपये या 250 रुपये हो गई। तब साहूकार गरीब किसान के खिलाफ 300 रुपये से 325 रुपये की राशि की वापसी के लिए मुकदमा दायर करता, अदालत में उसके खिलाफ आदेश पारित करवाता और फसल कटाई के समय, ऋण न चुकाने के कारण उसकी संपत्ति जब्त करने (अटैचमेंट) का आदेश जारी करने पर जोर देता।

हाय! वहाँ का भयावह दृश्य शब्दों में बयान करना नामुमकिन है। बेचारा, असहाय और निर्धन किसान अपने परिवार के साथ साल भर दिन-रात अपने खेत में मेहनत करता रहा, अधनंगे कपड़ों में भूख, चिलचिलाती धूप, मूसलाधार बारिश और कड़ाके की ठंड सहता रहा। अब जब वह अपनी मेहनत का फल (अच्छी फसल) मिलने की उम्मीद कर रहा था, तभी निर्दयी साहूकार अपने क्लर्क और चपरासी के साथ उसके आंगन में आ खड़ा हुआ। जरा सोचिए उस बेचारे किसान की क्या हालत हुई होगी। आश्चर्य की बात नहीं, अगर साहूकार किसान और उसके परिवार के सामने यमराज के रूप में प्रकट हुआ, जो चारों ओर तबाही मचा रहा हो - अपने भयानक रूप में - और क्लर्क और चपरासी उसके वफादार, अचूक जल्लाद बनकर उन सबको मौत के घाट उतारने आए हों। डरे हुए बच्चों की चीखें हवा में गूंज उठीं। घर की भयभीत स्त्रियाँ सिसकियाँ लेने लगती हैं और हताश एवं असहाय किसान अपना सीना पीटते हुए फूट-फूट कर रोने लगता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्हें लगता है कि उन पर कोई बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। वे अपनी पूर्ण असहायता में ईश्वर से प्रार्थना करती हैं, “हे प्रभु! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे सबसे बड़े शत्रु पर कभी ऐसी विपत्ति न आए।” जब साहूकार के एजेंट उसका थोड़ा सा अनाज और अन्य सामान आंगन में घसीटकर लाते हैं, तो बेचारा किसान बार-बार उस निर्दयी साहूकार के पैरों में गिरकर दया की भीख माँगता है, पर कोई लाभ नहीं होता। किसान की पत्नी भी उससे (साधनदाता से) अत्यंत दयनीय भाव से विनती करती है, “महोदय! हमने मूलधन ब्याज सहित बहुत पहले ही चुका दिया था। लेकिन आपने हमसे पहले चुकाए गए मूलधन पर ब्याज पर भी ब्याज लगा दिया है। हम वह राशि भी चुकाने को तैयार हैं जो हमारे खाते में अन्यायपूर्वक लगाई गई है। यदि आप हमें ऋण चुकाने के लिए कुछ और समय दे दें तो हम आपके अत्यंत आभारी होंगे। अन्यथा, हम सभी को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, हम कंगाल हो जाएंगे, और (सबसे बुरी बात) हमारे ये नन्हे बच्चे (मुश्किल से दो या तीन साल के) भूख से मर जाएंगे। आप स्वयं देख सकते हैं, महोदय, कि हमारे ये बच्चे अधनंगे हैं (क्योंकि हम उन्हें कपड़े नहीं दे सकते), और हमें उन्हें ठीक से खिलाने में भी कठिनाई होती है। यदि आप हमारा थोड़ा सा अनाज भी छीन लेंगे, तो उन्हें बहुत असुविधा होगी। वे किससे मदद मांगेंगे? आदरणीय महोदय, आप हे प्रभु, आप हमारे लिए करुणा, क्षमा और शांति के साक्षात अवतार हैं। आप वास्तव में असहायों के मित्र और रक्षक हैं, और इसीलिए आपको ‘धरती का देवता’ कहा जाता है। अत: मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक (हाथ जोड़कर और घुटने टेककर) हमारे असहाय बच्चों पर दया करने और हमें अनाज का कुछ हिस्सा (जो आप हमसे जबरदस्ती छीन रहे हैं) रखने की अनुमति देने की विनती करती हूँ। मेरी विनती को बिना सोचे-समझे

अस्वीकार करना आपके लिए अत्यंत अनुचित और अशोभनीय होगा।" किसान की पत्नी की यह विनती सुनकर साहूकार अत्यंत क्रोधित हुआ और रक्तरंजित आँखों से उसने उससे कहा, "हे मूर्ख स्त्री, शूद्र होकर तुम मुझे इस विषय में उपदेश देने की हिम्मत कैसे करती हो? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि मैं ऋण माफ कर दूँ और इस स्थिति को स्वीकार कर लूँ और तुम्हारे पति से उसे वसूलने का प्रयास न करूँ?" वह बेचारी स्त्री उसके शब्दों का उत्तर नहीं दे सकी और असहाय होकर चुप रही। किसान के दैनिक समाचार पत्र के अन्य सदस्य भी इस संबंध में उससे विनम्रतापूर्वक विनती करते थे। लेकिन निर्दयी साहूकार उनकी विनतियों पर ध्यान नहीं देता था, बल्कि अपने घिनौने इरादे को अंजाम देते हुए किसान का सारा सामान (बर्तन, अनाज आदि) लूट लेता था। फिर वह उसे किसी और को बेच देता और उससे प्राप्त राशि को मूल ऋण में से काट लेता था। शेष ऋण पहले की तरह किसान के नाम पर ही रहता था।

ब्याज पर ब्याज लगाने की वही पुरानी प्रक्रिया, साथ ही मूलधन पर भी ब्याज वसूलने का सिलसिला, किसान को चार-पाँच साल तक लगातार परेशान करता रहता था। उसे 8 या 10 रुपये के ऋण के लिए भारी असुविधा उठानी पड़ती थी। वह अपना खेत, अपने पशु, अपना कुआँ और उसमें सिंचित खेत सब कुछ खो देता था, जिसके परिणामस्वरूप वह पूरी तरह से कंगाल हो जाता था। उसका उत्पीड़न और मानसिक पीड़ा इतनी अधिक होती थी कि वह आत्महत्या तक कर लेता था। इन ब्राह्मण साहूकारों में इतना दुस्साहस होता था कि वे मूलधन सहित पूरी राशि ब्याज सहित वसूल लेते थे। यदि वे अंग्रेज़ सरकार के उदार शासन में भी गरीब किसान पर इतना अन्याय कर सकते थे, तो मेरे पाठक कल्पना ही कर सकते हैं कि पेशवाओं के शासनकाल में, यदि कोई किसान किसी ब्राह्मण साहूकार से कुछ रुपये का ऋण लेता था और उस वर्ष बारिश नहीं होती थी, तो वे उसे कितना परेशान करते होंगे।

पेशवाओं के शासनकाल में (ब्राह्मण साहूकारों और अन्य ब्राह्मण अधिकारियों के लिए) सरकारी अदालतों में देनदारों के खिलाफ मुकदमे दायर करना आवश्यक नहीं था, क्योंकि सरकार की शक्तियों का प्रयोग ब्राह्मण अधिकारी अपनी मनमानी से करते थे। साहूकार किरायेदारों (देनदारों) को प्रताड़ित करने और उनकी संपत्ति (अनाज और अन्य सामान) को बलपूर्वक छीनने के लिए स्वतंत्र थे। वे उनके मवेशियों को बाजार में बेच देते थे, उनके परिवार के सदस्यों को प्रताड़ित करते थे, जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी उनकी मृत्यु भी हो जाती थी। ये क्रूर उत्पीड़क (ब्राह्मण साहूकार) देनदारों के सिर या पीठ पर भारी पत्थर रख देते थे और फिर उन्हें चिलचिलाती धूप में खड़ा कर देते थे। कभी-कभी उनके चेहरों के नीचे मिर्च जलाई जाती थी ताकि तीखी मिर्च का दुर्गंधयुक्त धुआं उनकी आंखों और नाक में प्रवेश कर जाए। कभी-कभी वे उनके जननांगों पर चिमटे लगाते थे, या उनके हाथ-पैर बांध देते थे, बंधे हुए हाथों में लकड़ी की छड़ी डालकर उन्हें निर्दयतापूर्वक पीटते रहते थे। राजस्व विभाग के ब्राह्मण अधिकारी भी भूमि मूल्यांकन वसूलते समय उन्हें ऊपर बताए गए विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित करते थे।

उस दौर के कई विद्वान और प्रगतिशील आर्य-ब्राह्मण पेशवाओं के अत्याचारी और दमनकारी शासन के बारे में पूरी तरह आश्वस्त थे। लेकिन अपनी जाति के लोगों के डर से वे खुले तौर पर यह स्वीकार करने का नैतिक साहस नहीं जुटा पाए कि अज्ञानी शूद्र किसान आर्य ब्राह्मणों (अर्थात पेशवाओं) के अत्याचार और दमन से मुक्त नहीं हुए हैं। पेशवा शासन के कुछ समर्थक भी थे, जो सुविधा के लिए पुणे में 1870 में स्थापित नवगठित 'जन संगठन' द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभाओं में बड़े-बड़े भाषण देते हुए दावा करते थे कि पिछले तीस वर्षों में शूद्र किसानों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। यह एक सच्चाई है कि अंग्रेज़ शासन से हम सभी (विशेषकर आम जनता) को लाभ हुआ है, लेकिन ये वक्ता इस महत्वपूर्ण तथ्य को जानबूझकर नज़रअंदाज़ करते हैं और नई प्रशासनिक व्यवस्था की छोटी-मोटी कमियों और खामियों पर ज़ोर देने की कोशिश करते हैं (वे उन कमियों को सूक्ष्मदर्शी से जांच कर बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने का प्रयास करते हैं)। कुछ आर्य-भट (ब्राह्मण) जो सबसे रूढ़िवादी विचार रखते हैं और अपनी जाति के लोगों के प्रति सबसे अधिक पक्षपाती हैं (पेशवा शासन के समर्थक), उक्त पेशवा शासन को झूठे और काल्पनिक गुणों से युक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। ये वही लोग हैं जो आजकल घर-घर जाकर बड़े गर्व से कहते हैं, “पेशवा शासन के अधीन शूद्र किसानों का जीवन अत्यंत सुखमय था। हम उसका वर्णन शब्दों में नहीं कर सकते। आज के समय में (अंग्रेज़ शासन के अधीन) शूद्रों के जीवन में उस सुख और आनंद का अंश भी नहीं मिलता। पेशवा शासन के अधीन शूद्रों का जीवन स्तर, उनकी जीवनशैली, उनके रीति-रिवाज और सामाजिक परंपराएँ वास्तव में बहुत उत्तम थीं! शूद्र अपनी सत्यनिष्ठा, धर्मपरायणता, ईमानदारी, निष्ठा और धार्मिक श्रद्धा के लिए प्रसिद्ध थे। शूद्र किसान इतने समृद्ध थे कि यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनका जीवन दूध और शहद से भरा था। (उनका जीवन सांसारिक समृद्धि के शिखर पर पहुँच गया था)। हाय! वे दिन चले गए - वह सुख चला गया, वह नैतिकता चली गई, वह धार्मिक श्रद्धा और पवित्रता चली गई - और वह भौतिक समृद्धि और प्रचुरता भी चली गई!” इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी व्याख्या समाप्त करते हुए, मैं इसे हमारे विवेकशील पाठकों के विवेक और समझदारी पर छोड़ता हूँ कि वे इन दो (विरोधाभासी) दृष्टिकोणों में यदि कोई औचित्य (सत्य का तत्व) है तो उसे खोजें।

15 जून 1885
पेठ ओल्ड गंज
मकान संख्या 395

ज्योतिराव गोविंदराव फुले

पुरोहितवाद का पर्दाफाश

परिचय

इस पुस्तिका के लिए लंबी भूमिका लिखने की आवश्यकता नहीं है। भारत में हमारे समाज में ब्राह्मणों का सर्वोच्च स्थान और शूद्रों और अति-शूद्रों पर उनका अत्याचार सर्वविदित है। कोई पूछ सकता है, 'यदि ऐसा है, तो इस पुस्तिका को लिखने की क्या आवश्यकता (उचितता) है?' हमारा उत्तर यह है कि ब्राह्मण अपनी विषैली रणनीति (या चालें) सभी वर्गों के लोगों पर एक समान रूप से नहीं अपनाते। वे कुनबी (किसानों) और माली (बागवानों) पर विशेष रूप से क्रूरता से अपना पुरोहितवाद करते हैं। अन्य समुदायों के लोग - विशेषकर आधुनिक समय में इन समुदायों के उन्नत वर्ग - इस दुष्ट प्रथा (रणनीति) से अनभिज्ञ हैं। हमारे समाज में शिक्षित और प्रगतिशील लोगों के बीच ब्राह्मण पुरोहित वर्ग दिन-प्रतिदिन अपनी श्रेष्ठता खो रहा है। शूद्रों में ऐसी (स्वस्थ) प्रथा नहीं पाई जाती। पेशवा-बाजीराव प्रथम के शासनकाल में प्रबल रही भाट (पुजारी वर्ग) की घृणित जातिगत श्रेष्ठता आज भी शोषित शूद्रों के मन पर गहरा प्रभाव डाल रही है। श्री ज्योतिबा का यह विनम्र प्रयास शूद्रों जैसे दुर्भाग्यशाली लोगों को उक्त पुरोहितों के बंधन से मुक्त कराने की प्रबल इच्छा से प्रेरित है। इस पुस्तिका को लिखने के पीछे श्री ज्योतिबा का एक और उद्देश्य भी है। वह है हमारी निष्पक्ष और न्यायप्रिय अंग्रेजी सरकार को इन अत्यंत उपयोगी (प्रेरणावान और उत्साही) और परिश्रमी वर्गों को शिक्षित करने की अत्यावश्यक आवश्यकता से अवगत कराना, उनकी दयनीय स्थिति से उन्हें अवगत कराना और इस प्रकार उन्हें भाट पुरोहित वर्ग के बंधन से मुक्त कराना। यदि ये (प्रशंसनीय) उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं तो लेखक (श्री जोतिबा फुले) के प्रयासों का भरपूर फल मिलेगा।

(पिताजी का दिन)

यह पुस्तक ('पुजारीवाद का पर्दाफाश')
लेखक द्वारा समर्पित।
अत्यंत प्रेम के साथ,
कुनबी (कृषक), माली (बागवान),
मांग और महार
in Maharashtra.

अब व्यर्थ की बड़बड़ाहट बंद करो। व्यर्थ के कष्ट और हृदय क्षुद्रता को भी त्याग दो। (हे वीर क्षत्रिय) अपने हृदय से प्रतिशोध के सभी विचार निकाल दो। यह मेरी तुम्हें विशेष सलाह है।

मैं आपसे विनती करता हूँ, मैं आपको सुझाव देना चाहता हूँ, (कि यदि आप प्रतिशोध के विचारों पर काबू नहीं पाते हैं), तो आप निश्चित रूप से एक बड़ी दुविधा में पड़ जाएँगे (आपको निश्चित रूप से हानि होगी)। (याद रखें, आपके वीर देशवासियों ने) अपनी एकता को बड़ी लगन से बनाए रखा।

अतिशूद्रों का पूर्णतः पतन हो चुका है। उन्हें अछूत माना जाता है। उन्हें किसी भी प्रकार का व्यापार करने की मनाही है और कोई भी उन्हें (नौकरी पर भी) काम पर नहीं रखता। वे अनाज नहीं खरीद सकते, इसलिए भूख से व्याकुल हैं। उनके पास रोजी-रोटी कमाने का कोई और साधन नहीं है, इसलिए वे मजबूरी में मरे हुए जानवरों का मांस खाने को मजबूर हैं।

पूरी तरह से भूखे-प्यासे और भूख की पीड़ा सहन न कर पाने के कारण, वे भीख मांगने के लिए विवश हो जाते हैं (वे भीख का कटोरा अपने हाथों में लेकर चलते हैं), और बेशर्मी से घर-घर जाकर बासी भोजन के बचे हुए टुकड़े मांगते हैं।

वे घर की मालकिन को "हे आदरणीय माता" और घर के मुखिया को "हे आदरणीय भाई" कहकर पुकारते रहते हैं। वे घर के सभी सदस्यों और यहाँ तक कि घर आने वाले सभी लोगों से भी बड़ी विनम्रता से विनती करते हैं (परन्तु व्यर्थ)। (कोई भी उनकी हृदयस्पर्शी पुकार पर ध्यान नहीं देता)।

ब्राह्मणों का (प्रसिद्ध, उदार) धर्म (शायद) उन्हें पिछली रात के बासी भोजन के बचे हुए टुकड़े अती-शूद्रों को परोसने से रोकता है, जिन्हें अछूत घोषित किया गया है।

"शायद वे अति-शूद्रों को ऐसा भोजन परोसकर एक बड़ा पाप कर रहे होंगे, जैसा कि उनके (प्रसिद्ध) धर्म के अनुसार आवश्यक है।"

वे अति-शूद्रों को इस प्रकार चेतावनी देते हैं - "हमारे दरवाज़े पर मत रुको, न ही भोजन के लिए ज़ोर-ज़ोर से हमारा नाम पुकारो। हम तुम्हारे अप्रिय चेहरे देखकर तंग आ चुके हैं। यहाँ से चले जाओ, वरना मैं तुम पर पत्थर फेंकूँगा।"

जोतिराव कहते हैं - "(हे पाखंडी ब्राह्मण), आप किस प्रकार का धर्म मानते हैं? आपके धर्म का रहस्य (सार) क्या है? (आप शूद्रों को नीच समझते हैं) और फिर भी उन्हीं शूद्रों से भिक्षा लेने में आपको कोई संकोच नहीं है! आपका धर्म वास्तव में कितना अद्भुत होगा!"

"(हे ब्राह्मणों)! अपना अहंकार और घमंड त्यागकर धर्म के मार्ग पर चलो। कृपया अपने इस झूठे (घृणित) धर्म को आग में जला दो। (तुम्हारे वीर देशवासियों ने) अपनी एकता को बड़ी श्रद्धा से संरक्षित रखा है।"

"हे परम पूज्य महारानी! आप इस विशाल साम्राज्य की सर्वोच्च (दयालु) महारानी माता हैं।"

"यह कैसे हो सकता है कि आप इतने बड़े अन्याय से अनभिज्ञ हैं? कृपया मेरे इन शोषित और दुखी भाइयों को (ब्राह्मणों के बंधन से) मुक्त करें।"

आपने अपने साम्राज्य में दास प्रथा पर प्रतिबंध लगाकर (इसे अवैध घोषित करके) पूरी दुनिया के सामने एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। यदि आप मेरे इन दुर्भाग्यशाली भाइयों को मुक्त नहीं करते हैं, तो यह आपकी निष्पक्ष प्रतिष्ठा पर एक धब्बा (कलंक) होगा।

"आपकी ख्याति के बारे में सुनकर मैं आपकी सहायता के लिए आपके पास आया हूँ। ब्राह्मणों (पुजारी वर्ग) ने हमारे देश में मांग और महारों (अति-शूद्रों) पर बहुत अत्याचार किया है। महाराज, आप कब हमारे देश का दौरा करके स्वयं उनकी दयनीय स्थिति का जायजा लेंगे?"

"अंग्रेज़ अधिकारियों ने स्वयं को एक विशाल दरबार (शाही दरबार) के रूप में गठित कर लिया है, वे अपने दिलों में (अपनी भारी जिम्मेदारी को देखते हुए) गुप्त रूप से भयभीत हैं, और इसलिए उन्होंने अपना अधिकार और जिम्मेदारी ब्राह्मण नौकरशाही को सौंप दी है (त्याग दी है)।"
अंग्रेज अधिकारी आम तौर पर प्रशासन की पेचीदगियों से अनभिज्ञ होते हैं, लेकिन वे दूसरों पर अपना दबदबा कायम रखना चाहते हैं। वे बेहद विलासितापूर्ण जीवन जीते हैं और शानदार पेंशनों पर अपना दावा ठोकते हैं।

मांग और महार (अति-शूद्र) अत्यधिक उत्पीड़ित और सताए हुए हैं, और अपनी (पूर्व) गौरवशाली स्थिति को भूल चुके हैं। (अपनी नासमझी के कारण) वे अपने शत्रुओं (आर्य ब्राह्मणों) की छल-कपट और रणनीति को समझ नहीं पाते।

ब्राह्मणों ने अति-शूद्रों को समाज में सबसे नीच स्थान देकर उनसे बदला लिया है। यदि वे गलती से भी अति-शूद्रों को छू लेते हैं (जिन्हें वे 'अछूत' कहते हैं), तो ब्राह्मण तुरंत घर जाकर स्नान करते हैं (ताकि उस अपवित्र स्पर्श से खुद को शुद्ध कर सकें)। ऐसे में वे अति-शूद्रों को पढ़ना-लिखना (तीनों अंकगणित) सिखाने का सपना भी कैसे देख सकते हैं?

जोतिराव को अति-शूद्रों की दयनीय स्थिति के बारे में सभी अप्रिय तथ्य पता चल गए हैं, और इसीलिए उन्होंने महारानी को उनकी दुर्दशा से अवगत कराने का प्रयास किया है। जोतिराव महारानी से प्रार्थना करते हैं कि वे अति-शूद्रों को ब्राह्मणों के बंधन से मुक्त करें।

पुरोहितवाद का पर्दाफाश

हे प्रभु, आप करुणा के सागर हैं! हम अपने दुःख को विश्वासपूर्वक आपके समक्ष प्रकट करने के लिए विवश हैं। आपके सिवा और कौन है जिससे हम दयनीय भाव से कृपा की याचना कर सकें?

इंदु प्रकाश प्रेस, बॉम्बे 1869।

धिक्कार है तुम्हारे इस (बेकार) जीवनशैली पर। मेहनती लोगों को ही गर्म भोजन मिलता है।

तथाकथित चतुर लोगों को यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि उनका यह आचरण वास्तव में उनके लिए अत्यंत निंदनीय है। इसे मेरा दृढ़ वचन समझें, क्योंकि मैं शब्दों का हेरफेर या छल नहीं करना चाहता। ज्योति इन दुष्ट पुरोहितों को अपने परिश्रम से अर्जित ईमानदारी की रोटी खाने की शिक्षा देता है।

ढलान

एक विवाह समारोह के अवसर पर ब्राह्मण जोशी (पुजारी) किस प्रकार अज्ञानी शूद्र किसान को लूट लेता है।

"धर्म की आड़ में किसी अन्य (शत्रु जाति (अर्थात ब्राह्मण)) के पुजारी पर भरोसा न करें, क्योंकि ऐसा करने से आपको अनावश्यक रूप से भारी नुकसान होगा।"

"अपने ही जाति के लोगों में से रेफरी चुनें - चाहे वे जूनियर हों या सीनियर - दोनों पक्षों (विवाह करने वाले) के दोस्तों में से।"

"दोनों पक्षों (दुल्हन और दूल्हे) के बीच उम्र, स्वभाव और आपसी स्नेह से संबंधित आवश्यक बिंदुओं की बहुत बारीकी से (ध्यानपूर्वक) जांच करें।"

"दुल्हा और दुल्हन को सृष्टिकर्ता से प्रार्थना करनी चाहिए और फिर एक दूसरे को माला पहनानी चाहिए। इस प्रकार सभी लोग सच्चे हर्षोल्लास और खुशी के साथ इस अवसर को मनाएंगे।"

ज्योति का कहना है, "यहां (शूद्रों के विवाह समारोह में) ब्राह्मणों (पुजारियों के रूप में) की कोई आवश्यकता (जरूरत या औचित्य) नहीं है, और उन्हें (ब्राह्मण पुजारियों को) तुरंत भगा देना चाहिए।"

(4) निर्भर

किस प्रकार एक ब्राह्मण पुजारी (जोशी) शूद्र की पुत्री के वयस्क होने के अवसर पर शूद्र को लूट लेता है।

शूद्र की बेटी के वयस्क होने को ब्राह्मण पुरोहितों (जोशी) द्वारा एक सुनहरा अवसर के रूप में देखा जाता है।

वे किसी भी प्रकार की देरी बर्दाश्त नहीं करते और अधीरता से (शूद्रों के) द्वार पर खड़े रहते हैं।

वे कोमल शब्दों का प्रयोग करके अपार खुशी व्यक्त करते हैं, लेकिन भीतर ही भीतर वे धन के लालच से प्रेरित होते हैं।

वे बेशर्मी से लड़की के पहले मासिक धर्म का सटीक समय पूछते हैं और राशि चक्र की स्थिति का पता लगाने के लिए पंचांग देखते हैं।

वे लगातार (शास्त्रों का) पाठ और अन्य प्रकार की अनुष्ठानिक पूजा करते हैं (जो एक धोखा है) और शूद्रों के प्रिय मित्र होने का दिखावा करते हैं।

वे गांव के सभी ब्राह्मणों के लिए एक सामूहिक भोज आयोजित करने पर जोर देते हैं, जहां उत्तम व्यंजनों को शुद्ध घी में भिगोया जाता है, और धार्मिक भिक्षा ('दक्षिणा') के रूप में भारी मात्रा में धन वसूलते हैं।

धारा (5)
गृहप्रवेश समारोह के अवसर पर ब्राह्मण पुजारी किस प्रकार शूद्र को धोखा देता है।

अकुशल मजदूर चिलचिलाती धूप में (घर की) नींव खोदते हैं और मलबे से भरी टोकरियाँ अपने सिर पर ढोते हैं।

राजमिस्त्री काफी ऊंचाई पर बने मचान पर चढ़ते हैं और नींव की खाइयों में ईंटों को उचित क्रम में लगाते हैं।

बढ़ई बंदरों की तरह मचान पर चढ़ जाते हैं और लकड़ी के बीमों और खंभों को जोड़ने वाले लकड़ी के टुकड़ों से जोड़ देते हैं।

मजदूरों को अपनी रोजी-रोटी (रखरखाव) के लिए ये (खतरनाक) काम करने पड़ते हैं, और वे निडर होकर अपना आवंटित काम करते हैं।

उन्हें चिलचिलाती धूप में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, इसलिए उनके शरीर से अत्यधिक पसीना निकलता है और पसीने की बूँदें, बल्कि धाराएँ बहने लगती हैं। (एक निष्पक्ष दर्शक का) हृदय दया से पिघल जाएगा।

घर का मालिक (स्वामिनी) मजदूरों की मेहनत से बहुत प्रसन्न होता है और उदारता दिखाते हुए उन्हें एक भव्य भोज देने का वादा करता है। पुजारी इस भोज को 'गृहप्रवेश भोज' कहते हैं और मेहनती मजदूरों (राजमिस्त्री आदि) की प्रशंसा करने के लिए विवश होते हैं।

इसके बाद ब्राह्मण पुजारी उक्त भोज के लिए एक शुभ दिन तय करता है और घर के मालिक को लुभाता और फुसलाता है।

वे घर के मालिक को 'बलिदान' (अग्नि पूजा) का धार्मिक अनुष्ठान करने और अपने समुदाय के लोगों को भव्य भोज देने के लिए बाध्य करते हैं। वे नए भवन को शुभ चिन्ह के रूप में झालरों और झंडियों की कतारों से भी सजाते हैं।

वे दावत का भरपूर आनंद उठाते हैं और मेज़बान को बड़ी चतुराई से धोखा भी देते हैं। वे भोले-भाले मेज़बान से धार्मिक भिक्षा के रूप में उदारतापूर्वक धन दान की मांग करते हैं (और उसे प्राप्त भी कर लेते हैं), और ऐसा वे कभी नहीं चूकते।

वे शाम को भोले-भाले मेज़बान पर आशीर्वाद बरसाते हैं, और अज्ञानी व्यक्ति से (धन और अन्य उपहारों सहित) लूटने के बाद ही चले जाते हैं।

(चूंकि उत्तम भोजन आलसी ब्राह्मण पुरोहितों द्वारा खा लिया गया है), घर का मालिक और मजदूर (पेटू पुरोहितों पर) लालसा भरी निगाहें डालते हैं और वे बासी भोजन (दावत का बचा हुआ भोजन) आराम से खाते हैं।

ज्योति कहते हैं कि इस प्रकार ये बदमाश (धूर्त) भोले-भाले शूद्र गृहस्थों का शोषण और लूटपाट करते हैं, और वे स्वयं को नीचा साबित करते हैं (नैतिक रूप से निंदनीय हैं)।

ढलान
(आलसी भाट पुजारियों के लिए एक चेतावनी)

धिक्कार है तुम पर, (तुम्हारे जीवन आग में जल उठें), (हे आलसी पुरोहितों), क्योंकि तुम मेहनती शूद्रों से पहले ही (भव्य भोजन) करने का दावा करते हो।

वे दावत में इतना अधिक भोजन (एक मुफ्त उपहार) खा जाते हैं कि उनके गले की नसें सूज जाती हैं और वे शोर मचाते हुए (गड़गड़ाहट की आवाज के साथ) पानी पीते हैं -

जिससे सभी का पेट खराब हो जाता है।

जब घर का मुखिया (और उसके रिश्तेदार) दावत के बचे हुए भोजन का आनंद लेते हैं तो वे बहुत अधीर हो जाते हैं, और यदि गुड़ और पानी का मीठा मिश्रण ('गुलावनी') कम पड़ने लगता है, तो वे (सेवकों को) उसमें पर्याप्त मात्रा में पानी मिलाकर उसे पतला करने की सलाह देते हैं।

इस प्रकार ब्राह्मण पुरोहित (जोशी) आकाश में नक्षत्रों और ग्रहों की संयोगिक स्थितियों के आधार पर अज्ञानी शूद्रों को लूटते हैं। इस प्रकार ये (निर्लज्ज) लालची लोग इस संसार में शूद्रों के सबसे बड़े शत्रु हैं।

"आपको अपने सभी रिश्तेदारों (और सगे-संबंधियों) को एक खुशनुमा मिलन समारोह में इकट्ठा करना चाहिए और इन सभी धोखेबाजों (ठगों) को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए।"

जोती कहते हैं कि सृष्टिकर्ता को विनम्रतापूर्वक अर्पित की गई (सच्ची) प्रार्थना हर समय (अब भी और हमेशा भी) एक संपूर्ण (सच्चा) भोजन (दावत) है।

धारा (2)
ब्राह्मण जोशी अपने घर में बच्चे के जन्म के बाद शूद्र से पैसे कैसे वसूलता है

"मैं वही हूँ! मैं कौन हूँ?" के दार्शनिक मंत्र का जोर-जोर से (और लयबद्ध तरीके से) जाप करते हुए ब्राह्मण जोशी शूद्र के घर में प्रवेश करता है।

वह शूद्र से बच्चे के जन्म का समय पूछता है और बच्चे की कुंडली बनाता है। फिर वह अपनी उंगलियों से कुछ प्रतीकात्मक हरकतें करता है, जो किसी पागल व्यक्ति की हरकतों जैसी लगती हैं।

इन गणनाओं के बाद, ब्राह्मण जोशी भोले-भाले पिता को सूचित करता है कि नवजात शिशु अशुभ नक्षत्र 'मूल' (उत्पत्ति) के अंतर्गत पैदा हुआ है (जो उन सभी के लिए एक बड़े खतरे का संकेत है)।

धूर्त (या झूठे) जोशी के इन (भयानक) शब्दों को सुनकर, शूद्र परिवार के सभी सदस्य, जो पूरी तरह से अनपढ़ थे, भयभीत हो गए।

बेचारी माँ अपने शिशु को असहाय होकर देखती रही और लगातार रोती रही। उस धोखेबाज (जोशी) ने शूद्र परिवार के सभी सदस्यों को पागल कर दिया था।

इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाते हुए, चतुर (जोशी) ने शूद्र को ग्रहों के अशुभ प्रभाव को

दूर करने का एक शक्तिशाली उपाय सुझाया। तदनुसार, उसने कुछ (चुने हुए) ब्राह्मणों को निरंतर मंत्रोच्चार करने का आदेश दिया।

उन्होंने शूद्र को कुछ विशेष गूढ़ अनुष्ठान करने के लिए विद्वान ब्राह्मणों को भरपूर दान (नकद और वस्तु दोनों रूप में) देने के लिए कहा और कहा, "तुम पर एक बड़ी विपत्ति आने वाली है। इसे टालने का प्रयास करो। देर मत करो।"

जब (सरल, अज्ञानी) शूद्र ने प्रतिकूल ग्रहों के इस आसन्न संकट के बारे में सुना तो उसने मन ही मन सोचा- "मैं अपने सारे बर्तन बेच दूं और कुछ पैसे उधार भी ले लूं- ये सब मेरे भविष्य की खुशी के लिए।"

ब्राह्मणों ने विधिवत रूप से आवश्यक गूढ़ अनुष्ठान और साथ ही (जोशी के सुझावानुसार शूद्र की ओर से) निरंतर पाठ का अनुष्ठान किया, लेकिन इस प्रक्रिया में, अज्ञानी व्यक्ति (शूद्र) को प्रतिकूल ग्रहों के खतरे के तहत बहुत अधिक (अनावश्यक) खर्च उठाना पड़ा।

(फिर ऐसा हुआ कि) बच्चे को तेज बुखार हो गया, वह बहुत बेचैन हो गया और तुरंत ही उसकी भी मृत्यु हो गई।

बच्चे के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला हर्षोल्लास गहरे शोक के साये में डूब गया। (खुशी पल भर में गहरे दुःख में बदल गई।)

"हे जोशीओ! भोले-भाले लोगों को धोखा देकर और छल करके पापपूर्ण जीविका न कमाओ (अपने स्वार्थ के लिए), अन्यथा ईश्वर तुम पर क्रोधित होगा," ज्योति कहते हैं।

पुरोहितवाद का पर्दाफाश, भाग I

(आर्य ब्राह्मण ईरान से लुटेरे बनकर भारत आए और उन्होंने इस भूमि के मूल निवासियों से युद्ध किया और उन्हें अपने अधीन कर लिया। निम्नलिखित गाथा में भारत के उन विभिन्न राजाओं और क्षत्रपों (और अन्य अधिकारियों) का वर्णन करने का प्रयास किया गया है, जिन्हें गुलामों और दासों के समान बना दिया गया था। उनके सेनापति परशुराम ने कुछ वीर योद्धाओं को निर्वासित कर दिया और कुछ अन्य प्रभावशाली लोगों को (अपमानजनक) पाताल लोक भेज दिया। निम्नलिखित गाथा में वर्णन किया गया है कि किस प्रकार आर्य (ब्राह्मण) आज भी इन साहसी, वीर क्षत्रियों को सता रहे हैं और उन पर अत्याचार कर रहे हैं।)

(संपूर्ण गाथागीत को पाँच भागों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक भाग में आठ छंद हैं। इस अनुवाद में पहले डेढ़ भाग को छोड़ दिया गया है - अनुवादक)

भारत के राजा और क्षत्रप भोग-विलास में लिप्त थे और विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इस बात का पता विदेशी आर्यों (ब्राह्मणों) को चल गया।

लुटेरों ने एक सुनियोजित साजिश रची, अपनी सेनाओं को संगठित किया, ब्रह्मा को अपना सेनापति नियुक्त किया और लूटपाट, आगजनी और व्यापक विनाश का एक बड़ा उपद्रव शुरू कर दिया।

आर्यों ने कुछ स्थानीय सरदारों को पराजित किया, कुछ को कैद किया और असंख्य लोगों को गुलाम बना लिया। उन्होंने अपने अधीन किए गए सभी लोगों को घृणित रूप से 'शूद्र' नाम दिया।

खंड (9)

पुस्तिका से - "ब्राह्मणों की धूर्तता"।

ब्राह्मण का स्वभाव और उसके कर्तव्य। किस प्रकार वह अपनी लोभ और लालच को संतुष्ट करने के लिए कपटपूर्ण प्रथाओं में लिप्त रहता है।

ढलान

भारत में ब्राह्मण परिवार में जन्म लेना सबसे बड़ा सौभाग्य है। वह इतना कंजूस होता है कि कम वस्त्र पहनता है और इसलिए हमेशा अर्ध-वस्त्रधारी शूद्र जैसा दिखता है।

उसने शूद्र को 'पवित्र जनेऊ' पहनाकर उसे यह कहकर भ्रमित कर दिया कि वह 'द्विज' (अर्थात ब्राह्मण) बन गया है। परन्तु वास्तव में शूद्र की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था।

ब्राह्मणों का स्वाभाविक (सहज) स्वभाव शरारती और झगड़ालू होता है, और यह इतना गहरा होता है कि इसे कभी भी जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता।

वह अपने औपचारिक स्नान, प्रार्थनाओं के अनुष्ठानिक पाठ, अपनी विशिष्ट टोपी और माथे पर सिंदूर (या चंदन के लेप) के गोलाकार निशान (अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन करने के लिए) के बारे में बहुत ही विशिष्ट है, और फिर भी वह सस्ती वेश्याओं का मनोरंजन करता है।

रेशमी धोती और ऊनी शॉल ओढ़ने से वह अछूत बन जाता है और अपने शूद्रों को छूने से भी घृणा करता है। ऐसे में उसे 'पवित्र' कैसे कहा जा सकता है?

ब्राह्मणों ने शूद्रों को वेदों का पाठ सुनने से भी मना किया, लेकिन (वे इसे अपवित्रता नहीं मानते थे) और उन्होंने अंग्रेजों को संस्कृत और स्थानीय भाषाएँ सहर्ष सिखाईं।

वे स्वयं को पृथ्वी-देवता घोषित करते हैं और शूद्रों को अपने चरणों में प्रणाम करने के लिए विवश करते हैं, लेकिन (यह कितनी विडंबना है कि) वे सस्ती वेश्याओं के चरणों में प्रणाम करने को अपनी गरिमा के नीचे नहीं समझते।

वे शूद्र को दूर से भोजन परोसते हैं (ताकि उसके अपवित्र संपर्क से बचा जा सके) लेकिन शाक्त संप्रदाय के अनुष्ठान के रूप में शराब पीने की आवश्यकता का बहाना बनाकर शराब पीने में संकोच नहीं करते (जिसने अपने अनुयायियों को मांस खाने, शराब पीने और स्वतंत्र रूप से यौन संबंध बनाने की अनुमति दी थी)।

वे शूद्रों को अपने (ब्राह्मणों के) पैर धोने के लिए मजबूर करते हैं और उन्हें उस (गंदे) पानी को 'पवित्र जल' (किसी पवित्र स्थान से) बताकर पीने के लिए विवश करते हैं, जबकि वे मुस्लिम (विदेशी) रखेलों को चूमते और सहलाते हैं।

शिक्षा से वंचित होने के कारण शूद्र ने अपनी सारी गरिमा खो दी (नीच स्थिति में आ गया), और उसे ब्राह्मणों के जूतों की देखभाल करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

हे शूद्रों, अब उन ब्राह्मणों के जूतों को मत फेंको जिन्हें तुम इतने वर्षों से अपने हाथों में लिए घूम रहे हो, बल्कि अब उन्हीं जूतों से अपने उत्पीड़कों को दंडित करो और सत्य की लगन से खोज करो, ज्योति कहते हैं।

धार्मिक त्योहारों के अवसर पर ब्राह्मण पुजारी किस प्रकार अज्ञानी शूद्रों को लूटता और धोखा देता है।

ढलान

ब्राह्मण ने शूद्र को केवल खेत मजदूर (अपने खेत का गुलाम) बना रखा है। वह उसे इस स्थिति से मुक्त नहीं करता और कर के रूप में उससे वार्षिक अंशदान वसूलता है।

भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष (जब पूर्वजों की सामूहिक पुण्यतिथियां मनाई जाती हैं) में ब्राह्मण पुजारी की चालों पर सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए, क्योंकि वह (इस पुण्यतिथि के कारण) किसान के बेटे को जीवन भर परेशान करता है।

वह मकर संक्रांत (14 जनवरी, जब सूर्य मकर रेखा पार करता है) और नव वर्ष (चैत्र माह का पहला दिन, गुड़ी पड़वा) के त्योहारों के अवसर पर अज्ञानी शूद्रों का शोषण करता है, और दुष्ट ब्राह्मण पुजारी अत्यंत निर्लज्जतापूर्ण व्यवहार करता है। (उसने सारी मर्यादा त्याग

दी है!)

वह तीर्थ स्थलों पर सारस की तरह घात लगाकर बैठा रहता है (पानी में मछली पर झपटने के लिए तैयार) और वहां मौजूद धर्मनिष्ठ, अज्ञानी तीर्थयात्रियों से बड़ी चालाकी से पैसे वसूलता है।

अपने खाली समय में (जब ग्रहों की प्रतिकूल स्थिति के कारण कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं किए जाते हैं), ब्राह्मण पुजारी गांव में गली-गली घूमकर भीख मांगता है।

वह आकाश में स्थित तारों और ग्रहों के अशुभ प्रभाव का एक भय (एक डरावनी चीज) पैदा करता है (अज्ञानी शूद्रों को डराने के लिए) और लालच और लोभ से एक भयावह परिदृश्य (एक नाटकीय स्थिति) उत्पन्न करता है।

वह शूद्र किसान को बुरी तरह पीटता है और लात मारता है, उससे भीख मांगता है, और अंत में उसे पूरी तरह बर्बाद कर देता है।

"अब स्थिति के हाथ से निकल जाने (निराशाजनक हो जाने) तक प्रतीक्षा मत करो, बल्कि हंगामा खड़ा करो और जोशी (ब्राह्मण पुजारी) का असली चेहरा सबके सामने उजागर करो, हे शूद्र किसान!"

"(अब समय आ गया है) कि पाखंडी ढोंगी (पुजारी) के साथ उसके अतीत के कुकर्मों के लिए सभी पुराने हिसाब-किताब बिना किसी गलती के निपटा दिए जाएं।"

"हे ब्राह्मण पुरोहितों! ज्योतिबा के स्पष्ट और सीधे शब्दों को सुनकर, अब से (अज्ञानी) शूद्रों का शोषण और उन्हें लूटने की अपनी कुटिल प्रथा को त्याग दो।"

प्रथम संस्करण का समर्पण

स्मृति के लिए
का
Rao Bahadur Ramchandra Balkrishnaji (Jayakar)
President of Paramhansa Sabha,
दिवंगत सहायक सीमा शुल्क आयुक्त
और
न्यायिक अधिकारी,

इस छोटी सी किताब पर लिखा हुआ है,
अत्यंत सम्मान के प्रतीक के रूप में
और एक सच्ची गवाही
स्नेह
द्वारा
लेखक।

पूना
जून 1869

Ballad on Chhatrapati Shivaji

परिचय

शिवाजी महाराज पर रचित इस गाथा को आठ भागों में विभाजित किया गया है। विषयांतर से बचने और नीरसता से बचने के लिए, सभी आठ भागों को एक ही शैली में नहीं लिखा गया है (कुछ विविधता का प्रयोग किया गया है)। इस गाथा की मूल सामग्री प्राचीन मुस्लिम अभिलेखों और कैप्टन जेम्स ग्रांट-डफ, मुर्रे आदि जैसे अंग्रेजी इतिहासकारों के ऐतिहासिक ग्रंथों से ली गई है। इस गाथा की रचना का मेरा उद्देश्य कुनबी (किसान), माली (बागवान), महार और मांग - ये सभी क्षत्रिय हैं - जिन्हें आर्य ब्राह्मणों द्वारा समाज के सबसे निचले और नीच स्तर पर धकेल दिया गया था, उनके लिए उपयोगी और मार्गदर्शक साबित होना है। इसीलिए मैंने आडंबरपूर्ण संस्कृत शब्दों के प्रयोग से पूरी तरह परहेज किया है। हालांकि, जहां अत्यंत आवश्यक था (और जहां अपरिहार्य था), वहां मैंने अपने अर्थ को व्यक्त करने के लिए सरल संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है। मैंने सरल शब्दों का प्रयोग करने में बहुत सावधानी बरती है, जो सरल और सीधे-सादे माली और कुनबी लोगों को आसानी से समझ आ सकें, और मैंने ऐसे छंद और पद्य का प्रयोग किया है जो उन सरल लोगों को पसंद आएँ। ब्रह्मांड के दिव्य सृष्टिकर्ता ही ब्रह्मांड के नियंत्रक और नियमक हैं, और उन्होंने हम सभी को बुद्धि प्रदान की है। हम शूद्रों (भारत में) पर दया करते हुए, उन्होंने अपनी दिव्य कृपा से भारत में ब्रिटिश शासन (राज) स्थापित किया - अपने प्रिय अंग्रेज़ लोगों (संतानों) को - ताकि हम क्षत्रियों को ब्राह्मणों के कुटिल चंगुल से मुक्त कर सकें। और इन दयालु अंग्रेज़ लोगों ने हम जैसे शोषित और अज्ञानी लोगों को सच्चा ज्ञान (बुनियादी ज्ञान) प्रदान किया। इस सौभाग्यपूर्ण विकास ने हमारे मन में ब्राह्मणों की धूर्त और कपटपूर्ण साजिशों के इस चंगुल से खुद को मुक्त करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न की है। मैं ब्राह्मणों की गहरी दुष्टता का एक उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत करना चाहूँगा।

विभिन्न राष्ट्रों के विभिन्न लोगों के इतिहास का ध्यानपूर्वक अध्ययन और विश्लेषण करने पर एक विचित्र तथ्य सामने आता है: भारत के ब्राह्मणों ने स्वयं को उच्च स्थान पर रखा है

(वे स्वयं को श्रेष्ठ जाति मानते हैं), और वे प्रभु, कुनबी (किसान), माली (बागवान), मांग और महार से घोर घृणा करते हैं, मानो वे उनके कट्टर शत्रु हों, और उन्हें 'कानूनविहीन नीच जाति' कहकर निंदा करते हैं। मैं भारत में इन लोगों के प्रति उनकी घृणा और अहंकारपूर्ण रवैये के वास्तविक कारण पर विचार करता था। इस जटिल प्रश्न पर अन्य भाषाओं में लिखे ग्रंथों का ध्यानपूर्वक अध्ययन और ब्राह्मणों द्वारा इन लोगों के साथ किए गए घृणित व्यवहार से यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है: ब्राह्मणों का भारत से कोई संबंध नहीं था, अर्थात् वे भारत के परदेसी थे। लेकिन लूट और लोभ की अतृप्त प्यास से प्रेरित होकर, उन्होंने भारत के मूल निवासियों के साथ कई युद्ध किए और इन लड़ाइयों में पकड़े गए लोगों को कैद कर लिया। आर्य ब्राह्मणों के सेनापति, ब्रह्मराज ने उन्हें दास बना दिया। उन्हें हमेशा के लिए ब्राह्मणों की गुलामी में रखने के लिए, उसी ब्रह्मा ने सत्ता के नशे में चूर होकर, पूरी तरह से अन्यायपूर्ण और क्रूर कानून बनाए और उन्हें अलग-अलग पुस्तकों में संकलित किया, साथ ही साथ दुर्भाग्यपूर्ण क्षत्रियों के विरुद्ध अनेक अन्याय और अनुचित प्रावधानों को कायम रखा। मेरा अनुमान है कि ब्रह्मा ने उन 'पवित्र' पुस्तकों को "भद" (अनुचित भेद) कहना बंद कर दिया होगा और उपयुक्त समय पर उन्हें वेद नाम दिया होगा। ब्रह्मराज की मृत्यु के बाद, शेष क्षत्रियों ने परशुराम के अधीन किए गए क्षत्रियों को उनकी गुलामी से मुक्त कराने के लिए परशुराम के साथ इक्कीस भयंकर युद्ध लड़े, और इसीलिए वे 'महा-आरिस' (कट्टर शत्रु) कहलाए। बाद में यह नाम विकृत होकर 'महार' हो गया।

परशुराम ने जिन युद्धों में परशुराम का सामना साहसी क्षत्रिय महा-अरियों से हुआ, उनमें उनके अनेक अनुयायी (सैनिक) शहीद हो गए। इसका (विनाशकारी) परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण विधवाओं की संख्या पुरुष ब्राह्मणों की तुलना में कहीं अधिक हो गई। परशुराम को समझ नहीं आ रहा था कि उनके साथ क्या किया जाए। (उनकी जीवनशैली को व्यवस्थित करना और उन्हें सामाजिक ढांचे में समाहित करना परशुराम के लिए एक कठिन समस्या थी)। जब परशुराम ने ब्राह्मण विधवाओं के पुनर्विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया, तब कुछ हद तक व्यवस्था और सामाजिक सद्भाव स्थापित हुआ। इसके बाद आर्य ब्राह्मणों (परशुराम के नेतृत्व में) ने भारत के मूल निवासियों, अर्थात् दासों (और गुलामों) और अन्य महा-अरी क्षत्रिय योद्धाओं से घृणा करना शुरू कर दिया। दुष्ट ब्राह्मणों ने पहले वर्ग के लोगों को वेदों का अध्ययन करने से रोक दिया और दूसरे वर्ग के लोगों को अछूतों की तरह माना। ये नियम सचमुच बहुत ही क्रूर थे! बाद में, मनु जैसे क्रूर और निर्दयी राजाओं ने, असहाय पीड़ितों से बदला लेने के लिए, अपने बुद्धिभ्रष्ट दिमाग से ब्राह्मणों के हितों की पूर्ति के लिए अन्यायपूर्ण नियम, कानून और वर्जनाएँ गढ़ीं और उन्हें बड़ी कुशलता से अपने जाली ग्रंथों में शामिल कर लिया। फिर उन्होंने एक और मनगढ़ंत कहानी गढ़ी कि ये ग्रंथ 'ईश्वरीय संदेश' (स्वयं भगवान द्वारा रचित) हैं और आर्य ब्राह्मणों के अधीन हो चुके साहसी क्षत्रियों पर इन्हें थोप दिया। उन्होंने धार्मिकता के झूठे आवरण में गुलाम क्षत्रियों के मन में इस मनगढ़ंत कहानी को बिठाने का प्रयास किया। उनकी दुष्टता यहीं समाप्त नहीं हुई। उन्होंने आगे विषैली घृणा के प्रतीक 'शेष' की एक काल्पनिक कथा गढ़ी, उसे एक शक्तिशाली सर्प के रूप में समुद्र के जल पर एक मुलायम और आरामदायक पलंग का रूप दिया और सच्चिदानंद नारायण को इस सर्पनुमा पलंग पर लेटा दिया। उन्होंने नारायण की नाभि से

उगने वाले कमल के पौधे की एक और काल्पनिक कथा गढ़ी, उस पर चार मुख वाले ब्रह्मादेव, ईश्वर के वास्तविक पुत्र की प्रतिमा स्थापित की और यह कहानी फैलाई कि ईश्वर के इस पुत्र ने सभी भेदों - अर्थात् वेदों - की रचना (संकलन) की है और उन सभी को ईश्वर के पुत्र के आदेशों (जैसा कि वेदों में निहित है) का पूर्णतया पालन करने का आदेश दिया है। इस प्रकार की कई काल्पनिक कहानियों (मनगढ़ंत कहानियों) के माध्यम से... धूर्त ब्राह्मणों ने निडर क्षत्रियों (जो अब गुलाम बन चुके थे) के भोले-भाले मन में यह घिनौना दावा भरकर उन्हें गुमराह करने की कोशिश की कि ये नकली ग्रंथ ईश्वरीय संदेश हैं। इस प्रकार, उन्होंने धर्म की इस घिनौनी, दुष्ट और अपवित्र नकल के शक्तिशाली हथियार का इस्तेमाल करके बहादुर क्षत्रियों को अपमानित और अमानवीय बना दिया। यह सब सर्वविदित है। बल्कि, वे एक कदम और आगे बढ़ गए। शालीनता और मर्यादा के सभी नियमों को ताक पर रखकर, ब्राह्मण लेखकों ने बेशर्मी से अपने ग्रंथों में यह मनगढ़ंत कहानी दर्ज की कि शूद्र ब्रह्मदेव के चरणों से उत्पन्न हुए थे। ब्रह्मदेव के चरणों को शूद्र पुत्रों को जन्म देने की चमत्कारिक क्षमता प्रदान करना, मैं साहसपूर्वक कह सकता हूँ, वास्तव में एक अविश्वसनीय मनगढ़ंत कहानी है! यह सर्वविदित तथ्य है कि बच्चे को जन्म देना स्त्री का विशेषाधिकार है। पवित्र ब्रह्मदेव के चरणों से बच्चे के जन्म की संभावना की कल्पना करना, सृष्टि के नियमों के विरुद्ध है। प्रकृति के नियम। पैरों का सामान्य कार्य चलना है, और हमसे यह मानने को कहा जाता है कि शूद्र पुत्र ब्रह्मदेव के चरणों से उत्पन्न हुआ था। हमसे यह भी मानने को कहा जाता है कि ब्राह्मण ब्रह्मदेव के मुख से उत्पन्न हुआ था। यदि हम इस (हास्यास्पद) परिकल्पना (सिद्धांत) को स्वीकार कर लें, तो ब्रह्मदेव के भोले-भाले शिष्यों (ब्राह्मणों) को भी उतनी ही हास्यास्पद परिकल्पना (सिद्धांत) को स्वीकार करना पड़ेगा कि ब्रह्मदेव का मुख एक बिल्कुल नया कार्य कर रहा था—अर्थात स्त्री के गर्भाशय का कार्य—जहाँ सामान्यतः गर्भ धारण होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि ऐसे तर्क उतने ही हास्यास्पद हैं जितने कि छोटी लड़कियाँ अपने घरों के आस-पास खेलती हैं। (यह उतना ही हास्यास्पद और अशोभनीय है जितना कि स्त्रियों द्वारा गुप्त रूप से किया जाने वाला पापपूर्ण आचरण)। ऐसा ही हो! यदि हम ब्राह्मणों की इस हास्यास्पद परिकल्पना की गहन जाँच करें, तो इसका कपटपूर्ण स्वरूप उजागर हो जाएगा। अतः उस व्यर्थ प्रयास में पड़ने के बजाय, हम उनकी गलत धारणाओं को क्षमा करना बेहतर समझते हैं और शेष अपने विवेकशील पाठकों पर छोड़ देते हैं। यदि हमारे विनम्र प्रयास विवेकशील और प्रबुद्ध पाठकों द्वारा सराहे जाते हैं, तो हमें उत्साह मिलेगा और हम बड़ी प्रसन्नता से शिवाजी महाराज पर लिखे गए इस गीत जैसे और भी गीत रचेंगे और प्रकाशित करेंगे। ये गीत महासुभा जैसे महान क्षत्रिय योद्धाओं के बारे में होंगे, जो हमारे प्राचीन इतिहास में विख्यात थे, लेकिन दुर्भाग्यवश धूर्त ब्राह्मणों द्वारा उन्हें पाताल लोक में भेज दिया गया।

शिवाजी महाराज पर यह गीत रचते समय, मेरे बचपन के मित्र श्री (विनयकराव बापजी) भंडारकर ने, कुछ लोगों के विपरीत जिन्होंने मेरे प्रयासों को विफल करने की कोशिश की, मुझे लगातार प्रोत्साहित किया और मेरा हौसला बढ़ाया ताकि मैं इस कार्य को सार्थक और प्रशंसनीय तरीके से पूरा कर सकूं। मैं उनका अत्यंत आभारी हूं। मैं पूज्य बाबा पद्मांजी और गंगाधर शास्त्री का भी आभारी हूं जिन्होंने इस गीत को पूर्णतया रूप दिया।

A Ballad about Chhatrapati Shivaji Raje Bhonsle

(गाथागीत के अंतिम दो खंडों का अनुवाद यहाँ किया गया है)।

हे (शिवाजी) महाराज, कृपया हमसे बात कीजिए! आपने हमसे बात करना क्यों बंद कर दिया है? आपने महाराष्ट्र के साधारण किसानों को अपना साथी बनाया। आपने (आधे) नंगे लोगों को सैनिक बनाया। आपने सूर्य की चिलचिलाती गर्मी सहन की और मूसलाधार बारिश से नहीं डरे। आप पहाड़ों पर (और गुफाओं में) ऊँचे-नीचे विचरण करते रहे और इस प्रकार मुसलमानों को अपने अधीन कर लिया। कभी-कभी आपने (शत्रु के) क्षेत्र को लूटा, लेकिन अपने देशवासियों का पोषण और प्रोत्साहन करने का पूरा ध्यान रखा। आपने असाधारण बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन किया और इस प्रकार देश के सभी लोगों पर अपना जादू चलाया। यद्यपि राज्य का खजाना भरा हुआ था, फिर भी उन्होंने (शिवाजी) अपने खर्च में अत्यंत मितव्ययी रवैया अपनाया (उन्होंने राज्य के वित्त का प्रबंधन बहुत विवेकपूर्ण ढंग से किया)। उन्होंने सैनिकों को राज्य के खजाने में एक निश्चित हिस्सा दिया, क्योंकि उन्होंने कभी भी धन का लालच नहीं किया (वे कभी लोभी नहीं थे)। वे शाश्वत थे। वह सतर्क थे और उन्होंने आलस्य और सुस्ती को अपने जीवन से दूर कर दिया था। वे अपनी घुड़सवार सेनाओं का हमेशा ध्यान रखते थे, चाहे वे छोटी हों या बड़ी। वे सभी क्षत्रियों में सर्वोपरि थे और कोई भी उनकी बराबरी नहीं कर सकता था। वे अपने आप में अद्वितीय थे। वे शासन कला की सूक्ष्म युक्तियों और रणनीतियों में बेजोड़ थे और आम लोगों को अपने पक्ष में शामिल होने के लिए प्रभावित और राजी करते थे। वे विपत्तियों में निडर और निर्भीक थे और बड़ी कुशलता से सभी विपत्तियों से बच निकलते थे। वे गुप्त और चोरी-छिपे रणनीति अपनाकर शत्रु से किले और अन्य क्षेत्र छीन लेते थे। वे पहले देशद्रोहियों से लड़ते और उन्हें परास्त करते थे, और फिर शत्रु के साथ भीषण युद्ध में संलग्न होते थे। यहां तक कि जब वे कई युद्धों में घिरे होते थे, तब भी वे वे अपनी प्रजा के प्रति सदा सजग रहते थे और किसानों के प्रिय थे। किसानों के कल्याण के प्रति वे कभी उदासीन नहीं रहे और हमेशा आम जनता के हित में नए कानून बनाते रहे। वे अपनी प्रजा में सबसे गरीब व्यक्ति का भी ध्यान रखते थे और सबकी भलाई का ख्याल रखते थे। किसी की भी उपेक्षा नहीं की जाती थी। उनका कद छोटा था और वे शारीरिक बल के बजाय सूझबूझ और चतुर रणनीतियों पर अधिक भरोसा करते थे। उनका रूप-रंग मनमोहक और आकर्षक था, मानो वे रत्नजड़ित गुणों और अनुग्रह से अंकित हों।

वे इतने सरल स्वभाव के थे कि कभी दूसरों के साथ अनुचित व्यवहार नहीं करते थे, और स्वभाव से सीधे-सादे और भोले-भाले थे। उनकी बातचीत मधुर और सुखद होती थी। वे विचारशील और तर्कसंगत स्वभाव के थे, और इस प्रकार दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करते थे। वे अपनी प्रजा के कल्याण के लिए निरंतर प्रयासरत रहते थे, और अपने कई रिश्तेदारों को अपने सेवकों और वफादार अनुयायियों के रूप में रखते थे। कभी-कभी वे उन लोगों से नाराज़ हो जाते थे जिन्हें उन्होंने बहुत लाड़-प्यार दिया था और जो उन्हें बहुत प्रिय

थे। अंग्रेजी में लिखे ऐतिहासिक अभिलेखों को पढ़कर, मैं छत्रपति शिवाजी को क्षत्रिय वंश का ऐसा वंशज मानता हूँ, जिन्होंने ब्रह्मा के अन्याय को पूरी तरह से उजागर किया (उनका उपहास उड़ाया, उन्हें पराजित किया)। ज्योतिराव फुले ने शूद्र पुत्र (शिवाजी महाराज) की प्रशंसा की है, जो पेशवाओं के वास्तविक और प्रमुख अधिपति थे। मैं शिवाजी महाराज की गाथा का पाठ करता हूँ, जो जीजाबाई के प्रिय पुत्र थे और मुसलमानों के लिए एक अभिशाप सिद्ध हुए। मैं छत्रपति शिवाजी भोंसले की गाथा का पाठ करता हूँ, जो मेहनतकश किसानों के लिए गौरव थे।

बड़ौदा राज्य के श्रीमंत महाराज सयाजीराव गायकवाड़ को एक पत्र

कृपया दया कीजिए, दया कीजिए (उन गरीब और दबे-कुचले शूद्रों पर), जिन्हें भाटों (ब्राह्मणों) ने बहुत सताया है (गरीबी में धकेल दिया है)।

आदरणीय आर्य ब्राह्मणों ने शूद्रों को शिक्षा प्राप्त करने से रोक दिया, जो उनकी दयनीय स्थिति का मूल कारण था। इस प्रकार उन्होंने शूद्रों को मैदान के पशुओं के सबसे निचले स्तर तक गिरा दिया।

भाट लोग मनोरंजन के विभिन्न साधनों पर दिल खोलकर पैसा खर्च करते हैं, लेकिन साथ ही शूद्र महिलाओं के कल्याण की उपेक्षा करते हैं। यहां तक कि (पुरुषों जैसे) लोग भी गांवों में लोक नाटकों और मनोरंजन कार्यक्रमों में नाचने वाले लड़कों की भूमिका निभाते हैं, जिससे पुरुषों की मर्दानगी पर कलंक लगता है।

वे (बेशर्मी से) पेशेवर रखैलियों के संगीत कार्यक्रमों में (उनके घरों में) भाग लेते हैं और इस प्रकार नैतिकता के बुनियादी सिद्धांतों को धूमिल करते हैं। पाप में लिप्त होकर वे (सम्मानित घरों की) सदाचारी महिलाओं पर दोषारोपण करने का दुस्साहस करते हैं। (पेशवा और उनके ब्राह्मण सहयोगी) शूद्रों के पसीने से अर्जित राज्य के राजस्व को (निकम्मे) ब्राह्मण भिक्षुओं को भव्य भोज देने में लुटाते हैं (जैसा कि पेशवा के 'रमण' में वर्णित है), जबकि अपने खेतों में मेहनत करने वाले शूद्र किसानों को सूखी रोटी और मिर्च पाउडर से ही काम चलाना पड़ता है।

राज्य के खजाने से आलसी ब्राह्मणों को दी जाने वाली वार्षिक पेंशन पर भारी मात्रा में धन खर्च होता है, जिससे राज्य का खजाना खाली हो जाता है। (ध्यान देने योग्य बात यह है कि) मेहनती किसान अपनी मेहनत की कमाई से इस खजाने को भरते हैं।

किसानों के बैल इतनी मेहनत करते हैं कि (कभी-कभी) वे कठोर कृषि कार्यों में लगे रहने के दौरान मर जाते हैं—जैसे बुवाई, फसलों की देखभाल या खेत में हल चलाना—जबकि (बेशर्म, आलसी) भाट (ब्राह्मण, पुरोहित वर्ग) अज्ञानी शूद्रों से (धार्मिक आधार पर) गायों का दान लेते हैं। शोषित किसान भला इन शोषकों को अपना रिश्तेदार कैसे मान सकते हैं?

(पेशवा के शासनकाल में, आर्य भाट (आलसी पुरोहित वर्ग) प्रतिदिन भव्य भोजों का आनंद लेते थे, जबकि मेहनती किसान जीवन भर सूखी रोटी के अभाव में भूखे रहते थे।)

शूद्र लोग भाट पुरोहितों को हाथ जोड़कर (विनम्रतापूर्वक) नकद दान देते हैं, लेकिन राज्य सरकार कभी भी मेहनतकश किसानों को (उनके भूमि-मूल्यांकन और अन्य करों के भुगतान में) कोई सार्वजनिक (सामूहिक) छूट नहीं देती है।

भट पुजारियों और उनके उतने ही अयोग्य बच्चों (जो नाचने वाले लड़कों से बेहतर नहीं हैं) को सरकार द्वारा (औपचारिक) शॉल के जोड़े और अन्य आर्थिक उपहार दिए जाते हैं। तो फिर सरकार आदर्श किसानों को (उनके क्षेत्र में कौशल के लिए) उचित पुरस्कार (उपहार) क्यों नहीं देती?

सरकार द्वारा शराब की बिक्री पर उत्पाद शुल्क लगाने की नीति व्यसनों को बढ़ावा देती है। इस उत्पाद शुल्क के जनता के नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों के प्रति सरकार की उदासीनता देखकर मैं अत्यंत आश्चर्यचकित हूँ।

निरक्षर शूद्र और अति-शूद्र सरकार के इन उपायों के निहितार्थों को समझने में असमर्थ हैं। मैं आपसे (सयाजीराव महाराज से) विनम्र निवेदन करता हूँ कि आप इन दस लाख मूक प्रजा के पालक पिता (अभिभावक के स्थान पर) की जिम्मेदारी ग्रहण करें।

महाराज ने अपने दीवान (प्रधानमंत्री) के समक्ष मेहनती (और लंबे समय से पीड़ित) प्रजा की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। मैंने इन छंदों को लिखने का साहस किया है (और महाराज का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का आग्रह किया है) क्योंकि महाराज दलित प्रजा के प्रति दया के सागर के समान प्रसिद्ध हैं।

सब जानते हैं कि अवसर एक ही बार दस्तक देता है। (एक बार खो जाने पर अवसर दोबारा नहीं मिलता), और (मानसून की) बाढ़ घाटियों और पहाड़ों में हमेशा नहीं आती।

युद्धक्षेत्र में लड़ रहे प्यासे सैनिक ही वहाँ के जीवनदायी जल के वास्तविक मूल्य को समझते हैं। वाराणसी (काशी) का निवासी संभवतः माँ गंगा की पवित्रता को तिरस्कारपूर्वक देखता है। (परिचितता से तिरस्कार उत्पन्न होता है)

जोतिराव बड़ौदा के सायजीराव महाराज से पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें मिले इस

सुनहरे अवसर का वे भरपूर लाभ उठाएं। (ऐसा अवसर शायद दोबारा न मिले।)

बड़ौदा के दीवान श्री लक्ष्मण जगन्नाथ को पत्र

सबसे पहले मैं श्री लक्ष्मण (जगन्नाथ) को संबोधित करते हुए सीधे मुद्दे पर आना चाहता हूँ।

भाट (ब्राह्मण) इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि श्रीमंत सयाजीराव महाराज शूद्रों के हित के लिए हार्दिक रूप से प्रतिबद्ध हैं। आइए, हम अपनी उचित रणनीतियों (नीतियों) से इन धूर्तों (भाटों) की नापाक योजनाओं को विफल करें।

शूद्रों के पूर्वज तलवार और ढाल चलाने वाले वीर योद्धा थे (उन्होंने युद्ध के मैदान में असाधारण वीरता का परिचय दिया था)। आइए, अमृतमय सत्यों की सहायता से उन्हें उनकी प्राचीन महिमा में पुनर्जीवित करें।

आइए हम दिन-रात मेहनत करें और अपनी मातृभूमि की सर्वांगीण प्रगति और समृद्धि के लिए सपने देखें। आइए हम भाटों (ब्राह्मणों) और मांगों के बीच जीवंत एकता को बढ़ावा देने का भरसक प्रयास करें और उन्हें सामूहिक रूप से भोजन करने के लिए प्रोत्साहित करें। (हम फिर से गुजरात जाएंगे और वहां (ज्ञानवर्धक) व्याख्यान देंगे। ज्योतिराव बड़ौदा के दीवान को उनके इस प्रयास में हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं।)

पराजितों (दासों) का गीत

(1)

दुष्ट आर्य ब्राह्मणों ने इस भूमि के मूल निवासियों पर विजय प्राप्त की और उन्हें गुलाम बनाकर उन पर कलंक लगाया। तुम कभी किसी के अधीन नहीं थे। वेदों पर निडरता से प्रश्न उठाओ और उन्हें सार्वजनिक रूप से उजागर करो। दस्यु (तथाकथित गुलाम) वास्तव में बहादुर, पवित्र हृदय वाले और ईमानदार थे...
हे दस्युओं, तुम इस भूमि के मूल स्वामी थे। आर्यों द्वारा तुम पर किए गए इस दयनीय अत्याचार के बारे में संतुलित दृष्टिकोण अपनाओ। तुम्हारी इस दुर्दशा से मानवता क्रोधित है और कोई तुम्हारा सम्मान नहीं करता। दासता या गुलामी सबसे अपमानजनक है और तुम्हारे बच्चों का भविष्य अत्यंत अंधकारमय है। हे दस्युओं! दूरदृष्टि अपनाओ और

आधुनिक, तर्कसंगत विचारों को अपनाओ। ज्योति का यही सार है।

(2)

आर्यों ने मांगों पर बहुत अत्याचार किया, और कभी-कभी उन्हें अपनी इमारतों की नींव में ही जिंदा दफना दिया। जो लोग इन अत्याचारों से बच गए, उन्हें आर्यों की भव्य दावतों से बचे हुए टुकड़ों के लिए भीख मांगनी पड़ती है, क्योंकि उनके अन्यायपूर्ण शासन में उनका कोई भविष्य उज्ज्वल नहीं है। हे शूद्रों! तुममें सत्य के प्रति न तो कोई योग्यता है और न ही कोई सम्मान, और न ही तुम्हें अपनी गरिमा या प्रतिष्ठा की परवाह है। इस प्रकार आर्यों ने तुम्हें शक्तिहीन कर दिया है। सारी शक्ति और प्रतिष्ठा से वंचित होकर, तुम अत्यंत दुर्भाग्यवश बुरे दिनों में आ गए हो। अपनी दयनीय स्थिति पर ध्यानपूर्वक विचार करो... आपने उनकी सेवा में अथक परिश्रम किया, अपना सब कुछ (मन, शरीर और आत्मा) न्योछावर कर दिया, और आपने सदा उनकी रक्षा की, फिर भी वे आप पर जरा भी दया नहीं करते। पृथ्वीदेव (ब्राह्मण) आपसे प्रसन्न हुए और इसीलिए उन्होंने आपको यातनाओं और अपमानों से दंडित करके 'मुक्त' किया। आप ब्राह्मणों के चरणों में गिरकर इतने दास कैसे हो गए? यदि आप मनुस्मृति और ब्राह्मणों के अन्य (नकली) ग्रंथों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे, तो आप उनमें छिपे घोर खतरे को जान पाएंगे। आपने स्वयं अनुभव किया है कि ब्राह्मण तभी प्रसन्न होते हैं जब आप उन्हें उदारतापूर्वक दान देते हैं। हे शूद्र! ब्राह्मण को इतनी धृष्टता है कि वह आपकी पत्नी को आपके सामने दासी या दासी (घरेलू नौकरानी) की तरह अपमानित करता है। मैं वेदों के श्लोक-दर-श्लोक उद्धृत करके तुम्हें सिद्ध करूँगा, हे शूद्रों, कि तुम एक समय इस भूमि पर क्षत्रिय थे। इस सत्य को ध्यानपूर्वक ग्रहण करो।

(3)

आर्य ब्राह्मणों ने बलि जैसे वीर राजाओं का अपमान किया है, जो आपके पूजनीय स्वामी और पूर्वज थे, और आपको यातनाओं का शिकार बनाया है। अब आप भूख से मर रहे हैं, और इस प्रकार आप पूरी दुनिया के सामने दयनीय स्थिति में हैं। आप ब्राह्मणों के पैर धोकर और उस अपवित्र जल को 'पवित्र जल' समझकर पीकर अपना अपमान कर रहे हैं। एक सच्चे वीर राष्ट्र के लिए अपमान की यह पराकाष्ठा है...
शिक्षा की उपेक्षा करने पर तुम्हारा पतन हो जाएगा और यह तुम्हारे गौरवशाली वंश पर कलंक लगेगा। आर्य अपने यश और विजय का झंडा फहराते हैं और अपने छोटे से दायरे में मौजमस्ती करते हैं। तुम प्रख्यात माता-पिता की प्रख्यात संतान हो, परन्तु आर्यों के पिंजरे में बंद पक्षियों के समान हो। तुम इतने निर्गुण हो कि संसार तुम्हारी प्रशंसा नहीं कर सकता, न ही कवि सार्वजनिक रूप से तुम्हारी महिमा का गुणगान कर सकते हैं। तुम निर्धन हो, कमर पर ब्लेज़र पहनते हो और दासता के प्रतीक के रूप में तुम्हारे गले में सफेद सूती पट्टा लटका है। घर में तुम्हारी नियति किसान जैसी दरिद्रता है और तुम्हारी स्त्रियाँ फटे-पुराने वस्त्र पहनने को विवश हैं। तुम्हें बार-बार और लगातार समझाया जाता है, फिर भी

तुम अपने पैरों में जकड़ी बेड़ियों का अपमान नहीं समझते। निश्चय ही तुम सूअर के समान हो। आप इसे गंगा के पवित्र जल में धोकर साफ कर सकते हैं, लेकिन जैसे ही आप इसे बाहर निकालेंगे, यह तुरंत कीचड़ में लोटने लगेगा...

(4)

मैं आपको शूद्रों के हित और कल्याण के बारे में बार-बार एक सच्ची कहानी सुनाऊंगा। मैंने अक्सर (और स्वयं भी) ज्ञान (शिक्षा) के अभाव में अनेक शूद्रों की दयनीय स्थिति के बारे में सुना है। सिंधिया, होल्कर और भोसले जैसे प्रख्यात क्षत्रिय राजा भी आर्यों की गहरी साजिश की भयावहता को नहीं समझ पाए।

अंग्रेज़ विद्वानों ने वेदों के सागर का मंथन किया और उनमें छिपे गूढ़ रहस्य को हम सबके सामने प्रकट किया। उन्होंने वेदों के भ्रामक दर्शन को उजागर किया, शाश्वत सत्य का प्रतिपादन किया और इस प्रकार धर्म का राज्य स्थापित किया। ब्राह्मण व्याकुल हो गए और इसीलिए उनमें से कुछ ने ईसाई धर्म अपना लिया, जबकि वे सत्य का प्रचार करने का ढोंग करते रहे। धूर्त ब्राह्मण अक्सर विभिन्न स्थानों पर जन संगठन स्थापित करते थे और लोगों में एकता को बढ़ावा देने का झूठा वादा करके सदस्यों को भर्ती करने का प्रयास करते थे। शूद्रों को आर्यों के धूर्त स्वभाव को पहचानना चाहिए और शाश्वत सत्य की खोज करनी चाहिए। आर्यों द्वारा अपनाए जा रहे इन छल-कपटों का परिणाम विनाशकारी होगा, इसलिए शूद्रों को इस बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। पूज्य गौतम बुद्ध ने ब्राह्मणों को उन्हीं के युद्धक्षेत्र में परास्त किया और वे विश्व भर में प्रसिद्ध हुए। इसलिए ब्राह्मण अपने हृदय में बुद्ध के प्रति गुप्त द्वेष पालते हैं, छाती पीटते हैं और अपनी हार पर जोर-जोर से रोते-पीटते हैं। शूद्र (विद्रोह और ज्ञान की) प्रज्वलित ज्वालाओं को एक साथ नहीं जोड़ पाते और ब्रह्मांड में (हर जगह) ब्राह्मणों के विरुद्ध एकजुट नहीं हो पाते। कृपया ज्योतिराव फुले के स्पष्ट और सीधे शब्दों को याद रखें, जिनमें (भविष्यवाणी का) गहरा अर्थ छिपा है।

जोती कहते हैं, सृष्टिकर्ता का एकमात्र धर्म सत्य है। व्यर्थ ज्ञान का क्या लाभ?

इस संसार में सत्य के सिवा कोई और धर्म नहीं है। ज्योति ने कहा, इस रहस्य को सभी लोगों को बता दो।

जो अनेक भाषाओं का ज्ञाता हो (भाषाविद् हो), सद्गुणों से परिपूर्ण हो और सत्य का वचन बोलता हो, उसे न तो औपचारिक रूप से धर्म की दीक्षा की आवश्यकता होती है और न ही उस समय के शासक के संरक्षण की। आयु उसके लिए कोई बाधा या अवरोध नहीं है। वह सभी मनुष्यों को अपना भाई-बहन मानता है। वह विधर्मी मत धारण करके अहंकारी नहीं होता। सत्य ही उसका प्रमुख धर्म है और यह उसके दैनिक कार्यों में निष्ठापूर्वक परिलक्षित होता है, ज्योति कहते हैं।

सच्ची मानवतावादी धर्म सत्यपरायण आचरण में निहित है। ब्राह्मण इस मंत्र को नहीं जानते। धन की देवी लक्ष्मी परिश्रमी शूद्रों के चरणों की मालिश करती हैं। वे उन्हें कभी भी तुच्छ किसान या मजदूर समझकर तिरस्कार नहीं करतीं। यदि आप सभी को प्रसन्न रखें, तो समस्त बुराई संसार से दूर हो जाती है। ज्योति कहते हैं कि एक परिश्रमी व्यक्ति गरीबों का सच्चा मित्र होता है, और आपको उसकी समृद्धि के लिए प्रयास करना चाहिए।

अछूतों की “अपोलोजिया” से

(महात्मा फुले कल्पना करते हैं कि महारानी विक्टोरिया एक शाही यात्रा पर भारत आई हैं। अपनी शाही यात्रा के दौरान, उन्हें एक छोटे से गाँव का दौरा करना था। वे गाँव के बाहर स्थित अछूतों के एक दयनीय इलाके में जाती हैं। महारानी और अछूतों (जिनका प्रतिनिधित्व एक मांग और एक महार कर रहे हैं) के बीच एक दुभाषिए की सहायता से कुछ बातचीत होती है। हम नीचे इस बातचीत के अंतिम पाँच पृष्ठों का अनुवाद दे रहे हैं - जिसे ज्योतिबा ने "अछूतों का बचाव" शीर्षक दिया है।)

तब महार या मांग रानी के समक्ष श्रद्धापूर्वक झुकता है और अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

महार या मांग - भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत को लगभग एक शताब्दी बीत चुकी है। आरंभ में, ब्रिटिश प्रशासकों को उत्तरी भारत और मद्रास प्रेसीडेंसी में अछूतों द्वारा झेली जा रही कठिनाइयों और अभावों का कुछ अंदाजा हुआ। लेकिन वे इससे प्रभावित नहीं हुए। फिर भी, इन ब्रिटिश अधिकारियों ने उत्तरी भारत और मद्रास प्रेसीडेंसी में हमारे अछूत भाइयों की दयनीय स्थिति पर निजी और सार्वजनिक रूप से अपना दुख (गहरी चिंता या फिक्र) व्यक्त किया। जब इन बहादुर, दयालु ब्रिटिश प्रशासकों और अधिकारियों (प्रशासन और कूटनीति में निपुण) ने मध्य भारत में अपनी पैठ बनाई, तो उन्हें हमारे (हिंदू) धर्म के पाखंडी स्वरूप और हमारी दयनीय स्थिति का स्पष्ट ज्ञान हुआ। इनमें से कुछ ब्रिटिश प्रशासकों को अपने आधिकारिक कार्यों के दौरान व्यक्तिगत रूप से पता चला कि ब्राह्मणों द्वारा किए जा रहे धार्मिक कट्टरता और अत्याचार के कारण अछूत किस दयनीय स्थिति में पहुँच गए थे। उन्होंने इन तथ्यों को अपने आधिकारिक दस्तावेजों में सावधानीपूर्वक दर्ज किया। कुछ इतिहासकारों ने अपने विचार निजी मित्रों से साझा किए, जबकि कुछ (अंग्रेज़) इतिहासकारों ने इन दुखद तथ्यों को अपने इतिहास की पुस्तकों में दर्ज किया। उन्होंने इन पुस्तकों में यह बात दर्ज की है कि हमारे समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था के कारण अछूतों को काफ़ी नुकसान उठाना पड़ा (और उन पर अत्याचार हुआ)। इसी प्रकार, इस जाति व्यवस्था से अत्यधिक पीड़ित शूद्रों ने मन ही मन उच्च जाति के लोगों (ब्राह्मणों) के पतन की कामना की और उन्हें पराजित करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा की। उच्च जाति के लोग (ब्राह्मण), अपनी जातिगत श्रेष्ठता पर गर्व करते हुए अनैतिक और

विद्रोही हो गए। जब किसी देश के नागरिक इस प्रकार की गहरी घृणा और द्वेष से विमुख हो जाते हैं, तो वह राष्ट्र (भारत) विदेशियों के हमलों और अधीनता के लिए एक आकर्षक लक्ष्य बन जाता है। अंग्रेज़ इतिहासकारों ने इस संबंध में अपने विचार इतिहास की पुस्तकों में दर्ज किए हैं।

दयालु ब्रिटिश सरकार ने हमारे देश में शांति स्थापित करने के लिए अनेक कदम और उपाय उठाए हैं। सरकार को यह अवश्य ही भलीभांति समझ आ गया होगा कि यदि अन्यायपूर्ण और अत्याचारी धर्म द्वारा उत्पन्न अराजकता को दैनिक जीवन, नैतिकता, राजनीति और व्यापार में अनिश्चित काल तक अनियंत्रित रहने दिया गया, तो सरकार यहाँ अधिक समय तक नहीं टिक पाएगी (जल्द ही समाप्त हो जाएगी) (सरकार की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी)। उच्च जाति के लोग (ब्राह्मण) रूठ जाएंगे और अपनी उच्च जाति और श्रेष्ठता की गलत धारणाओं पर गर्व करते हुए दूसरों से अलग-थलग रहेंगे। शूद्र उच्च जाति के लोगों (ब्राह्मणों) को पराजित करने और उन पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए हमारी सहायता मांग सकते हैं। यदि वे ब्राह्मणों को पराजित करने में सफल हो जाते हैं, तो वे हमारी (ब्रिटिश) बहुमूल्य सहायता से अपनी विशाल संख्या के बल पर मुसलमानों को पराजित करने का सपना देखेंगे। अगला तार्किक कदम यह होगा कि वे हमें (अंग्रेजों को) भारत से भगा देंगे। यह भी संभव है कि उच्च जाति के ब्राह्मण, जो शूद्रों को दबाने में हमारी सहायता से नाराज थे, किसी अन्य विदेशी शक्ति (जैसे फ्रांसीसी, डच या पुर्तगाली आदि) से सहायता मांगें और हमें और शूद्रों को युद्ध के मैदान में परास्त कर भारत के शासक के रूप में स्थापित होने में सफल हो जाएं। (अंग्रेज) सरकार ने कई परियोजनाएं शुरू की हैं जिनसे प्रजा का कल्याण होगा और साथ ही हमारे अपने हितों की भी पूर्ति होगी। सर्वज्ञ और सर्वन्यायी सर्वशक्तिमान की कृपा से हम अब तक अपने प्रयासों में सफल रहे हैं, हमारा शासन (सरकार) एक मजबूत नींव पर स्थापित है, और हमें पूरा विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से आने वाले वर्षों में भी यह सुरक्षित और स्थिर रहेगा।

सबसे पहले, ब्रिटिश सरकार ने भारतीय कृषि को सुधारने और आधुनिक बनाने के महत्वपूर्ण कार्य पर ध्यान दिया और इसी उद्देश्य से यहाँ अंग्रेजी (लोहे के) हल का प्रयोग शुरू करने का विचार किया। लेकिन (हमें खेद है कि) सरकार की यह सराहनीय परियोजना सफल नहीं हुई। यहाँ के सभी किसान शूद्र हैं और वे सहज रूप से मानते हैं कि लकड़ी के हल के स्थान पर लोहे के हल का प्रयोग करना अपने पूर्वजों के आदेशों का उल्लंघन करना, अपनी पुरानी (पवित्र) प्रथाओं को त्यागना और एक बड़ा पाप करना होगा। यदि कृषि में भौतिकी पर आधारित कोई सुधार (वैज्ञानिक सुधार) लागू किए जाते, तो (अज्ञानी) किसान उन्हें स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। उनकी कृषि पद्धति पुरानी और रूढ़िवादी थी (किसी भी परिवर्तन की अनुमति नहीं देती थी)। यदि एक वर्ष भीषण सूखे के कारण फसलें खराब हो जातीं, तो उनके पास अगले वर्ष तक फसल चलाने के साधन नहीं होते थे। हमारी दयालु और न्यायप्रिय ब्रिटिश सरकार ने यहाँ के शूद्र किसानों की दयनीय स्थिति को भलीभांति समझा और उनकी पीड़ा को कम करने के लिए कई त्वरित कदम उठाए। लेकिन (क्या हम यह कह सकते हैं कि) सरकार द्वारा उठाए गए इन सभी अच्छे उपायों का

हमारी (आर्थिक) स्थिति से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि बहुत कम महार और मांग किसान ही खेती करते हैं (क्योंकि उनके पास खेती करने के लिए कोई भूमि ही नहीं है)। इसलिए हम इस विषय को यहीं छोड़ देते हैं और केवल उन्हीं सुधारों पर विचार करते हैं जो हमारी जीवनशैली (हमारी आर्थिक स्थिति) के लिए प्रासंगिक हैं। ब्रिटिश सरकार द्वारा हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए शुरू किए गए कई सुधारों में से दो सुधार हमारे लिए सबसे अधिक प्रासंगिक हैं। वे हैं:

(1) सार्वजनिक उपयोगिता कार्य (वे कार्य जो आम जनता के लिए लाभकारी हों)
(2) अधिक उदार शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास।

सार्वजनिक निर्माण कार्य हमारे लिए विशेष रूप से लाभकारी नहीं हैं। हम अति-शूद्रों को ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और कुनबियों (कृषकों) के साथ सार्वजनिक सड़कों पर स्वतंत्र रूप से चलने की अनुमति है। मेरा यह तात्पर्य नहीं है कि हमें इस सुविधा से कोई लाभ नहीं मिला है। मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि ये सार्वजनिक निर्माण कार्य या तो सरकारी विभागों (पीडब्लूडी) द्वारा या उन ठेकेदारों द्वारा किए जाते हैं जिन्होंने सरकार के लिए काम पूरा करने का ठेका लिया है। ऐसे मामलों में, हम (अति-शूद्र, अछूत) इन कार्यों से उतना लाभ नहीं उठा पाते जितना समाज के अन्य वर्गों को मिलता है। इस स्थिति का कारण निम्नलिखित हो सकता है। (मैं यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा) कि सरकार ने कहीं भी ऐसा कोई कानून नहीं बनाया है कि इन सार्वजनिक निर्माण कार्यों में रोजगार केवल जनसंख्या के एक निश्चित वर्ग को ही दिया जाए और अन्य सभी को इससे वंचित रखा जाए। हमारा धर्म ही हमारे मार्ग में मुख्य बाधा है। ब्राह्मण क्लर्क (फोरमैन, सुपरवाइजर) को माली (माली) और कुनबी (कृषक) जाति के मजदूरों से हमारी (अछूत) (अति-शूद्र) जाति के मजदूरों की तुलना में रिश्वत देकर अधिक लाभ मिलने की संभावना रहती है। यह स्पष्ट होने के कारण, इन कारखानों में ब्राह्मण फोरमैन (क्लर्क) जानबूझकर हमें (अति-शूद्रों को) रोजगार से बाहर रखता है और हमेशा अन्य जातियों (जैसे माली और कुनबी आदि) के मजदूरों को ही काम पर रखता है। हमारे मामले में एक और बाधा भी है। घृणित जाति व्यवस्था (जिसमें हमें अछूत माना जाता है) के कारण मांग और महार जाति के लोगों को माली और कुनबी जाति के लोगों के साथ काम करने की अनुमति नहीं है। सार्वजनिक उपयोगिता के सभी कार्यों में हमें ये बाधाएं एक समान रूप से नहीं झेलनी पड़तीं। कुछ मामलों में बाधाएं अधिक होती हैं, जबकि कुछ अन्य मामलों में व्यावहारिक रूप से कोई बाधा नहीं होती। इन कार्यों से लाभ प्राप्त करने की हमारी संभावनाएँ विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न अनुपात में होती हैं। ब्राह्मणों के प्रभुत्व वाले विभागों में हमें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इसलिए हमें वहाँ कोई लाभ नहीं मिलता। जहाँ ब्राह्मणों का प्रभुत्व बहुत अधिक नहीं है, वहाँ हमारी स्थिति अनुकूल है (हमारी परेशानियाँ उतनी गंभीर नहीं हैं)।

पहले हमारे देश में सभी स्थानों पर नगरपालिका की सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। हम (अति-शूद्र) नगरपालिकाओं से जुड़े अनेक छोटे-मोटे काम करने के लिए विवश थे, जैसा

कि आज भी है। लेकिन हमें यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अब हमारी स्थिति पहले से कहीं बेहतर है, हमारी मजदूरी नियमित है और हमें नियमित रूप से मिलती है (जिससे हमें बहुत राहत मिली है)। पहले स्थिति बहुत खराब थी। हमें मजदूरी के मामले में सरकार से कोई सहायता नहीं मिलती थी। यहां तक कि हमें अपने काम के लिए मजदूरी (पारिश्रमिक) मांगने के लिए भी लोगों (ब्राह्मणों और शूद्रों) की दया पर निर्भर रहना पड़ता था। हमें यह स्वीकार करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आज हम पहले की तुलना में थोड़े कम अज्ञानी हैं, और अब हम अपने अधिकारों और स्थिति के प्रति काफी जागरूक हो रहे हैं, और हमारे साथ किए जाने वाले छल-कपट को समझने में सक्षम हैं। समाज के तीन उच्च वर्गों (वर्गों) के लोग – जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और हमारे ही वर्ग के किसान (या खेती करने वाले) – नगरपालिका में हमारे द्वारा किए जाने वाले छोटे-मोटे कामों (जैसे सफाई आदि) से घृणा करते हैं और उन्हें नीचा समझते हैं। आप कल्पना कीजिए कि अगर हम अपने इस गंदे काम से घृणा करने लगें और कुछ समय के लिए इसका बहिष्कार कर दें, तो इन्हीं लोगों का क्या हाल होगा। ये तथाकथित उच्च जाति के लोग अपने द्वारा फैलाई गई गंदगी और अस्वच्छता में मर जाएंगे, या फिर उन्हें हमारे जैसे महार और मांग (अति-शूद्र) की तरह छोटे-मोटे काम (सफाई आदि) करने पड़ेंगे। उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचेगा। उन्हें सड़कों पर झाड़ू लगाना होगा, गंदी नालियों को साफ करना होगा और अपने जूते खुद बनाने होंगे (जैसे मोची करते हैं)। उन्हें झाड़ू बनानी पड़ेगी। हमारे समाज के तथाकथित उच्च जाति के लोगों को ब्रिटिश सरकार के न्यायपूर्ण शासन के तहत अभी-अभी हमने जिस भयावह स्थिति का संकेत दिया है, उसकी कल्पना करनी चाहिए (उसकी संभावना से कांप उठना चाहिए)। लेकिन एक बात निश्चित है। अपने मन में ऐसी स्थिति के भय से या ऐसी स्थिति में अपनी लाचारी के कारण, ग्रामीण इलाकों के तथाकथित उच्च जाति के लोग अपना पूर्व अहंकार त्याग रहे हैं (विनम्र हो रहे हैं)। हम चाहते हैं कि उनके जाति-आधारित अहंकार का बुलबुला हमेशा के लिए फूट जाए, जिससे हम सभी को काफी लाभ (सुख) प्राप्त हो।

ब्रिटिश सरकार ने (हमारे शहरों और गांवों में भी) अनेक विद्यालय इस उद्देश्य से खोले थे कि विद्यार्थी बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त करें, लोग अपने जीवन की स्थिति को समझें, अपने साथी मनुष्यों के साथ उचित व्यवहार करना सीखें और इस संसार में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझें। सरकार ने इन विद्यालयों को खोलने के पीछे एक नेक इच्छा रखी थी कि यहाँ की सभी जातियों और समुदायों के विद्यार्थी इन विद्यालयों में पढ़ें और ज्ञान प्राप्त करें, सच्चे धर्म का अर्थ और महत्व समझें और इस प्रकार प्रबुद्ध, विद्वान और मुक्त होकर जाति व्यवस्था और उसके दुष्परिणामों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्रेरित हों। परन्तु सरकार का यह आशय सिद्ध नहीं हुआ। हालांकि ब्रिटिश सरकार को पूरा विश्वास था कि हमारा रूढ़िवादी धर्म (हिंदू धर्म) अनेक दोषों से ग्रसित है, फिर भी उन्होंने उन दोषों को दूर करने के लिए तुरंत और कड़े कदम उठाने का साहस नहीं किया, क्योंकि वे जानते थे कि धार्मिक मामलों में उनका हस्तक्षेप उनके शासन की सुरक्षा को खतरे में डाल देगा और प्रजा की शांति और सद्भाव को भंग कर देगा। हालांकि, (अंग्रेज़) मिशनरियों ने अपना धर्म प्रचार कार्य (यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रसार) शुरू कर दिया। हालांकि वे वास्तव में

हिंदुओं के बीच मौजूद जातिगत भेदभाव और भेद-विभेदों को तोड़ना चाहते थे, वे यहाँ के मूल निवासियों को अपने धर्म (ईसाई धर्म) को अपनाने के लिए भी प्रेरित कर रहे थे। यही कारण है कि जातिगत भेदभाव को तोड़ने के उनके प्रयास भी निष्फल रहे। ब्रिटिश सरकार और अंग्रेज़ मिशनरियों के संयुक्त प्रयासों से प्रजा के बच्चों के लिए शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि हुई और इस प्रकार उनकी शैक्षिक प्रगति हुई। सरकार को अपने (शिक्षा) अधिकारियों की रिपोर्टों से पता चला कि भारत के सभी हिस्सों में स्कूलों में पढ़ने वाले ब्राह्मण विद्यार्थियों की संख्या अन्य (शूद्र और अति-शूद्र) बच्चों की तुलना में कहीं अधिक है। स्कूलों में पढ़ने वाले शूद्र विद्यार्थियों की संख्या वास्तव में बहुत कम है! यह दुखद तथ्य है कि शूद्र और अति-शूद्र बच्चे इन स्कूलों में बिल्कुल भी नहीं जाते, क्योंकि उनके पास उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए साधन (आर्थिक क्षमता) नहीं हैं। यह सच है कि सरकार ने शूद्र और अति-शूद्र विद्यार्थियों की उक्त स्कूलों में उपस्थिति को सुगम बनाने के लिए कुछ (उपयोगी) कदम उठाए हैं, जैसे महारा और मांग के बच्चों को पूरी तरह से मुफ्त शिक्षा और शूद्र बच्चों को आवेदन जमा करने पर 5 प्रतिशत मुफ्त छात्रवृत्ति। शिक्षा निरीक्षकों की रिपोर्टों की सावधानीपूर्वक जांच से यह दुखद तथ्य सामने आता है कि इन स्कूलों में पढ़ने वाले शूद्र और अति-शूद्र बच्चों की संख्या संतोषजनक नहीं है।

अब हमें यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि महार और मांग (अति-शूद्र) के बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में क्यों नहीं जाते, जबकि सरकार उन्हें मुफ्त शिक्षा प्रदान करती है। जब अति-शूद्र बच्चे लगभग 5 या 6 वर्ष के होते हैं, तो हम (उनके माता-पिता) उन्हें कुछ घरेलू काम करने के लिए मजबूर करते हैं। हम उन्हें आराम करने देने या स्कूल भेजने की स्थिति में नहीं हैं, क्योंकि हम उन्हें ठीक से भोजन भी नहीं दे पाते। कारण बिल्कुल स्पष्ट है। इसे समझाने की आवश्यकता नहीं है। हम इस गलत धारणा में जी रहे हैं कि यदि हम अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे, तो वे अपनी जन्मजात मजबूती खो देंगे और इसलिए पहले की तरह अपने पारंपरिक काम (या घरेलू काम) नहीं कर पाएंगे। यहां तक कि अगर वे शिक्षित हो भी जाते हैं, तो यह डर रहता है कि उन्हें उचित पुरस्कार नहीं मिलेगा (ब्राह्मणों और शूद्रों के बच्चों के विपरीत)। यह सब इस बात का प्रमाण है कि हमारे पास अपने बच्चों को शिक्षा का विलासितापूर्ण खर्च उठाने की आर्थिक क्षमता नहीं है। स्कूल जाने से उन्हें शायद सिर्फ इतना ही फायदा हो कि उनका (किताबी) ज्ञान बढ़ जाए, लेकिन हमने यह सोच लिया है कि हमारे बच्चे शारीरिक रूप से कमजोर और नाजुक हो जाते हैं (और तंदुरुस्त नहीं रहते), और इसलिए वे कठिन शारीरिक श्रम करने में असमर्थ हो जाते हैं (जो कि आमतौर पर हमारे बच्चों का हाल होता है)। ऐसे में हम उन्हें स्कूल भेजने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं?

यह एक सच्चाई है कि सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक न्यूनतम (शैक्षणिक) योग्यता प्राप्त करने के लिए हमारे पास आर्थिक क्षमता नहीं है। यदि हम इस प्रकार सरकारी नौकरी पाने के योग्य नहीं हैं, तो सरकार हमें नौकरी कैसे दे सकती है, और हम उन्हें कैसे प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं? ऐसे में, सरकारी नौकरी न देने के लिए ब्रिटिश सरकार को दोष देना उचित नहीं होगा। हम यहां कृतज्ञतापूर्वक यह स्वीकार करते हैं कि

ब्रिटिश सरकार ने ही हमें पेशवा शासन के अत्याचार से मुक्ति दिलाई है, और आज हमारी स्थिति मराठों (मराठा राजकुमारों आदि) के शासनकाल की तुलना में कहीं बेहतर है। हमें अपनी वर्तमान स्थिति का कुछ बुनियादी ज्ञान है, और इसीलिए हम आपके समक्ष (महामहिम) उपस्थित होने और अत्यंत विनम्रतापूर्वक अपनी दयनीय स्थिति का वर्णन करने का साहस जुटा पाए हैं। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि हमें सरकार से कुछ सहायता तो मिलती है, लेकिन वह हमारी दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए पर्याप्त नहीं है। यदि हमारे साथी (ब्राह्मण), जिन्होंने अपने कपटपूर्ण और छलपूर्ण कृत्यों से हमें इस दयनीय स्थिति में पहुँचाया है, और हमारे अन्य साथी (शूद्र), जिन्होंने (ब्राह्मणों के हाथों) थोड़ा कम कष्ट सहा है, परन्तु जो अब हमारी सहायता करने की स्थिति में हैं, दोनों मिलकर हमारी सहायता करें और हमें इस गहरे कुएँ (दुर्भाग्य के दलदल) से बाहर निकालें, तो हम इस दलदल से निकलकर स्वतंत्र रूप से (स्वतंत्र मनुष्यों की तरह) विचरण कर सकेंगे। धार्मिक कट्टरता ने हमें पूरी तरह से बर्बाद कर दिया है। इस खेदजनक कट्टरता के कारण हमारे साथी हमारी सहायता करने को तैयार नहीं हैं। बुनियादी शिष्टाचार यह कहता है कि साथी अपने ही राष्ट्र के भाइयों की सहायता करें। वे (ब्राह्मण) न केवल किसी भी प्रकार से हमारी सहायता नहीं करते, बल्कि हमारी वर्तमान दुर्दशा और दुविधा के लिए वे ही मुख्यतः जिम्मेदार हैं।

साहूकारों के साथ हमारे लेन-देन पर विचार करना उपयोगी होगा। यदि हम उनसे बारह आना का एक जोन उधार लेते हैं, तो हमें एक वचनपत्र पर हस्ताक्षर करना होगा कि हमने प्रति रुपया चार आना की ब्याज दर पर मासिक ऋण लिया है। यदि हम स्वयं का लाभदायक व्यवसाय चलाने की आशा में उस धूर्त साहूकार से इतनी अधिक और अमानवीय ब्याज दर पर ऋण लेते हैं, तो आप कल्पना ही कर सकते हैं कि हम किस निराशाजनक दुविधा में फंस सकते हैं।

मान लीजिए कि हम अपने बच्चों को स्कूल भेजने को तैयार हैं, तो उनकी स्कूली शिक्षा कठिनाइयों से भरी है (बिल्कुल भी सुगम नहीं है)। उनके सहपाठी और क्लास टीचर मिलकर उन्हें परेशान करते हैं। क्लास टीचर उन्हें (अति-शूद्र होने के कारण) सरकारी (शिक्षा विभाग) आदेशों के तहत कक्षा में अन्य छात्रों से अलग बिठाते हैं और दूर से ही उन्हें बड़े ही उदासीन भाव से शिक्षा देते हैं। क्या आप इसे अपने देशवासियों के प्रति भाईचारे का उदाहरण कह सकते हैं? इससे स्पष्ट है कि इन प्रतिकूल परिस्थितियों में हमारे बच्चे स्कूल में कोई सार्थक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, जिससे हमें और हमारे बच्चों दोनों को भारी हानि होती है। (हम ही इस सौदे में नुकसान में हैं)।

कम पढ़े-लिखे छात्र भी सरकारी नौकरी पा सकते हैं। लेकिन वे स्थायी रूप से वहाँ काम करने की उम्मीद नहीं कर सकते, क्योंकि उनके सभी वरिष्ठ अधिकारी (ब्राह्मण अधिकारी) महारों और मांगों से घृणा करते हैं, उन्हें तुच्छ समझते हैं और उन पर अत्याचार करते हैं।

वर्तमान समय में हम (अति-शूद्र) अपनी गरीबी और व्यापार के क्षेत्र में अनुभवहीनता के

कारण आसानी से व्यापार नहीं कर सकते। हम व्यापार और वाणिज्य से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं क्योंकि धार्मिक वर्जनाओं के कारण हमें व्यापारियों के साथ स्वतंत्र रूप से मेलजोल करने की अनुमति नहीं है।

हमारे पारंपरिक छोटे-मोटे कामों को दूसरे लोग तुच्छ समझते हैं और हमें किसी और व्यवसाय में लगने से मना किया जाता है। धर्म हमारे दैनिक जीवन में और साथ ही नए व्यवसाय (व्यापार आदि) के चुनाव में भी एक बड़ी बाधा है। यदि हम किसी जानकार व्यापारी या कारीगर से शिल्प कौशल की बुनियादी बातें सिखाने का विनम्र निवेदन करें, तो हमें यह कहकर रूखेपन से टाल दिया जाता है - "तुम्हारे जैसे अति-शूद्र (महा या मांग) को कौन सिखाएगा? तुम्हें अपने पारंपरिक व्यवसाय (छोटे-मोटे काम) से ही अपनी आजीविका चलानी चाहिए।" रोजगार या व्यापार के नए रास्ते तलाशने के हमारे प्रयासों का यही दयनीय हाल है। रोजगार के संबंध में सरकार द्वारा बनाए गए प्रावधानों के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है। हम यह भी नहीं समझ पाते कि स्थानीय (मराठी) समाचार पत्रों में छपने वाले लेखों में ब्रिटिश सरकार की प्रशंसा की जाती है या उसकी आलोचना की जाती है। क्या हम अपने देश में सरकारी प्रशासन के संचालन के तरीके से पूरी तरह अवगत हैं? बिलकुल नहीं। हमने बस इतना सुना है कि एक संसद (विधानसभा या परिषद) है जो हमारे देश के प्रशासन की समग्र जिम्मेदारी संभालती है। हमें इस बात की बिल्कुल भी जानकारी नहीं है कि जनता के प्रतिनिधि (विधायक) इस निकाय के लिए कैसे चुने जाते हैं और उन्हें क्या कर्तव्य निभाने होते हैं। हमें यह भी नहीं पता कि क्या ये विधायक (सांसद या संसद में जनता के प्रतिनिधि) हमारे सामने आने वाली समस्याओं पर पूरी तरह से चर्चा करते हैं और उचित विचार-विमर्श के बाद कोई निर्णय लेते हैं। हम (अति-शूद्र) राजनीतिक समस्याओं और राजनीतिक प्रक्रिया से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं और प्रशासन में हमारी कोई भूमिका नहीं है। हम अपने सामने आने वाली प्रमुख राजनीतिक समस्याओं से भी अनजान हैं। हर कोई इन (समस्याओं) के बारे में सतही तौर पर बात करता है और हम केवल सुनी-सुनाई बातों के आधार पर अपनी राय बनाते हैं...

(पांडुलिपि यहीं समाप्त होती है - संपादक)

जोतिराव गोविंदराव फुले द्वारा रचित 'द कल्टीवेटर्स व्हिप-कॉर्ड' की प्रस्तावना (6 अप्रैल 1883)

शिक्षा के अभाव में बुद्धि नष्ट हो गई; बुद्धि के अभाव में नैतिकता नष्ट हो गई; नैतिकता के अभाव में गतिशीलता नष्ट हो गई; गतिशीलता के अभाव में धन नष्ट हो गया; धन के अभाव में शूद्र पतित (मनोबलहीन) हो गए – शिक्षा के अभाव (अशिक्षित होने) ने ही इन सभी विपत्तियों को जन्म दिया है!

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य यह है कि वर्तमान समय (1883) में शूद्र किसानों के पूर्ण पतन (मनोबल में गिरावट) के लिए कई धार्मिक और राजनीतिक कारण जिम्मेदार हैं। इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य इनमें से कुछ कारणों पर चर्चा करना है। चूंकि लगभग सभी सरकारी विभागों पर ब्राह्मण नौकरशाहों का वर्चस्व है, और साथ ही पाखंडी और दमनकारी धार्मिक प्रथाओं के कारण, शूद्र किसानों का शोषण भाट पुरोहित वर्ग द्वारा किया जाता है, और चूंकि अधिकांश अंग्रेज सरकारी अधिकारी आलसी और विलासी जीवन शैली में लिप्त हैं, इसलिए शूद्र किसानों का शोषण ब्राह्मण नौकरशाहों (अधिकारियों) द्वारा और भी अधिक किया जाता है। मेरी इच्छा है कि यदि शूद्र किसान इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें (और इस पर विचार करें), तो वे उपर्युक्त वर्चस्व और शोषण से स्वयं को बचाने में सक्षम होंगे। इसीलिए मैंने जानबूझकर इस पुस्तक का शीर्षक 'कृषक की चाबुक' रखा है।

प्रिय पाठकों! 'किसान' शब्द में तीन श्रेणियां शामिल हैं: (1) शुद्ध किसान, अर्थात् कुनबी, (2) माली (बागवानी करने वाला) और (3) चरवाहा। इस त्रिस्तरीय वर्गीकरण के पीछे ठोस कारण हैं। जो लोग अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से शुष्क खेती पर निर्भर थे, उन्हें कुलवाड़ी या कुनबी कहा जाता था; जो लोग शुष्क खेती के साथ-साथ सिंचित भूमि पर भी खेती करते थे, उन्हें माली (बागवानी करने वाला) कहा जाने लगा; और जो लोग ऊपर वर्णित दो गतिविधियों के अलावा भेड़-बकरियों के झुंड पालते थे, उन्हें चरवाहा कहा जाने लगा।[1] ये तीन अलग-अलग श्रेणियां उनकी आजीविका के तरीकों की प्रकृति के कारण अस्तित्व में आई होंगी। लेकिन आज हम पाते हैं कि कुनबी, बागवानों और चरवाहों को तीन अलग-अलग जातियों के रूप में देखा जाता है। इन तीनों जातियों के लोग आपस में भोजन करते हैं, लेकिन वे आपस में विवाह नहीं करते।

उन्हें पेंशन मिलती थी – जिसका वे अपने सभी मित्रों के सामने दिखावा करते थे। इस प्रकार उन्होंने कुटिल तरीकों से धन कमाकर संपत्ति जमा कर ली। लेकिन जब वे गुजर जाते हैं, तो उनके लापरवाह, सुख-सुविधाओं में लिप्त बच्चे, जिन्हें शिक्षा में कोई रुचि नहीं होती, संपत्ति को बर्बाद कर देते हैं, कंगाल हो जाते हैं और अपने पिता का नाम लेकर रोजी-रोटी के लिए घर-घर भीख मांगने को मजबूर हो जाते हैं।

इन 'भव्य पुत्रों' में से कुछ के पूर्वजों ने युद्ध के मैदानों में वीर योद्धाओं के रूप में या राजनीति में चतुर राजनेताओं और कूटनीतिज्ञों के रूप में अपनी पहचान बनाई थी और सरकार से जागीरें और इनाम प्राप्त किए थे। सिंधिया और होल्कर जैसे कुछ परिवारों ने तो सचमुच राजाओं की तरह अपना धन समेटा था। लेकिन इन हस्तियों के वर्तमान वंशज अज्ञानी (और अनपढ़) होने के कारण अपनी जागीरें या इनाम (अपनी पैतृक संपत्ति) गिरवी रखने या बेचने की हद तक मजबूर हैं। वे इतने निर्धन और कर्ज में डूबे हुए हैं कि उन्हें यह भी नहीं पता कि उन्हें अगला भोजन कहाँ से मिलेगा। (वे भूखे मर रहे हैं)। इनमें से अधिकांश जागीरदारों और इनामदारों (सामंती प्रमुखों) को शायद ही इस बात का अंदाजा है कि उनके पूर्वजों ने युद्धों में किस प्रकार अपनी पहचान बनाई या (अपने पद प्राप्त करने

के लिए) उन्हें किन असाधारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा। बिना किसी व्यक्तिगत योग्यता के (कठिन परिश्रम से नहीं) विरासत में मिली जागीरों और संपत्तियों के कारण, अशिक्षित होने के कारण वे अनेक बुराइयों में लिप्त थे और दिन-रात ऐसे ही बदनाम और दुराचारी साथियों की संगति में समय बिताते थे। उनमें से बहुत कम ही ऐसे थे जो ऋण के जाल में न फंसे हों और जिनकी जागीरें गिरवी न रखी हों। कुछ भारतीय राजकुमार ऋण के जाल में भले ही न फंसे हों, लेकिन उनके सेवक, चापलूस, ब्राह्मण सलाहकार और जागीर प्रबंधक इतने धूर्त, चालाक, हिसाब-किताब रखने वाले और धूर्ततापूर्ण हैं कि वे हर संभव प्रयास करते हैं कि उनके स्वामी (भारतीय राजकुमार) उदार शिक्षा या उच्च नैतिक गुणों के सभ्य प्रभाव से वंचित रह जाएं।

अपनी खोखली और सारहीन शान-शौकत की सच्चाई से अनभिज्ञ होकर, वे भ्रम में यह मान लेते हैं कि उनके पूर्वजों ने अपने राज्य (रियासतें) केवल उनके आराम और विलासिता के लिए ही प्राप्त किए थे। धर्म की झूठी धारणाओं से अंधे होकर और अपनी रियासतों (जागीरों) का स्वतंत्र रूप से प्रशासन करने के लिए आवश्यक कौशल और क्षमता का अभाव होने के कारण, वे घोर भाग्यवादी बन जाते हैं और अपने चालाक ब्राह्मण प्रशासकों (जागीर-प्रबंधकों) के इशारों पर चलते हैं। वे अपना दिन ब्राह्मणों को गायें दान करने में और रातें संतानोत्पत्ति में व्यतीत करते हैं। ये रियासती सरदार निश्चित रूप से ऐसे कदम और उपाय उठाने में सक्षम थे जिनसे उनकी शूद्र जाति की प्रजा को लाभ होता, लेकिन यह कितना दुखद है कि ऐसा लाभकारी विचार उनके मन में कभी नहीं आया। और जब तक ये राजकुमार ब्राह्मणों को अपने लिए साक्षात देवता मानने के इस विनाशकारी भ्रम से मुक्त नहीं हो जाते, तब तक उन्हें इस भ्रम से मुक्त करने के नेक इरादे से किए गए प्रयास और समझाना-बुझाना बिल्कुल व्यर्थ होगा। और मान लीजिए, अगर कोई ब्राह्मणों और उनके पुराने धर्म के हानिकारक प्रभाव को चुनौती देने का इच्छुक भी हो, तो बचपन से ही ब्राह्मणों द्वारा सिखाए गए गलत विचारों और विनाशकारी सिद्धांतों की पकड़ इतनी मजबूत थी कि राजकुमारों में शायद ही कभी अपने मन को खोलकर इस कपटपूर्ण और दुष्ट धर्म की कपटपूर्ण प्रकृति पर विचार करने की इच्छा या क्षमता रही हो। निजी सलाहकार और प्रशासक उन असाधारण रियासती सरदारों को पसंद नहीं करते थे (निश्चित रूप से उनका विरोध करते थे) जो निष्पक्ष, उद्यमी और अपने पूर्वजों की कुलीनता और गौरव के प्रति उचित गर्व से ओतप्रोत थे। यदि कोई रियासती सरदार मुझे वास्तविक स्थिति समझाने की अनुमति देने का साहस करे, तो मैं सहर्ष (अपनी क्षमता के अनुसार) उनके समक्ष अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करूँगा।

ऐसा ही हो! यदि हम विश्व के विभिन्न देशों के इतिहास का गहन अध्ययन और विश्लेषण करें, तो हमें एक स्पष्ट और ज्वलंत तथ्य दिखाई देगा कि भारत के अज्ञानी और अंधविश्वासी शूद्र किसानों की स्थिति अन्य देशों के किसानों की तुलना में कहीं अधिक दयनीय है। बल्कि, उनकी स्थिति इतनी खराब है कि यह मैदान के जानवरों की दयनीय स्थिति से भी बदतर है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने अंग्रेजी, संस्कृत और स्थानीय भाषाओं में कई प्रासंगिक ग्रंथों का अध्ययन किया है और अपने शूद्र और अति-शूद्र भाइयों की दयनीय स्थिति के व्यक्तिगत ज्ञान का उपयोग अपनी इस पुस्तक की नींव के रूप में किया है। यह स्पष्ट है कि ऐसी बहुमूल्य सहायता (मेरी पुस्तक के प्रमाण के रूप में) के बिना मैं इस पुस्तक को लिख ही नहीं पाता।

मैंने अपने सीमित प्रयासों से किए गए कुछ शोधों को इस पुस्तक में शामिल किया है। मैं अपने विद्वान और विवेकशील पाठकों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि यदि उन्हें इस पुस्तक में कोई कमी, त्रुटि या खामी मिले तो कृपया मुझे क्षमा करें और इसे इसके महत्व के अनुसार स्वीकार करें। यदि ध्यानपूर्वक पढ़ने पर उन्हें इसका कोई भाग अनुचित या निराधार (झूठा) लगे, या यदि वे मुझे ऐसी पुस्तकों या संदर्भों के नाम सुझाना चाहें जो इस पुस्तक में प्रस्तुत मेरे शोध प्रबंध को सुदृढ़ कर सकें, तो कृपया समाचार पत्रों के माध्यम से मुझे सूचित करें। मैं इस सहायता के लिए अत्यंत आभारी रहूँगा और पुस्तक के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के समय इन्हें उचित महत्व दूँगा।

यह बताते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि बड़ौदा की मेरी यात्रा के दौरान, श्रीमान सयाजीराव महाराज गायकवाड़, सेना-खास खेल, शमशेर बहादुर (बड़ौदा के) ने अपने व्यस्त प्रशासनिक कार्यों के बीच से समय निकालकर मुझसे यह पुस्तक पढ़वाई। उन्होंने अत्यंत प्रसन्नता और प्रशंसा के साथ इसे अंत तक ध्यानपूर्वक सुना। उन्होंने मेरा हार्दिक स्वागत किया और मेरे प्रवास के दौरान मुझे शाही आतिथ्य सत्कार प्रदान किया। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी उदारता से मुझे धन का एक बड़ा उपहार भी दिया। मैं उनके इन सभी दयालुता और उदारता के कार्यों के लिए अत्यंत आभारी हूँ।

पुणे, बॉम्बे, ठाणे, जुन्नार, ओतुर, हडपसर, वांगनी और माली के कुरुल के कई (सम्मानित) शूद्र सज्जनों ने इस पुस्तक की विषयवस्तु मुझसे स्वयं सुनी है (उन्होंने मैंने स्वयं उन्हें यह पुस्तक पढ़कर सुनाई थी और उन्होंने पुस्तक की सामग्री की सत्यता की पुष्टि की है। उन्होंने अपने हस्ताक्षरों से इसे प्रमाणित किया है और इसकी सूचना मुझे व्यक्तिगत रूप से दी है।

जोतिराव गोविंदराव फुले
Member, Satya Shodhak Samaj.

18 जुलाई 1883,
पूना।

"कृषक की चाबुक की डोर" का परिशिष्ट 'ए'

(113) जब मैं 'द कल्टीवेटर्स व्हिप-कॉर्ड' लिख रहा था, तब मुझे कुछ सज्जनों से (विषय-वस्तु के बारे में) बात करने का अवसर मिला, मैं नीचे ऐसी दो बातचीत उद्धृत कर रहा हूँ, जैसा कि
नमूने।

वह व्यक्ति जिसे मराठा कहलाने पर गर्व था

"द कल्टीवेटर्स व्हिप-कॉर्ड" लिखने का काम पूरा करने के बाद, मैं कोई नया प्रोजेक्ट शुरू करने ही वाला था कि तभी एक सज्जन (जिन्हें मैंने ब्राह्मण समझा) पहिये के आकार की गोलाकार पूना पगड़ी पहने हुए अंदर आए और मेरे सामने आराम से तकिए के सहारे बैठ गए। वे मेरे दफ्तर में रखे फर्नीचर और अन्य सामानों का बारीकी से निरीक्षण कर रहे थे। (मैं तुरंत उनकी जाति का पता नहीं लगा सका। अगर वे मारवाड़ी (साहूकार) होते, तो उनकी पगड़ी से बालों की तीन लटें बाहर नहीं लटक रही होतीं। अगर वे दर्जी होते, तो उनकी पगड़ी में सुइयां नहीं चुभी होतीं। अगर वे सुनार होते, तो उनकी छाती उनकी भुजाओं से ऊपर नहीं निकली होती। मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता था कि वे ब्राह्मण थे, क्योंकि मैंने उन्हें बोलते हुए नहीं सुना था (कुछ शब्द भी नहीं)। मैं यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा था कि वे किस वर्ग (जाति) से आते हैं, तभी वे मेरी ओर मुड़े और मुझसे इस प्रकार कहा: "मुझे उम्मीद है कि आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?" जिस पर मैंने कहा, "नहीं महोदय! मुझे आपको व्यक्तिगत रूप से जानने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। क्षमा करें!" इस पर उन्होंने कहा, "मैं मराठा वर्ग (कुल, जाति) से हूँ।" जिस पर मैंने कहा, "आप मराठा वर्ग से हो सकते हैं, लेकिन आपकी जाति क्या है?" उस सज्जन ने कहा, "मैं जाति से मराठा हूँ।" मैंने कहा, "महाराष्ट्र में रहने वाले सभी लोग, ब्राह्मणों से लेकर महारों तक, मराठा हैं।" इन्हें आम तौर पर मराठा कहा जाता है। आपके जवाब से मुझे आपकी सही जाति के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली।" सज्जन ने कहा, "आप मुझे कुनबी (किसान) कह सकते हैं (मान लीजिए)।

जोतिराव: "आप कौन सा पेशा या व्यवसाय करते हैं?"

महोदय: सतारा के श्रीमंत अप्पासाहेब महाराज (श्रीमंत छत्रपति प्रतापसिंह महाराज के छोटे भाई, जिन्हें अंग्रेजों ने 3 सितंबर 1839 को सतारा के सिंहासन से हटा दिया था। अप्पासाहेब को उनके स्थान पर सतारा के सिंहासन पर बैठाया गया था) के लिम्ब (सतारा-पुणे राजमार्ग से लगभग 7-8 किमी उत्तर में स्थित एक गाँव) की सुंदर रखैल बबागबाई पर मोहित होने से बहुत पहले, हमारे परिवार की महिलाओं ने बड़ी आसानी से अप्पासाहेब महाराज से लगभग दो लाख रुपये प्राप्त कर लिए थे। हम (हमारे परिवार के सदस्य) इस अर्जित राशि से अपना जीवन यापन आराम से कर रहे हैं। तब से हमारा सतारा के शाही परिवार से कोई संबंध नहीं है।

जोतिराव: आपने मुझ पर इतनी कृपा क्यों की?

महोदय: मैं आपसे कोई एहसान नहीं मांगना चाहता, महोदय। लेकिन मुझे पता चला है कि आप इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि सरकारी विभागों में ब्राह्मण अधिकारियों की भरमार है, जो स्वाभाविक रूप से (अज्ञानी) किसानों का शोषण करते हैं। मेरा मानना है कि आप यह भी मानते हैं कि यदि इन अधिकारियों की भर्ती किसानों में से की जाए, तो वे किसानों का इस प्रकार शोषण नहीं करेंगे।

जोतिराव: जी हाँ, बिलकुल! मेरा दृढ़ मत है कि यदि सरकारी विभागों में जनसंख्या में किसानों की संख्या के अनुपात में भर्ती किए गए अधिकारियों को नियुक्त किया जाए, तो ब्राह्मण अधिकारियों के विपरीत, उनके द्वारा अपनी जाति के लोगों का शोषण करने की संभावना कम होगी।

महोदय: आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? कृपया मुझे यकीन दिलाएं।

जोतिराव: मान लीजिए (उदाहरण के लिए) कि कलेक्टर आपको यहाँ पुलिस सब-इंस्पेक्टर नियुक्त कर देते हैं। मान लीजिए आपके करीबी रिश्तेदार और पड़ोसी – सभी किसान – आपस में झगड़ों में उलझे हुए हैं (जिनके परिणामस्वरूप मारपीट और खून-खराबा होता है) और मामला आपके पास आता है, तो आप मामले की सच्चाई की जाँच शुरू करते हैं। क्या आप आरोपियों से बदतमीज़ी और अभद्रता से बात करेंगे? (क्या आप उन्हें गालियाँ देंगे?)

सज्जन: कभी नहीं।

जोतिराव: क्यों नहीं?

महोदय: ये सभी मेरे पड़ोसी या करीबी रिश्तेदार हैं। मैंने अपना पूरा बचपन (जवानी तक) इन्हीं की देखरेख में बिताया है।
(देखो)। तो फिर मैं उनसे असभ्य और अपमानजनक तरीके से बात करने की हिम्मत कैसे कर सकता हूँ?

जोतिराव: मान लीजिए, आप अपनी जाति के कुछ लोगों से रिश्वत (अवैध लाभ) लेते हैं, तो क्या आप दूसरों को इस कुप्रथा का दोषी ठहराने का साहस करेंगे और क्या आप उन पर जुर्माना लगाने या उन्हें शारीरिक दंड देने का साहस करेंगे?

सज्जन: नहीं, कभी नहीं। मैं कभी भी ऐसे पाप का दोषी नहीं बनूंगा।

जोतिराव: क्यों नहीं?

महोदय: क्योंकि पुलिस सब-इंस्पेक्टर के रूप में मेरी नौकरी अस्थायी है (यह शाश्वत नहीं, बल्कि क्षणिक है)। इसकी स्थायित्व की गारंटी कौन दे सकता है? शायद कोई दखलंदाजी करने वाला (चापलूसी करने वाला) कर्मचारी दे दे।
कलेक्टर के कान भरकर मेरे खिलाफ़ ज़हर घोलने की कोशिश की तो मुझे बर्खास्त कर दिया जाएगा। लेकिन ये आरोपी मेरे करीबी रिश्तेदार हैं – जिनके साथ मेरे परिवार के सदस्य भोजन करते हैं और आपस में शादी करते हैं। अगर मैं अब उनसे दुश्मनी मोल लेने की मूर्खता करूँ तो मुझे अपने बेटों और बेटियों की शादियाँ करवाना बेहद मुश्किल हो जाएगा। (मैं उन्हें अविवाहित समाज के भरोसे नहीं छोड़ सकता – उन्हें वाघ्या और मुरली जैसे धार्मिक भक्तों की तरह निंदा नहीं कर सकता – जो खंडोबा की धार्मिक सेवा में समर्पित हैं)। मेरे बच्चे और उनके बच्चे जीवन भर साथ रहेंगे और काम करेंगे। हम पड़ोसी हैं। हमारे बच्चे और उनके बच्चे साथ खेलते हैं। हम एक ही कुएँ और नदी से पानी लेते हैं। हमारे खेत उनके खेतों से सटे हुए हैं। हमारे मवेशी एक ही गाँव के साझा चरागाह में चरते हैं। आपातकाल में हम एक-दूसरे से दरांती, लोहे की छड़ें, निराई मशीनें, रस्सियाँ, बुवाई के औज़ार और खेतों में फ़सल की देखभाल के लिए अन्य उपकरण उधार लेते हैं। हम खेतों में एक-दूसरे से भैंस और बैल उधार लेते हैं। हमारे घरों की महिलाएं आधी रात को भी एक-दूसरे से अनाज, नमक या तेल उधार लेने या देने में मदद करती हैं। जब हमारे घरों में कोई महिला बच्चे को जन्म देती है, तो हम तुरंत उनकी सहायता के लिए पहुंचते हैं और अस्थायी स्नानघर तैयार करते हैं और स्नान के पानी को निकालने के लिए खाइयां खोदते हैं। हम उन्हें पलंग भी उपलब्ध कराते हैं। हमारे रीति-रिवाज, खान-पान और पहनावे भी एक जैसे हैं। हम एक ही देवता की पूजा करते हैं और एक ही प्रकार के नियम और मान्यताओं का पालन करते हैं। जब हमारे घरों में आग लग जाती है, तो हम आग बुझाने के लिए एक-दूसरे की सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं। हमारे बीच अंतिम संस्कार के तरीके भी एक जैसे हैं। पहले, किसान अपने सभी अंतिम संस्कार स्वयं करते थे। पिछले तीस-चालीस वर्षों से ही ये ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में किए जाते हैं। हम अंत्येष्टि में एक-दूसरे की सहायता करते हैं, शोक संतप्त परिवार (बड़ों और बच्चों) को सांत्वना देने के लिए तुरंत पहुँचते हैं, अपने घरों से उनके लिए भोजन ले जाते हैं और एक ही थाली में उनके साथ बाँटते हैं। (दूसरे शब्दों में, हम जन्म से मृत्यु तक अटूट बंधन से जुड़े हुए हैं)। क्या आपको लगता है कि मैं इतना अमानवीय होऊंगा कि अपने ही जाति के लोगों से रिश्वत मांगूं और लूँ, और अपने परिवारों में शाश्वत कलह के बीज बोऊँ?

जोतिराव: तो आपको इस स्थिति पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। ब्राह्मण अधिकारी जाति के आधार पर शूद्र किसानों से संबंधित नहीं हैं, इसलिए वे असहाय, शोषित और अशिक्षित किसानों के साथ अनेक प्रकार के धोखे और छल करते हैं, और इस प्रकार वे अपने ही जाति के लोगों (ब्राह्मणों) के विपरीत बड़ी आसानी से उनका शोषण करते हैं। क्या आपका अंतरात्मा इस परिकल्पना का समर्थन नहीं करता?

महोदय, इस समय मैं इस विषय पर अपनी राय देने की स्थिति में नहीं हूँ, लेकिन मैं यह कहने का साहस अवश्य करूँगा कि शूद्रों ने कुछ विद्वान (और शिक्षित) व्यक्तियों को जन्म दिया है। यह कितना शर्मनाक है कि वे कभी एकत्रित होकर किसानों पर आने वाली विपत्तियों से बचाव के विभिन्न तरीकों और उपायों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं करते। महोदय, ये बेईमान कायर वेश्याओं (रखैलों) के घरों में मंडराते हैं और साथ ही ब्राह्मण अधिकारियों की उनके कुकर्मों के लिए आलोचना और निंदा करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते। वास्तव में वे ब्राह्मण अधिकारियों के चाटुकार हैं और उनके प्रति अत्यंत चापलूसी और चमचागिरी का भाव रखते हैं।

जोतिराव: हाल ही में हमें एक दुखद घटना का सामना करना पड़ा है। शिक्षा विभाग के (ब्राह्मण) अधिकारियों ने शिक्षा आयोग (जिसे आमतौर पर 1882 के 'हंटर आयोग' के नाम से जाना जाता है) के समक्ष सर्वसम्मति से साक्ष्य देते हुए, किसानों के बच्चों की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया (उपेक्षा की), शिक्षा आयोग को पूरी तरह से गुमराह किया (आंखों में धूल झोंकी) और स्वयं दयालु गवर्नर-जनरल को धोखा देने का प्रयास किया।

इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि शूद्र समुदाय के ये डरपोक, रीढ़विहीन, शिक्षित लोग उस तरह से व्यवहार करें (जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है)।

उन्होंने शिक्षा विभाग के ब्राह्मण अधिकारियों की गलतियों (लापरवाहियों) की ओर कभी ध्यान नहीं दिलाया (जबकि उन्हें ऐसा करना चाहिए था)। लेकिन अगर कोई शूद्र साधारण एजेंट के कार्यालय में किसी घटिया ब्राह्मण क्लर्क के सामने बहुत अधिक विनम्रता से नहीं झुकता था, तो उसे वार्षिक दरबार के पीछे एक कोने में धकेल दिया जाता था, उसे मुरझाए और सूखे फूलों की माला पहनाई जाती थी (जो आमतौर पर किसी घुमंतू उपदेशक को दी जाती है), उस पर गुलाब जल की कुछ बूँदें छिड़की जाती थीं, उसकी कलाई पर सड़ी हुई (घटिया) सुगंध लगाई जाती थी और उसे बिना चूने के पान के पत्तों के साथ बाहर निकाल दिया जाता था। (संक्षेप में, उसकी धृष्टता के लिए उसे वार्षिक दरबार में अपमानित किया जाता था)। क्या मैं सच नहीं कह रहा हूँ? अब आप मुझे जवाब क्यों नहीं देते? ठीक है! (जैसा आप चाहें!) आपको वास्तविक स्थिति की गहराई से जाँच करनी चाहिए, और इस जानकारी के साथ, सरकारी विभागों में ब्राह्मण अधिकारियों के व्यवहार के बारे में मुझसे बहस करने के लिए वापस आना चाहिए।

महोदय: अब मुझे पूरी तरह से यकीन हो गया है, महोदय, कि चूंकि सभी सरकारी विभागों में ब्राह्मण अधिकारियों की भरमार है, इसका परिणाम न केवल निरक्षर किसानों के लिए बल्कि प्रबुद्ध (अंग्रेज़ी) सरकार के गौरव को भी घोर हानि पहुंचा रहा है। मुझे सबसे ज्यादा हैरानी इस बात की है कि शिक्षा विभाग के शिक्षा निदेशक इस दयनीय स्थिति पर कोई ध्यान नहीं देते।

जोतिराव: मेरे प्रिय मित्र, यदि आप शिक्षा निदेशक से ऐसी कुप्रथाओं की पेचीदगियों और

बारीकियों की इतनी गहराई से जांच करने की अपेक्षा करते हैं, तो वह इस तरह का विलासितापूर्ण (और चिंतामुक्त) जीवन कैसे जी सकेंगे?

महोदय: यदि अंग्रेज़ सरकार के प्रबुद्ध शासन में शूद्रों की यह दयनीय स्थिति है, तो आप कुख्यात पेशवाओं के शासनकाल में अशिक्षित (बेचारे) शूद्र किसानों पर हुए अत्याचार और अन्याय की भयावहता की कल्पना भी नहीं कर सकते। अब मैं आपसे विदा लेता हूँ। कृपया मुझे अपने दिल में सम्मानपूर्वक याद रखें। ये कहकर महोदय मेरे घर से चले गए।

जोतिराव गोविंदराव फुले
Member, Satya Shodhak Samaj.

2 नवंबर 1882,
पूना।

परिशिष्ट 'बी'

A Shudra Sadhu (hermit) belonging to the Kabir Bhakti (devotion) Sect.

जिस दिन मैंने 'कृषक की चाबुक-रस्सी' (भाग तीन) पूरी की, उसके अगले दिन दोपहर में, कबीर संप्रदाय के भक्ति संप्रदाय से संबंधित बंबई के एक शूद्र साधु मेरे घर आए और मेरे आंगन में एक बेंच पर बैठ गए। उन्होंने भगवा वस्त्र पहने थे, गले में तुलसी के पत्तों की माला थी, वे बहुत वाचाल थे और पंढरपुर (भगवान विट्ठल का पवित्र स्थान) (विठोबा) के नियमित तीर्थयात्री थे। मेरे सेवक द्वारा उनके आगमन की सूचना मिलने पर, मैं आंगन में आया और उनसे इस प्रकार कहा: "हे साधु, आप मेरे यहाँ क्यों आए हैं? क्या मैं आपकी मनोकामना जान सकता हूँ? (आप मुझसे किस कार्य के लिए आए हैं?) मुझे इस बारे में सब कुछ जानने की प्रसन्नता होगी।"

साधु: क्या आप श्री जोतीराव फुले हैं?

जोतिराव: जी हाँ, आपके सामने खड़े व्यक्ति का नाम जोतिराव फुले है।

साधु: बहुत खूब! आप धर्म से हिंदू हैं, आपने अंग्रेजी में कुछ (धार्मिक) पुस्तकें पढ़ी हैं और हाल ही में आपने हिंदू धर्म की निंदा (अपमान, आलोचना) करने का अभियान चलाया है। मैं आपसे यह जानने के लिए मिलने आया हूँ कि क्या हिंदुओं के चार प्रमुख वेद (शास्त्र) स्वयं ईश्वर द्वारा रचित हैं।

जोतिराव: क्या आपने स्वयं (अपनी आँखों से) हिंदू धर्म के इन चार प्रमुख वेदों को देखा है?

साधु: जी हां, श्रीमान, मैंने स्वयं अपनी आंखों से एक ब्राह्मण के घर में इन चारों वेदों को देखा है।

जोतिराव: क्या आप इस बात का कोई ठोस प्रमाण दे सकते हैं कि इन वेदों की रचना स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर ने की थी?

साधु: ब्राह्मणों द्वारा फैलाई गई अफवाहों (काल्पनिक बातों) के अलावा इस बारे में कोई ठोस सबूत (प्रमाण) नहीं है।

जोतिराव: रहने दो! अब मुझे बताओ, भले आदमी, क्या ईश्वर का कोई ठोस, भौतिक आकार (रूप) है?

साधु: भगवान का कोई ठोस भौतिक स्वरूप कैसे हो सकता है? वे तो अमूर्त सार्वभौमिक आत्मा हैं।

जोतिराव: तो फिर उस अमूर्त सार्वभौमिक आत्मा ने चार वेदों की रचना कैसे की?

साधु: आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए ब्राह्मण ही सबसे योग्य हैं। बेहतर होगा कि आप इस विषय पर ब्राह्मणों से ही प्रश्नोत्तर करें।

जोतिराव: दूसरा प्रश्न यह है कि क्या ईश्वर ने संपूर्ण मानवजाति (सभी मनुष्यों) के उद्धार के उद्देश्य से चारों वेदों की रचना की थी?

साधु: जी हाँ, ईश्वर ने संपूर्ण मानव जाति के उद्धार के (प्रशंसनीय) उद्देश्य से चारों वेदों की रचना की।

जोतिराव: तीसरा, भगवान ने इन चारों वेदों की रचना किस भाषा में की थी?

साधु: भगवान ने चारों वेदों की रचना संस्कृत में की, बिल्कुल।

जोतिराव: चौथा प्रश्न, कृपया मुझे यह बताएं कि क्या पृथ्वी के चारों महाद्वीपों और विभिन्न द्वीपों में रहने वाले सभी लोग संस्कृत से परिचित हैं?

साधु: हमारी पृथ्वी पर रहने वाले बहुत कम लोग संस्कृत समझ पाते हैं।

जोतिराव: यह तथ्य इस बात को निर्णायक रूप से सिद्ध करता है कि ईश्वर ने संपूर्ण मानवजाति के उद्धार के लिए चार वेदों की रचना नहीं की, क्योंकि पृथ्वी पर विभिन्न जातियाँ और कई भाषाएँ बोलने वाले लोग निवास करते हैं। अधिकांश देशों के अधिकांश निवासी संस्कृत से अनभिज्ञ हैं। ऐसे में वे चार वेदों का अध्ययन करके अपना उद्धार कैसे कर सकते हैं? इस विषय पर आपका क्या विचार है?

साधु: जिस समय ईश्वर ने चारों वेदों की रचना की, उस समय पृथ्वी (ग्रह, ब्रह्मांड) के सभी महाद्वीपों और द्वीपों के सभी निवासी संभवतः संस्कृत को संचार (अभिव्यक्ति) के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते रहे होंगे। इसीलिए ईश्वर ने चारों वेदों की रचना संस्कृत में की। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समय के साथ-साथ अनेक विविध भाषाएँ प्रचलन में आ गई होंगी।

जोतिराव: जब ईश्वर ने चारों वेदों की रचना की, तब उन्हें यह कैसे पता नहीं चला कि समय के साथ इतनी विविध भाषाएँ प्रचलन में आ जाएँगी? क्या यह तथ्य उनकी सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता को झुठलाता नहीं है? यद्यपि जर्मन विद्वान मैक्स मुलर (अन्य अंग्रेज़ और स्कॉटिश विद्वानों का प्रतिनिधित्व करते हुए) चारों वेदों के ज्ञान से भली-भांति परिचित थे, क्या यह विचित्र नहीं है कि उन्होंने अपने धर्म (ईसाई धर्म) की घोर निंदा करते हुए वैदिक धर्म (हिंदू धर्म) को नहीं अपनाया?

साधु: मैक्स मुलर शायद यूरोप की ठंडी और प्रतिकूल जलवायु में पवित्र सफेद धागा (अपने कंधों पर) पहनने, दिन में तीन बार स्नान करने और लगातार हिंदू धर्मग्रंथों का पाठ करने से कतराते रहे होंगे। शायद इसी बात ने उनके निर्णय को प्रभावित किया हो। लेकिन असली कारण तो सिर्फ उन्हें ही बेहतर पता था। मैं इसके बारे में अंदाज़ा भी कैसे लगा सकता हूँ? (मैं इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ कैसे कह सकता हूँ?)

जोतिराव: यदि आप कहते हैं कि ईश्वर ने वास्तव में समस्त मानव जाति के उद्धार के लिए चारों वेदों की रचना की थी, तो भटों (ब्राह्मणों) ने शूद्रों और अति-शूद्रों को, जो हिंदू थे, चारों वेदों का अध्ययन करने से क्यों रोका होगा? इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि भटों (ब्राह्मणों) ने ईश्वर के आदेशों का उल्लंघन किया था। तो फिर वेदों के रचयिता ने इस उल्लंघन को कैसे अनदेखा किया? (क्या उन्होंने इस पर कुछ नहीं किया और चुपचाप एकांत में चले गए?) जरा सोचिए, इस अनुचित प्रतिबंध से शूद्रों और अति-शूद्रों को इन वर्षों में कितना बड़ा नुकसान हुआ होगा? फिर वे सर्वशक्तिमान ईश्वर और उनके द्वारा रचित चारों वेदों में विश्वास क्यों करें, और स्वयं को हिंदू क्यों कहें?

साधु: अधिकांश ब्राह्मणों का यह दावा है कि उन्होंने शूद्रों और अति-शूद्रों को चार वेदों का अध्ययन करने से कभी नहीं रोका। कई भाट-ब्राह्मण केवल धन कमाने के उद्देश्य से (ईसाई) पादरियों के घरों में जाकर उन्हें चार वेद पढ़ाते हैं। शूद्र और अति-शूद्र (जिनका आपने उल्लेख किया है) इतने गरीब हैं कि वे वेदों के अध्ययन के लिए शुल्क नहीं दे सकते। (उनकी गरीबी ही इसके लिए जिम्मेदार है)। आप इस स्थिति के लिए ब्राह्मणों को कैसे दोषी ठहरा सकते हैं? (ऐसी परिस्थितियों में वे और क्या कर सकते हैं?)

जोतिराव: यह (ब्राह्मणों की व्याख्या) स्पष्ट रूप से साबित करती है कि आप भाटों (ब्राह्मणों) की धूर्तता (चालाक, कपटी स्वभाव) से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। खैर, छोड़िए। क्या मुझे यह समझना चाहिए कि धार्मिक अनुष्ठान करके अपना जीवन यापन करने वाले (ईसाई) पादरी इतने धनी हैं कि वे (ब्राह्मण गुरुओं से) चारों वेदों का अध्ययन करने के लिए शुल्क का भुगतान कर सकें? और आश्चर्य की बात यह है कि क्या भारतीय राज्यों के शासक (राजकुमार) - जैसे भोंसले, सिंधिया, होल्कर और गायकवाड़ - इतने दरिद्र हैं कि वे (ब्राह्मणों से) चारों वेदों का अध्ययन करने का विलासितापूर्ण खर्च (शुल्क का भुगतान) वहन नहीं कर सकते? ऐसा कैसे हो सकता है कि इनमें से एक भी शासक के पास अपने पुत्रों को वेदों का अध्ययन कराने (आवश्यक शुल्क का भुगतान करके) के लिए साधन (वित्तीय क्षमता) नहीं है? क्या आपका तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त सभी राजकुमार यूरोपीय पादरियों से भी बदतर स्थिति में हैं? हे पवित्र पुरुष! अनेक (ब्राह्मण) वैदिक विद्वान, शास्त्री, जोशी और धार्मिक कथाओं के विक्रेता अक्सर इन शूद्र राजकुमारों के दरबारों में आते-जाते रहते हैं, और ये भोले-भाले राजकुमार उनके निरंतर उपदेशों और अनुष्ठानों से इतने प्रभावित और मोहित हो जाते हैं कि कभी-कभी उनमें से कोई एक रामदास के अनुयायियों को उदारतापूर्वक एक जागीर (एक रियासत) दे देता है! एक अन्य राजकुमार इतना उदार है कि वह तीर्थ स्थलों पर एकत्रित भिक्षु भाटों (ब्राह्मणों) को पूरे एक महीने तक उत्तम भोजन (बूंदी-लड्डू) खिलाता है। एक तीसरा राजकुमार पुणे में ब्राह्मणों पर सोने के गोलाकार आभूषणों की वर्षा करता है। इससे सिद्ध होता है कि सभी शूद्र (राजकुमार) दरिद्र नहीं हैं। क्या यह उम्मीद करना अतिशयोक्ति है कि इन ब्राह्मणों में से कम से कम एक (राजकुमारों की उदारता से लाभान्वित) अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके किसी राजकुमार को अपने शूद्र प्रजाजनों के बच्चों के लिए कई गांवों में प्राथमिक विद्यालय खोलने के लिए राजी कर लेता, ताकि इन विद्यालयों से कम से कम दो विद्वान तो पैदा हो पाते? यूरोपीय पादरी, हालांकि विदेशी और ईसाई हैं, इन भाटों (ब्राह्मणों) से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। भारत के शूद्र और अति-शूद्र हजारों वर्षों से ब्राह्मणों के अत्याचार और गुलामी के अधीन दयनीय जीवन जी रहे हैं। शूद्रों और अति-शूद्रों को इस गुलामी से मुक्त कराने के लिए, इन ईसाई मिशनरियों ने अपने देशवासियों से बड़ी मात्रा में दान इकट्ठा किया और रियासतों में अपने शूद्र और अति-शूद्र प्रजाजनों के बच्चों के लिए विद्यालय खोले - जो उसी जाति से आते हैं जिससे सिंधिया, होल्कर, गायकवाड़ आदि संबंधित हैं। इन विद्यालयों ने अनेक विद्वान उत्पन्न किए हैं - जो हर तरह से ब्राह्मण विद्वानों के बराबर हैं, जिन्हें सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों ने तैयार किया है। शूद्र विद्वान अब सरकारी सेवा में उच्च पदों पर आसीन

हैं और ब्राह्मण अधिकारियों और अधिवक्ताओं के साथ अधिवक्ताओं और सरकारी अधिकारियों के रूप में जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं। निश्चित रूप से उन्होंने अपनी अतीत की दयनीय स्थिति और वर्तमान की प्रशंसनीय और प्रगतिशील जीवन शैली के बीच के विशाल अंतर को महसूस किया होगा। लेकिन हमें यह कहना ही पड़ेगा कि ये शूद्र सचमुच बहुत ही शापित और विवेकहीन हैं, क्योंकि अंग्रेज़ सरकार से इतनी बहुमूल्य सहायता और सहयोग प्राप्त करने के बावजूद भी वे धूर्त ब्राह्मणों के बंधनों से मुक्त होने की तीव्र इच्छा नहीं रखते। इस डर से कि कहीं वे अपना खोखला 'शान-शौकत और दिखावटी पद-संपत्ति' न खो दें, वे ब्राह्मण अधिकारियों के सामने चापलूसी करके (उनके सामने घुटने टेककर) संतुष्ट रहते हैं और इसे ही अपने जीवन का परम लक्ष्य समझते हैं। इस प्रकार वे अपने ही अहंकार में (और जीवन के लक्ष्य की गलत समझ में) पूरी तरह खो गए हैं।

साधु: यदि शूद्रों की यही स्थिति है, तो आप, महोदय, इन (शूद्र) भारतीय राजकुमारों और अन्य शूद्र सरदारों और जागीरदारों से क्यों न संपर्क करें और उनसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक निवेदन करें कि वे कृपा करके अपने राज्यों के गांवों में कुछ (प्राथमिक) विद्यालय खोलें और अपने शूद्र प्रजाजनों के बच्चों को शिक्षा का सुखदायक स्रोत प्रदान करें?

जोतिराव: हे आदरणीय महोदय, इन भारतीय राजकुमारों के दरबारों में ब्राह्मण अधिकारियों का इतना वर्चस्व है कि मेरे जैसे एक साधारण समाजसेवक के लिए शासक से मिलकर शूद्रों की शिकायतों को उनके सामने रखना असंभव होगा।

साधु: आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? पुणे के कुशा घोंगड़े का एक जीता-जागता उदाहरण है। ये घोंगड़े बड़ौदा में नाचने वाले लड़कों के समूह द्वारा प्रस्तुत लोक नाटकों में वाद्य यंत्र बजाते हुए मधुर गायन करते थे। उन्होंने बड़ौदा में अपने कुशल प्रदर्शन से हजारों रुपये कमाए। यदि बड़ौदा के शासक लोक कलाकारों और गायकों को प्रोत्साहित करते हैं, जैसा कि ऊपर बताया गया है, तो क्या आपको लगता है कि महाराज से मिलना और उन्हें उनकी जाति के लोगों (पश्चिमी महाराष्ट्र के शूद्रों) की दयनीय स्थिति से अवगत कराना इतना मुश्किल होगा? आप अपने इस प्रयास में अवश्य सफल होंगे, महोदय।

ज्योतिराव: राज्य प्रशासन के प्रभारी (दीवान और अन्य अधिकारी) यह प्रबल इच्छा रखते हैं कि राजकुमार गीत-नृत्य और लोक-नाट्य जैसे अन्य मनोरंजनों के प्रति आसक्त हो जाएं। एक बार राजकुमार इन मनोरंजनों के आदी हो जाएं, तो दरबार के इन अधिकारियों को राज्य के मामलों को अपनी इच्छानुसार चलाने की पूरी स्वतंत्रता मिल जाती है, और इस प्रकार वे बिना किसी रोक-टोक के अपना स्वार्थ पूरा कर लेते हैं। वे राजकुमारों को राज्य में यूरोपीय (अंग्रेज़) अधिकारियों (गणमान्य व्यक्तियों) के सम्मान में भव्य भोज आयोजित करने के लिए भी प्रेरित करते हैं। यदि राजकुमार मेरे जैसे व्यक्तियों की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह और मदिराप को स्वीकार कर लें, तो इससे स्वाभाविक रूप से दरबारी अधिकारियों के गुट के हितों को नुकसान होगा। यदि राज्य का शासक राज्य के खजाने से

शूद्र किसानों के बच्चों की शिक्षा पर धन खर्च करे, तो वे स्वाभाविक रूप से (ब्राह्मण अधिकारियों के स्थान पर) उच्च पदस्थ अधिकारी बन जाएंगे। इस प्रकार ब्राह्मण अधिकारियों की जाति के बच्चों को कठिन, उबाऊ और बोझिल कृषि कार्यों में विवश होना पड़ेगा—जैसे खेतों की जुताई करना। इस प्रकार उन्हें अपने कोमल हाथों को खेतों की कीचड़ और दलदल से सना पड़ेगा।

साधु: मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि ब्राह्मण अधिकारी इतनी नीच हरकतें कर सकते हैं। लेकिन इस विषय पर आपकी स्पष्ट व्याख्या सुनकर अब मुझे पूरा यकीन हो गया है। जब शूद्र शासकों (भारतीय राज्यों के) के बच्चे (राजकुमार) बालिग हो जाते हैं, तो ये धूर्त ब्राह्मण दरबारी अधिकारी ब्रिटिश सरकार (गवर्नर या वायसराय) को बिना मांगे पत्र लिखकर कहते हैं कि ये राजकुमार उक्त राज्यों के भारी प्रशासनिक दायित्वों को संभालने में सक्षम नहीं हैं, इसलिए वे अंग्रेज अधिकारियों को सलाह देते हैं कि वे राज्य प्रशासन इन राजकुमारों को न सौंपें। वे यह अनैतिक कार्य इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें उम्मीद होती है कि इससे अंग्रेज अधिकारी उनकी (ब्राह्मण अधिकारियों की) चतुराई से प्रभावित होंगे और उक्त राजकुमारों की कमजोरी (अक्षमता, अक्षमता) पर भी ध्यान देंगे। वे राज्य प्रशासन की ज़िम्मेदारी मिलने की आशा रखते हैं। प्रशासन का कार्यभार संभालते ही, यह पूरी तरह संभव है कि वे भोले-भाले राजकुमारों को (बंदरों की तरह) उनकी नाक पकड़कर दिन में अंग्रेज़ अधिकारियों के आवासों पर घुमाएंगे। वे यह भी सुनिश्चित करेंगे कि ये राजकुमार रात में गीत, नृत्य, संगीत कार्यक्रमों और विभिन्न लोक नाटकों में मग्न रहें। इस प्रकार उन्हें राजकुमारों की संपत्ति को बेहिसाब लुटाने का भरपूर अवसर मिलेगा।

ज्योतिराव: जब तक भारतीय राज्यों के शूद्र शासक अपनी मूर्खता को नहीं पहचानते (सुधार नहीं पाते) और अपने बच्चों (राजकुमारों) तथा शूद्र वर्ग से आने वाले अपने अधीनस्थ अधिकारियों को शिक्षा का अमृत (जीवन का अमृत) नहीं देते तथा उन्हें उच्च पद के दायित्वों को संभालने के लिए प्रशिक्षित नहीं करते, तब तक संबंधित राज्यों (शूद्र शासकों के) में ब्राह्मण अधिकारी प्रशासन को लूटते रहेंगे और अपने कुकर्मों का निर्वाह करते रहेंगे। ब्राह्मणों के इन कुकर्मों का वर्णन करना समय की बर्बादी है। (अशिक्षित) शूद्र अपने पिछले पापों का प्रायश्चित कर रहे हैं (अपने पिछले अपराधों का फल भोग रहे हैं) और मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि ब्राह्मण अधिकारियों को अपने घोर पापों का दंड एक दिन (समय आने पर, उचित समय पर) अवश्य भुगतना पड़ेगा। (चक्र का चक्र, निश्चय ही, देर-सवेर पूरा होगा।)

साधु: क्या अब मैं आपसे विदा ले सकता हूँ, महोदय?

जोतिराव: जैसी आपकी इच्छा। अलविदा!

ज्योति गोविंद फुले
Member, Satya Shodhak Samaj.

पुणे, 6 अप्रैल 1883।

मराठी साहित्य सम्मेलन को एक पत्र

(महात्मा फुले ने न्यायमूर्ति एम.जी. रानाडे के माध्यम से मराठी साहित्यिक सम्मेलन को एक पत्र भेजा था। इसे यहाँ मराठी ईसाई पाक्षिक पत्रिका 'ज्ञानोदय' (दिनांक 11 जून 1885) से पुनः प्रकाशित किया गया है।)

महोदय,

मुझे आपका पत्र और दिनांक 13 तारीख का परिपत्र प्राप्त हो गया है। लेकिन मेरे प्रिय व्यस्त और दखलंदाजी करने वाले बड़े भाई, कृपया ध्यान दें कि महाराष्ट्र में कुछ लोग ऐसे हैं जो समस्त मनुष्यों के मानवाधिकारों के मुद्दे पर निष्पक्ष रूप से विचार नहीं करते और उन्हें ये अधिकार खुले तौर पर और स्वेच्छा से देने को तैयार नहीं हैं, और यदि उनका वर्तमान व्यवहार इसका संकेत है, तो भविष्य में भी उनके द्वारा ये मानवाधिकार दिए जाने की संभावना नहीं है। (कृपया ध्यान दें कि) हमारे द्वारा स्थापित संस्थाएँ और हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उपर्युक्त (पिछड़े) लोगों द्वारा स्थापित संस्थाओं और उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की विषयवस्तु से बिल्कुल विपरीत हैं। उन्होंने जानबूझकर और दुष्टतापूर्वक अपने नकली पवित्र ग्रंथों से उस शर्मनाक घटना को दबा दिया है, जिसमें उनके पूर्वजों ने हमें (शूद्रों और अति-शूद्रों को) गुलाम बनाकर दास बना दिया था, ताकि वे हमसे प्रतिशोध ले सकें। उनके प्राचीन और कुटिल ग्रंथ हमारे इस आरोप की पर्याप्त गवाही देंगे। ब्राह्मण लेखक, जो जमीनी हकीकत से पूरी तरह बेखबर हैं (जो आत्ममुग्ध हैं, जो कल्पनाशील हैं, जो सिर्फ ज्ञान बघारते हैं), और ब्राह्मण वक्ता, जो अपने समूहों और सार्वजनिक सभाओं में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, निश्चित रूप से उन कष्टों से अनभिज्ञ हैं जो शूद्रों और अति-शूद्रों को इन वर्षों में सहने पड़े हैं। पुणे में 1870 में स्थापित 'सार्वजनिक सभा' (सार्वजनिक सामाजिक संगठन) के संस्थापक इस दयनीय स्थिति से भलीभांति परिचित हैं। लेकिन उन्होंने इस दुखद स्थिति को अनदेखा कर दिया, क्योंकि उन्हें अपने और अपने बच्चों के क्षणिक हितों की रक्षा करनी थी। इसलिए जैसे ही वे (अंग्रेजी) सरकारी सेवा से पेंशन पर सेवानिवृत्त हुए, अत्यंत आश्चर्यजनक और खेदजनक रूप से, वे कट्टर सांप्रदायिक, पक्के मूर्तिपूजक और पूर्णतः वर्जित प्रवृत्ति के अनुयायी बन गए और अपने शूद्र और अतिशूद्र भाइयों को नीचा देखने लगे। वे एक कदम और आगे बढ़ गए। उन्होंने औपचारिक स्नान आदि करने के बाद भी (सरकार द्वारा मुद्रित, जिसने उन्हें पेंशन स्वीकृत की थी) कागजी मुद्रा को छूना भी घोर विधर्म (एक पूर्ण पाप या अपवित्रता) समझा। इसलिए इन (पिछड़े) आर्य ब्राह्मणों से हमारी इस दुर्भाग्यपूर्ण भूमि की समृद्धि के लिए प्रयास करने की अपेक्षा करना व्यर्थ है! यही सही है! (हमें अब यह संकल्प लेना चाहिए) कि हम शूद्र उन ब्राह्मणों के झूठे वादों से धोखा नहीं खाएंगे जिन्होंने हमारा (शूद्रों का) शोषण करके अपना पेट भरा

है। हम शूद्रों और अतिशूद्रों को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए और यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि ब्राह्मण लेखकों से हाथ मिलाने से हमें कोई लाभ नहीं होगा। यदि वे बड़े दबंग वास्तव में चाहते हैं कि हम सब एकजुट हों, तो उन्हें समस्त मानव जाति में शाश्वत भाईचारे और सद्भाव को बढ़ावा देने के तरीके खोजने चाहिए और उन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना चाहिए। इस महत्वपूर्ण समय में हमारी लापरवाही और उदासीनता हमारे लिए ही हानिकारक होगी। अब मैं इसे शूद्रों और अतिशूद्रों की इच्छा और प्रसन्नता पर छोड़ता हूँ। मेरे इस छोटे से पत्र में मेरे विचार (इस महत्वपूर्ण विषय पर) समाहित हैं, कृपया इसे मराठी साहित्य सम्मेलन को उनके गंभीर विचार के लिए अग्रेषित करें। एक वरिष्ठ व्यक्ति की ओर से सद्भावपूर्वक दिया गया यह पहला अभिवादन स्वीकार करें।

आपके दोस्त,
जोतिराव जी. फुले
('ज्ञानोदय', दिनांक 11 जून, 1885)।

महात्मा फुले की एक कविता, जो अब तक अप्रकाशित थी।

(डॉ. वाई.डी. फडके द्वारा सर्वप्रथम प्रकाश में लाया गया और महाराष्ट्र टाइम्स के (रविवार संस्करण, दिनांक 23 सितंबर 1990) में प्रकाशित हुआ। इसमें तेरह छंद हैं।)

एक किसान महिला (कुलंबिन)
(1)

शूद्र की पत्नी को सुबह तड़के मुर्गे की पहली बांग के साथ चक्की पर बैठकर अनाज पीसकर आटा बनाना पड़ता है। अनाज पीसते समय वह जो ग्रामीण गीत गाती है, उसकी आवाज़ से उसका पति जाग जाता है और अपने बैल को चराने के लिए ले जाता है। उसे गौशाला साफ करनी पड़ती है, गोबर को टोकरियों में भरकर सिर पर लादकर गोबर के ढेर पर डालना पड़ता है। ज्योति कहती है कि यद्यपि उसमें किसी भी गुण की कमी नहीं है, फिर भी धूर्त ब्राह्मण उसे तिरस्कारपूर्वक 'किसान स्त्री' कहकर पुकारता है।

(2)

वह सूर्योदय के समय ज्वार का आटा गूंथती है और उसे पीट-पीटकर रोटी के टुकड़े बनाती है। (यह मिट्टी का चूल्हा है, जिसमें बीच में एक छेद होता है जहाँ ईंधन के लिए लकड़ी (गोबर आदि) डाली जाती है, और इसके दोनों ओर एक या दो और छेद होते हैं जिन पर खाना पकाने के बर्तन रखे जा सकते हैं। इन्हें 'अवेल' या 'वेल' कहा जाता है। बीच के मुख्य खुले स्थान पर चूल्हा या अन्य खाना पकाने के बर्तन रखे जा सकते हैं। इस प्रकार इन दो या तीन छेदों का उपयोग एक साथ खाना पकाने के लिए किया जा सकता है।) वह किसी भी छेद पर सुविधाजनक रूप से रखे बर्तन में करी पकाती है। खाना पकने के बाद, वह

रोटी के टुकड़े और करी का बर्तन एक टोकरी में रखती है, टोकरी को अपने सिर पर रखती है और खेत की ओर चल पड़ती है। वह अन्य सभी के साथ खेत में काम करती है, और (समय न मिलने के कारण) उनके साथ भोजन नहीं करती, बल्कि घर लौटने पर अपना भोजन करती है। ज्योति कहती हैं कि वह भिखारियों और ब्राह्मणों को अनाज दान करती है और इस प्रकार पृथ्वीदेवों (ब्राह्मणों) का पालन-पोषण करती है।

(3)

शूद्र के घर के आंगन में रस्म के तौर पर झाड़ू लगाना और पानी छिड़कना शायद ही कभी होता है। न ही आंगन में तुलसी का पौधा होता है। शूद्र के पास ऐसे फिजूल के कामों के लिए समय नहीं होता। उसे बाल संवारने का भी समय नहीं मिलता और उसका शरीर पसीने से तर रहता है। उसे हर तरह के दिखावे और नज़ाकत से नफरत है। उसे एक साधारण (घर में बुनी) साड़ी से ही काम चलाना पड़ता है और दलिया और छाछ से ही संतुष्ट रहती है। ज्योति कहती है कि भाट लोग भाट विधवा का मज़ाक उड़ाते हैं और (बिना वजह) उसकी इस दुर्दशा के लिए उसे दोषी ठहराते हैं।

(4)

उसे कमर पर पानी की बाल्टियाँ ढोनी पड़ती हैं और सूखे पत्तों को गोबर में मिलाना पड़ता है। वह अपनी साड़ी को सावधानी से ऊपर उठाती है और नंगे पैरों से गोबर को अच्छी तरह मिलाती है। फिर वह चिलचिलाती धूप में इसे गोबर के उपले बनाती है। यह मेहनती किसान महिला भाट स्त्री की तरह ठंडी छाँव में झूले पर बैठने का सुख नहीं उठा सकती। ज्योति कहती हैं, (ब्राह्मण) ऐसी मेहनती स्त्री को 'किसान स्त्री' कहकर दूसरों पर आधिपत्य जमाते हैं।

(5)

शूद्र स्त्री सिर पर रस्सी से बुने हुए गोबर के उपले लेकर और पीठ पर अपने नन्हे बच्चे को संभाले गली-गली घूम-घूम कर अपना गुजारा चलाती है। वह भाटजी की तरह किसी मूर्ति की पूजा नहीं करती। वह सीधी और गरिमामयी चाल चलती है और बालों में आभूषण पहनती है। ज्योति कहती है कि धूर्त ब्राह्मण उसे अपमानजनक नाम 'किसान स्त्री' से पुकारते हैं, जो किसी भी इंसान का अपमान है।

(6)

वह बुवाई के औजार के पीछे-पीछे चलकर तुअर (एक प्रकार की दाल) बोती है और इस

प्रकार अपने पति की बुवाई में सहायता करती है। वह आंधी हो या मूसलाधार बारिश, हर हाल में अपने पति की निष्ठापूर्वक मदद करती है। वह अपने पति की सहायता के लिए डोरी पकड़ती है और काली मिट्टी में डोरी पर चिह्नित स्थानों पर पौधे लगाती है। ज्योति कहती है कि वह असत्य ब्राह्मण उसे 'किसान स्त्री' कहकर अपमानित करता है, जबकि वास्तव में वह बहुत मेहनती है।

(7)

क्षत्रिय (किसानों) की पत्नियों को अपने पेट को कपड़े से कसकर बांधना पड़ता है और खेतों में उगी घास को निकालना पड़ता है। वह खेत में इतनी मग्न रहती है कि अपने बच्चे को दूध पिलाना भी भूल जाती है, जो दर्द से रो रहा होता है। वह खेत में काम करते समय जब चवाली तोड़ती है तो उन्हें चबाती है और फिर अपने बच्चे को दूध पिलाने जाती है। वह कटी हुई घास बेचकर परिवार के खर्चों में अपना योगदान देती है। ज्योति कहती हैं कि इस प्रकार वह भाट स्त्री को एक सीख देती है।

(8)

क्षत्रिय (किसानों) की पत्नियाँ अपने खेतों में जाकर हंसिया से खरपतवार और घास निकालती हैं। वे खरपतवार निकालकर बैलों को चारे के रूप में खिलाती हैं। बची हुई घास को गठ्ठे में बाँधकर सिर पर रखकर बाज़ार ले जाती हैं। वहाँ से वे खली (तेल के बीजों को पीसकर बनाई गई खली) खरीदती हैं, जिनका उपयोग बैलों के चारे के रूप में किया जाता है। ज्योति कहती हैं कि आलसी ब्राह्मण मेहनती, थकी हुई किसान महिला को अपमानजनक रूप से 'किसान स्त्री' कहकर पुकारता है।

(9)

वह अपने पति को पके हुए भुट्टे काटने और उन्हें ज़मीन में खोदे गए गोलाकार कटाई स्थल (फ्रेम) तक ले जाने में मदद करती है। वह तुरंत उसे साफ करती है और गोबर की पतली परत से ढक देती है। वह भुट्टे से निकले भुट्टे और बैलों द्वारा रौंदे गए भूसे से भरी टोकरियों को तीन टांगों वाले ऊंचे स्टूल पर रखती है ताकि हवा में उन्हें फटका जा सके, और (जब उसका पति उन्हें फटका रहा होता है) वह तेज़ी से खुरदरी झाड़ू से भूसे को भुट्टे के दानों से अलग करती है। वह भूसे में से बचे हुए भुट्टे को ध्यान से इकट्ठा करती है ताकि घर पर सुबह के दलिया के लिए उसे ओखली में कूटा जा सके या चक्की के पत्थरों पर पीसा जा सके। ज्योति कहती है कि एक ब्राह्मण का निकम्मा (कामचोर) मेहनती स्त्री को अपमानजनक रूप से 'किसान स्त्री' कहता है।

(10)

भाट स्त्री खेतों में फसलों को मानव मल (रात का मल) से खाद नहीं देती, बल्कि सोने की अंगूठी और सर्प के आकार का सोने का आभूषण अपने बालों में सजाकर दिखावा करती है। वह गोबर इकट्ठा करने के लिए पशुओं के पीछे नहीं जाती, न ही अपने अहंकार के कारण गोबर के उपले बनाती है। वह शूद्र के घर में अनाज नहीं पीसती, न ही शूद्र के आंगन में पानी छिड़ककर अपनी आजीविका कमाती है। ज्योति कहती हैं कि वह शूद्र के आंगन की सफाई को अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझती है, न ही उसके घर के फर्श पर गोबर की परत बिछाती है।

(11)

ज्योति कहती हैं कि भाट स्त्री शूद्र स्त्री के शरीर पर इत्र या सुगंधित लेप (और तेल) नहीं लगाती, न ही उसकी मालिश करती है और न ही उसे गर्म पानी से नहलाती है। वह शूद्र स्त्री के बाल नहीं संवारती, न ही स्नान के बाद उसका शरीर सुखाती है, न ही उसकी साड़ी और ब्लाउज धोती है। वह उस थाली को साफ नहीं करती जिसमें शूद्र स्त्री ने भोजन किया हो, न ही उसके घर में उसके जूते संभालती है। भाट स्त्री शूद्र के बच्चों की देखभाल करने की कृपा भी नहीं करती, न ही उन्हें दुलारती है।

(12)

भाट स्त्री शूद्रों के खेतों में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम नहीं करती, इसलिए वह उनके खेतों में खड़ी फसल (अनाज की बालियाँ) नहीं काटती। वह अनाज की बालियाँ खलिहान तक नहीं ले जाती, न ही उनसे अनाज की बालियाँ काटती है। वह अनाज और भूसे से भरी टोकरियाँ किसानों को हवा में फटकने के लिए नहीं देती, न ही बैलों द्वारा आंशिक रूप से कुचली हुई अनाज की बालियों को खुरदरी झाड़ू से छानती है। ज्योति कहती हैं कि वह शूद्रों के खेतों में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करने से इनकार करती है, और न ही वह दिखावा करना (या नखरे करना) छोड़ती है।

(13)

भाट स्त्री खेत में हल के पीछे-पीछे नहीं चलती, न ही हल और बैलों द्वारा उछाली गई खरपतवार और घास को हटाती है। वह मिट्टी के ढेलों को नहीं तोड़ती, न ही गोबर की टोकरियाँ सिर पर ढोती है। वह फसल में घास और अन्य खरपतवारों को हंसिया से नहीं काटती, न ही बैलों को हरा चारा खिलाती है, और न ही घास के गट्ठे लेकर बाजार में बेचती है। ज्योति कहती है कि भाट स्त्री शूद्रों के खेत में मजदूर के रूप में काम करने से घृणा करती है और आलस्य और दिखावे में लिप्त रहती है।

भारत में शिशु विवाह पर श्री बी.एम. मालाबारी द्वारा लिखित नोट संख्या 1 पर जोतीराव गोविंदराव फुले की राय।

मैं श्री बी. एम. मालाबारी के सराहनीय प्रयास से सहमत हूँ और आशा करता हूँ कि हमारी प्रबुद्ध सरकार इस देश के भ्रमित लोगों की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए कुछ कदम उठाएगी। यद्यपि श्री एम. बी. मालाबारी आर्य शास्त्रकारों द्वारा गढ़े गए हमारे रीति-रिवाजों और परंपराओं के प्रत्यक्ष बोझ तले दबे नहीं हैं, फिर भी उन्होंने इस विषय को इतनी उत्कृष्ट ढंग से प्रस्तुत किया है कि शूद्रथी-शूद्र और ब्राह्मण विधवाएँ भविष्य में निःसंदेह उन्हें धन्यवाद देंगी। अब मैं इस देश के मध्य और निम्न वर्गों, दलित मूल निवासियों के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूँ। विवाह के दौरान, यदि दूल्हा-दुल्हन के बीच कोई मामूली विवाद हो जाता है, तो बेचारी लड़की को जीवन भर कष्ट भोगना पड़ता है। विवाह के बाद, यदि उसके परिवार में कोई दोष लड़के के पिता के संज्ञान में आ जाता है, तो निर्दोष लड़की को अछूत मान लिया जाता है। यदि लड़का लड़की से छोटा होता है, तो उसे ठीक से भोजन, वस्त्र और देखभाल नहीं मिलती, बल्कि उसे अपने धनी माता-पिता के साथ रहने की अनुमति भी नहीं दी जाती। यदि ससुर अज्ञानी और गरीब हो, तो लड़की को ठीक से पोषण न मिलने के कारण उसका विकास रुक जाता है। संक्षेप में, उसे दिन-रात इतना काम करना पड़ता है जितना अमेरिकी गुलामों को भी नहीं करना पड़ता। इस प्रकार उस पर इतना असहनीय अत्याचार होता है कि वह आत्महत्या करके अपनी जान देने के लिए विवश हो जाती है; और इस अपराध को अक्सर गांव के पटेल, झगड़ालू (कलकर्णी) और पुलिसकर्मियों को रिश्वत देकर दबा दिया जाता है। इस प्रकार, वर पक्ष के कई गरीब माता-पिता विवाह के लिए कर्ज लेकर अपनी बहुओं की असमय मृत्यु के कारण बर्बाद हो जाते हैं। इसके अलावा, वर, जब होश में आता है, तो अपनी पत्नी को पसंद नहीं करता और अपनी पसंद की किसी और से शादी कर लेता है। इस आदत के कारण, वह एक साथ दो, तीन या चार पत्नियां रखने लगता है, और इस प्रकार अपने पूरे परिवार को असंतुष्ट, गाली-गलौज करने वाला और झगड़ालू बना देता है। ये अज्ञानी पत्नियां न केवल एक-दूसरे को जहर देने के लिए विवश होती हैं, बल्कि कभी-कभी अपने पति को भी मार देती हैं। बंगाल के प्रबुद्ध हिंदू ने विश्वविद्यालय स्नातकों के लिए उत्कृष्ट सुझाव दिए हैं, और उनके अनुसार ये सुझाव शिक्षित वर्ग के लिए एक अच्छी शुरुआत साबित हो सकते हैं। लेकिन मेरा मानना है कि उनके सुझाव सार्वभौमिक नहीं हैं और शूद्रों और अति-शूद्रों के सभी वर्गों पर लागू नहीं होते, क्योंकि शूद्रों में से बहुत कम ही विश्वविद्यालय जाते हैं और अति-शूद्रों को तो स्थानीय भाषा के विद्यालयों में भी प्रवेश नहीं मिलता और उन्हें उच्च वर्ग के विद्यार्थियों के साथ बैठकर सीखने का अवसर नहीं मिलता। अंततः, जब तक हमारी बुद्धिमान सरकार कुछ अनिवार्य उपाय नहीं अपनाती, अज्ञानी, मध्यम और निम्न वर्ग के लोग सही राह पर नहीं लौटेंगे, क्योंकि तथाकथित उच्च वर्ग के हिंदू, जो सरकार के अधीन जिम्मेदार पदों पर आसीन हैं, अपनी धूर्तता और चालाकी से उन्हें धर्म और राजनीति के मामलों में जानबूझकर गुमराह कर रहे हैं। इसलिए, मेरा सुझाव है कि सरकार को यह नियम बनाना चाहिए कि उन्नीस वर्ष से कम आयु के लड़कों और ग्यारह वर्ष से कम आयु की लड़कियों

को विवाह करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यदि वे विवाह करते हैं, तो विवाहित जोड़ों के माता-पिता पर कुछ उचित कर लगाया जा सकता है और इस प्रकार प्राप्त धन का उपयोग मध्यम और निम्न वर्ग के हिंदुओं की शिक्षा में किया जाना चाहिए। लेकिन शिक्षा ब्राह्मण शिक्षकों के माध्यम से नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि शिक्षा देते समय वे विद्यार्थियों के मन में गलत धार्मिक विचार पैदा करते हैं और उन्हें गुमराह करते हैं (यहाँ तक कि सहायक राजाओं, सिंधिया, होल्कर और अन्य को भी, खुलेआम मनगढ़ंत धर्म के बहाने धोखा दिया जाता है और किसानों से मनमाने ढंग से कर वसूला जाता है, उन्हें समय पर भत्ते नहीं दिए जाते)। लेकिन यह प्रबल आशा है कि बड़ौदा के वर्तमान शासक, महाराज, अज्ञानी किसानों को शिक्षित करने और उनकी स्थिति सुधारने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे, क्योंकि महाराज ने अच्छी और सुदृढ़ अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की है।

श्री बी. एम. मालाबारी द्वारा जबरन विधवापन पर लिखे गए नोट संख्या II पर जोत्तेराव गोविंदराव फुले की राय।

अब मैं ब्राह्मण महिलाओं पर थोपी गई विधवापन के सबसे संवेदनशील विषय पर बात करना चाहता हूँ। आंशिक आर्य व्यवस्था पुरुषों को बहुविवाह की अनुमति देती है, जिसके कारण वे दुष्टता की नई आदतों में पड़ जाते हैं। जब उनकी कानूनी पत्नियों से उनकी वासना संतुष्ट हो जाती है, तो वे नए अनुभव के लिए सार्वजनिक महिलाओं के घरों में जाने लगते हैं। फिर उन्हें उनसे यौन रोग हो जाते हैं और उन्हें अपने और अपनी पत्नियों के लिए अत्यधिक खर्च पर चिकित्सा सहायता लेनी पड़ती है। जब चिकित्सा उपचार से उन्हें और उनकी पत्नियों को कोई लाभ नहीं होता, तो वे संतान प्राप्ति की सारी आशा खो देते हैं। जीवन की इस दयनीय स्थिति में यदि व्यभिचारी पति अपनी पत्नी को रात में बाहर जाते हुए पाता है, तो वह उस पर कुटिल मार्ग अपनाने का संदेह करता है और उसे कठोर दंड देकर घर से निकाल देता है। बुढ़ापे में अपने चरित्र पर लगे कलंक को मिटाने के लिए, वह निर्लज्ज व्यक्ति धार्मिक बन जाता है और अपनी संतुष्टि के लिए मंदिरों में पत्थर की मूर्तियों की पूजा करने के उद्देश्य से सार्वजनिक वेश्याओं को नृत्य और गायन के लिए किराए पर लेता है। इस दुष्ट व्यक्ति की मृत्यु के बाद, उसकी युवा और सुंदर पत्नी को उसी आर्य संस्था द्वारा पुनर्विवाह करने की अनुमति नहीं दी जाती। उसके आभूषण छीन लिए जाते हैं; उसके निकट संबंधी जबरन उसके बाल मुंडवा देते हैं; उसे भरपेट भोजन नहीं दिया जाता; उसे उचित वस्त्र नहीं पहनाए जाते; उसे आनंद समारोहों, विवाहों या धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाती। वास्तव में, उसे सभी सांसारिक सुखों से वंचित कर दिया जाता है, बल्कि उसे अपराधी या नीच जानवर से भी बदतर समझा जाता है।

इसके अलावा, आर्यन संस्था ब्राह्मण पुरुषों को अपनी पहली पत्नी के जीवित रहते हुए भी निम्न वर्ग की लड़कियों से विवाह करने का आदेश देती है; परन्तु उनकी सगी बहन को अपने पहले पति की मृत्यु के बाद पुनर्विवाह करने की मनाही है। इस प्रकार के पक्षपातपूर्ण

और अन्यायपूर्ण प्रतिबंध असहाय आर्यन विधवा को भयानक और हृदयविदारक अत्याचार करने के लिए विवश कर देते हैं। उपरोक्त कथन को सिद्ध करने के लिए मैं निम्नलिखित उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। (मेरे एक ब्राह्मण मित्र, राव साहब सुदाशिवे बुल्लाल गौंडे, जो इनाम आयोग में अधिकारी थे, ने अपने घर में काशीबाई नाम की एक ब्राह्मण विधवा को रसोइया के रूप में नियुक्त किया था। बेचारी काशीबाई एक सभ्य और सुंदर युवती थी, जो एक सम्मानित परिवार से थी। वह एक पवित्र महिला थी। उसने कई महीनों तक उनके घर में काम किया। लेकिन उनके पड़ोस में एक चतुर और धूर्त ब्राह्मण जाति का शास्त्रीभूत रहता था, जिसने इस भोली-भाली महिला को बहकाने की पूरी कोशिश की। काशीबाई ने पहले तो उसके प्रलोभन का विरोध किया, लेकिन अंततः वह उसकी वासना का शिकार हो गई और तुरंत गर्भवती हो गई। बाद में अपने प्रेमी के बहकावे में आकर उसने गर्भपात करने के लिए कई जहरीली दवाएँ लीं, लेकिन उसके सभी प्रयास विफल रहे। नौ महीने पूरे होने के बाद, काशीबाई ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया और अपनी बदनामी के कारण उसने उस निर्दोष शिशु की चाकू से हत्या कर दी और शव को अपने मालिक के घर के पीछे कुएँ में फेंक दिया। दो दिन बाद उसे संदेह के आधार पर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और अदालत में मुकदमा चलाया गया।) पुणे की सत्र न्यायालय में काशीबाई को आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई गई थी। यह अपराध उन्होंने इसलिए किया था ताकि ब्राह्मण समुदाय में उनकी छवि खराब न हो। उनके मामले ने आर्यन संस्था के अन्यायपूर्ण और पक्षपाती स्वरूप को जनता के सामने उजागर किया और लोग भयभीत हो गए। यद्यपि मेरे पास खर्च उठाने के लिए पर्याप्त साधन नहीं थे, फिर भी काशीबाई के मुकदमे की समाप्ति के तुरंत बाद मुझे पुणे स्थित अपने परिसर में ब्राह्मण समुदाय के लिए एक अनाथालय स्थापित करना पड़ा। संलग्न मुद्रित सूचनाओं की प्रति तब उन गलियों के कोनों की दीवारों पर चिपकाई गई थी जहाँ ब्राह्मण निवास करते हैं। इसकी शुरुआत से लेकर अब तक पैंतीस गर्भवती विधवाएँ उनके घर आईं और उन्होंने बच्चों को जन्म दिया, जिनमें से पाँच जीवित हैं और तीस की मृत्यु गर्भ में जहरीली दवाओं के सेवन से हुई, जो माताओं ने गर्भावस्था को छिपाने के लिए ली होंगी। इस दयनीय व्यवस्था के कारण कई प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवारों की सुंदर और असहाय अज्ञानी युवा विधवाएँ निजी और सार्वजनिक वेश्यावृत्ति करने लगी हैं। यह कितना घृणित और अपमानजनक है! आर्यन धार्मिक व्यवस्था, जो ब्राह्मण विधवाओं को इतने दयनीय और निर्लज्ज जीवन जीने के लिए विवश करती है कि शर्म भी उसके विवरण में दखल देने से कतराती है! अंत में, मैं आपकी प्रबुद्ध अंग्रेजी सरकार से अत्यंत आदरपूर्वक निवेदन करता हूँ कि आर्यन धार्मिक व्यवस्था द्वारा असहाय महिलाओं पर थोपे गए जबरन विधवापन के अत्याचार को समाप्त किया जाए। अतः, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि दुर्भाग्यपूर्ण ब्राह्मण विधवाओं की दाढ़ी बनाने के लिए किसी भी नाई को अनुमति न दी जाए। पक्षपातपूर्ण आर्यन धार्मिक व्यवस्था से यह स्पष्ट है कि जब यह विधवाओं को पुनर्विवाह करने से रोकती है, तो विधुरों को पुनर्विवाह करने की अनुमति क्यों दी जानी चाहिए? यदि विधुरों को यह पक्षपात दिखाया जाता है, तो बेचारी विधवाओं को भी पुनर्विवाह करने की अनुमति देना अनिवार्य हो जाएगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वार्थी और दुष्ट विधि निर्माताओं ने नारी जाति के प्रति दुर्भावना से ऐसे अन्यायपूर्ण और निरर्थक प्रावधान अपने शास्त्रों में जोड़े होंगे।

शिक्षा आयोग को संबोधित ज्ञापन

शिक्षा आयोग की सूचना के लिए एक वक्तव्य

शिक्षा के क्षेत्र में मेरा अनुभव मुख्यतः पुणे और आसपास के गांवों तक ही सीमित है। लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व, मिशनरियों ने पुणे में एक महिला विद्यालय की स्थापना की थी, लेकिन उस समय लड़कियों के लिए कोई स्वदेशी विद्यालय नहीं था। इसलिए, लगभग 1854 में मुझे ऐसा विद्यालय स्थापित करने की प्रेरणा मिली, जिस पर मैंने और मेरी पत्नी ने कई वर्षों तक मिलकर काम किया। कुछ समय बाद, मैंने इस विद्यालय का प्रबंधन शिक्षित स्थानीय लोगों की एक समिति को सौंप दिया। उनके मार्गदर्शन में, शहर के विभिन्न हिस्सों में दो और विद्यालय खोले गए। महिला विद्यालयों की स्थापना के एक वर्ष बाद, मैंने निम्न वर्गों, विशेषकर महार और मांग समुदायों के लिए एक स्वदेशी मिश्रित विद्यालय भी स्थापित किया। बाद में इन वर्गों के लिए दो और विद्यालय जोड़े गए। दिवंगत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष सर एर्स्किन पेरी और तत्कालीन सरकारी सचिव श्री लम्सडेन ने महिला विद्यालयों का दौरा किया और इस पहल से बहुत प्रसन्न हुए तथा मुझे शॉल भेंट किए। मैंने लगभग 9 से 10 वर्षों तक इन स्कूलों पर काम किया, लेकिन कुछ परिस्थितियों के कारण, जिनका यहाँ विस्तार से वर्णन करना अनावश्यक है, मैंने काम छोड़ दिया। ये महिला विद्यालय आज भी मौजूद हैं, जिन्हें श्रीमती मिशेल के प्रबंधन में शिक्षा विभाग की समिति ने अपने अधीन ले लिया है। महार और मांग जैसे निम्न वर्गों के लिए भी एक विद्यालय वर्तमान में मौजूद है, लेकिन उसकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। मैंने कुछ वर्षों तक एक मिशन महिला बोर्डिंग स्कूल में भी अध्यापन किया है। मेरा प्राथमिक अनुभव इन्हीं स्कूलों से संबंधित रहा है। मैंने इस प्रेसीडेंसी में उपलब्ध प्राथमिक शिक्षा पर भी कुछ ध्यान दिया है और शिक्षा विभाग के निम्न विद्यालयों में कार्यरत प्रणाली और कर्मचारियों के बारे में अपनी राय बनाने के अवसर प्राप्त किए हैं। मैंने कुछ वर्ष पहले एक मराठी पुस्तिका लिखी थी जिसमें ब्राह्मणों की धार्मिक प्रथाओं का पर्दाफाश किया गया था और संयोगवश, अन्य बातों के साथ-साथ, उसमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली की भी आलोचना की गई थी, जो उच्च शिक्षा के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराकर केवल ब्राह्मणों और उच्च वर्गों को ही शिक्षित करती है और आम जनता को अज्ञानता और गरीबी में डूबा रहने देती है। मैंने पुस्तक में व्यक्त विचारों को उससे संलग्न अंग्रेजी प्रस्तावना में संक्षेप में प्रस्तुत किया है, जिसके कुछ अंश मैं यहां पुनः प्रस्तुत कर रहा हूं क्योंकि वे वर्तमान जांच से संबंधित हैं;

"शायद, इस संकट की स्थिति पैदा करने में सरकार का कुछ दोष जायज़ है। उच्च शिक्षा के लिए अधिक धन और बेहतर सुविधाएं प्रदान करने और आम जनता की उपेक्षा करने के पीछे उनके जो भी उद्देश्य रहे हों, यह सर्वविदित है कि यह न्यायसंगत नहीं है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि भारतीय साम्राज्य के राजस्व का अधिकांश भाग किसानों के श्रम से, उनके पसीने से प्राप्त होता है। उच्च और धनी वर्ग राज्य के खजाने में नगण्य या नगण्य योगदान

देते हैं। एक सुशिक्षित अंग्रेज लेखक कहते हैं कि 'हमारी आय अधिशेष लाभ से नहीं, बल्कि पूंजी से, विलासिता से नहीं, बल्कि सबसे बुनियादी ज़रूरतों से प्राप्त होती है। यह पाप और आंसुओं का फल है।'"

"सरकार द्वारा इस प्रकार जुटाए गए राजस्व का एक बड़ा हिस्सा उच्च वर्गों की शिक्षा पर खर्च करना, जबकि इसका लाभ केवल वही लोग उठाते हैं, न्यायसंगत या उचित नहीं है। इस आभासी उच्च स्तरीय शिक्षा को संरक्षण देने का उनका उद्देश्य ऐसे विद्वानों को तैयार करना प्रतीत होता है, जो समय आने पर बिना पैसे और बिना कीमत के ज्ञान का विक्रय करेंगे। उनका कहना है कि यदि हम उच्च वर्गों के मन में ज्ञान के प्रति प्रेम जगा सकें, तो इसका परिणाम यह होगा कि उन व्यक्तियों का नैतिक स्तर ऊंचा होगा, ब्रिटिश सरकार के प्रति उनका स्नेह बढ़ेगा और वे अपने देशवासियों में उन बौद्धिक लाभों को फैलाने की अदम्य इच्छा रखेंगे जो उन्हें प्राप्त हुए हैं।"

सरकार के इन उद्देश्यों के संबंध में, जिनका उल्लेख ऊपर लेखक ने किया है, कहते हैं कि हमने इससे अधिक परोपकारी और आदर्शवादी दर्शन कभी नहीं सुना। पश्चिमी जगत में जन ज्ञान के माध्यम से आए अद्भुत परिवर्तनों को देखने वाले लोगों का प्रस्ताव है कि भारत के दो सौ करोड़ लोगों की कमियों को दूर करने के लिए, केवल उच्च वर्गों को ही उच्च शिक्षा प्रदान की जाए। हम भारतीय विश्वविद्यालयों के मित्रों से निवेदन करते हैं कि वे अपने अनुभव के आधार पर अपने सिद्धांत की सत्यता का एक उदाहरण प्रस्तुत करें। उन्होंने कई धनी परिवारों के बच्चों को शिक्षित किया है और अपने कुछ छात्रों के सांसारिक भविष्य को काफी हद तक बेहतर बनाने में सहायक रहे हैं। लेकिन उन्होंने अपने साथी मनुष्यों के उत्थान के महान कार्य में क्या योगदान दिया है? उन्होंने जनमानस पर किस प्रकार प्रभाव डालना शुरू किया है? क्या उनमें से किसी ने अपने घर या अन्य स्थानों पर अपने कम भाग्यशाली या कम बुद्धिमान देशवासियों को शिक्षित करने के लिए कक्षाएं आयोजित की हैं? या उन्होंने अपने ज्ञान को एक निजी उपहार के रूप में अपने पास ही रखा है, ताकि अज्ञानी लोगों के संपर्क में आने से वह दूषित न हो? क्या यह अशिष्टता है? क्या उन्होंने किसी भी तरह से जनहित को बढ़ावा देने और परोपकार का प्रतिफल देशभक्ति से देने की तत्परता दिखाई है? — यह किस आधार पर कहा जाता है कि जनता के नैतिक और बौद्धिक कल्याण को बढ़ावा देने का सबसे अच्छा तरीका उच्च वर्गों में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाना है? यदि यह तर्कसंगत होता, तो यह अभिजात वर्ग के लिए एक शानदार तर्क होता। राष्ट्रीय खुशहाली में वृद्धि दिखाने के लिए, केवल कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या और शैक्षणिक डिग्रियों की सूची का उल्लेख करना ही पर्याप्त होगा। प्रत्येक रैंगलर को राष्ट्रीय हितैषी माना जाएगा; और डीन और प्रॉक्टर का अस्तित्व, खेल कानूनों और दस पाउंड के मताधिकार की तरह, संविधान के सर्वोत्तम हितों से जुड़ा होगा।

उच्च स्तरीय शिक्षा की सरकारी व्यवस्था की सबसे स्पष्ट कमियों में से एक यह रही है कि ब्राह्मणों का लगभग सभी उच्च पदों पर एकाधिकार है। यदि रैयतों का कल्याण सर्वोपरि है, यदि सरकार का कर्तव्य है कि वह अनेक प्रकार के कुप्रथाओं पर अंकुश लगाए, तो उसे

इस एकाधिकार को धीरे-धीरे कम करना चाहिए ताकि अन्य जातियों के कुछ लोगों को भी सार्वजनिक सेवाओं में प्रवेश मिल सके। शायद कुछ लोग यह कह सकते हैं कि शिक्षा की वर्तमान स्थिति में यह संभव नहीं है। हमारा एकमात्र उत्तर यह है कि यदि सरकार उच्च शिक्षा पर, जो स्वयं अपना ध्यान रख सकती है, थोड़ा कम ध्यान दे और जनमानस की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे, तो हर तरह से योग्य और शायद नैतिकता और शिष्टाचार में कहीं बेहतर व्यक्तियों का समूह तैयार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

"इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य केवल अपने शूद्र भाइयों को यह बताना ही नहीं है कि ब्राह्मणों ने उन्हें किस प्रकार धोखा दिया है, बल्कि सरकार को उस हानिकारक उच्चवर्गीय शिक्षा प्रणाली से अवगत कराना भी है, जिसका अब तक लगातार पालन किया जा रहा है और जिसे बंगाल के वर्तमान लेफ्टिनेंट-गवर्नर सर जॉर्ज कैंपबेल जैसे राजनेता, व्यापक सार्वभौमिक सहानुभूति के साथ, सरकार के हितों के लिए अत्यंत हानिकारक और नुकसानदायक पा रहे हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि सरकार जल्द ही अपनी गलती को समझेगी, लेखकों या उच्चवर्गीय दृष्टिकोण रखने वाले लोगों पर कम भरोसा करेगी और मेरे शूद्र भाइयों को ब्राह्मणों द्वारा सांप के कुंडलियों की तरह बुने गए बंधन से मुक्त कराने का बीड़ा स्वयं उठाएगी। मेरे प्रत्येक शूद्र भाई, जिन्होंने कोई शिक्षा प्राप्त की है, का यह कर्तव्य है कि वे सरकार के समक्ष अपने साथी मनुष्यों की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत करें और ब्राह्मणों के बंधन से स्वयं को मुक्त कराने के लिए अपनी पूरी शक्ति से प्रयास करें। शिक्षा के लिए विद्यालय होने चाहिए। हर गाँव में शूद्रों के लिए शिक्षा दी जाए; लेकिन सभी ब्राह्मण स्कूल-प्रबंधकों को हटा दिया जाए! शूद्र देश की जीवनरेखा हैं, और सरकार को उनकी आर्थिक और राजनीतिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए केवल उन्हीं की ओर देखना चाहिए, न कि ब्राह्मणों की ओर। यदि शूद्रों के हृदय और मन को प्रसन्न और संतुष्ट कर दिया जाए, तो ब्रिटिश सरकार को भविष्य में उनकी वफादारी के बारे में कोई चिंता नहीं होनी चाहिए।

प्राथमिक शिक्षा

इस प्रेसीडेंसी में आम जनता की प्राथमिक शिक्षा की घोर उपेक्षा हुई है, इसमें कोई संदेह नहीं है। हालांकि प्राथमिक विद्यालयों की संख्या कुछ वर्षों पहले की तुलना में अब अधिक है, फिर भी वे समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं। सरकार शिक्षा के लिए विशेष निधि एकत्रित करती है, और यह खेदजनक है कि इस निधि का उपयोग उन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता जिनके लिए इसे एकत्रित किया जाता है। कहा जाता है कि इस प्रेसीडेंसी के लगभग नौ-दसवें गाँव, या लगभग 10 लाख बच्चे, प्राथमिक शिक्षा की किसी भी व्यवस्था से वंचित हैं। उनकी गरीबी, आत्मनिर्भरता की कमी और विद्वान एवं बुद्धिमान वर्गों पर उनकी पूर्ण निर्भरता का एक बड़ा कारण किसानों की शिक्षा की यह दयनीय स्थिति है। यहां तक कि शहरों में भी ब्राह्मण, पुरभू, वंशानुगत वर्ग, जो आम तौर पर कलम से अपना जीवन यापन करते हैं, और व्यापारी वर्ग प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। किसान और अन्य वर्ग, सामान्यतः, इसका लाभ नहीं उठाते हैं। बाद वाले वर्गों के कुछ बच्चे

प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में तो पढ़ते हैं, लेकिन गरीबी और अन्य कारणों से वे लंबे समय तक विद्यालय में नहीं रह पाते। उन्हें विद्यालय में बने रहने के लिए कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं मिलता, इसलिए वे स्वाभाविक रूप से कोई भी छोटा-मोटा काम या अन्य नौकरी मिलते ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। गांवों में भी, अधिकांश किसान वर्ग अत्यधिक गरीबी के कारण और अपने बच्चों से पशुपालन और खेतों की देखभाल करवाने के कारण शिक्षा से दूर रहते हैं। विद्यालयों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ, छात्रवृत्ति और अर्धवार्षिक या वार्षिक पुरस्कारों के रूप में विशेष प्रोत्साहन देना अत्यंत आवश्यक है ताकि उन्हें अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और उनमें सीखने की रुचि पैदा की जा सके। मेरा मानना है कि आम जनता के लिए प्राथमिक शिक्षा एक निश्चित आयु तक, कम से कम 12 वर्ष तक, अनिवार्य कर दी जानी चाहिए। मुसलमान भी इन विद्यालयों से दूर रहते हैं, क्योंकि वे किसी न किसी रूप में मराठी या अंग्रेजी के प्रति कोई रुचि नहीं दिखाते। कुछ मुसलमान प्राथमिक विद्यालय हैं जहाँ उनकी अपनी भाषा पढ़ाई जाती है। जातिगत भेदभाव के कारण महार, मांग और अन्य निम्न वर्गों को लगभग सभी विद्यालयों से वंचित रखा जाता है, क्योंकि उन्हें उच्च जातियों के बच्चों के साथ बैठने की अनुमति नहीं है। परिणामस्वरूप, सरकार द्वारा इनके लिए विशेष विद्यालय खोले गए हैं। लेकिन ये केवल बड़े शहरों में ही मौजूद हैं। पुणे में, जिसकी आबादी 5,000 से अधिक है, केवल एक ही विद्यालय है जिसमें 30 से कम छात्र पढ़ते हैं। शिक्षा अधिकारियों के लिए यह स्थिति बिल्कुल भी सराहनीय नहीं है। महारानी की घोषणा के वादे के तहत, मैं निवेदन करता हूँ कि महार, मांग और अन्य निम्न वर्गों के लिए, जहाँ उनकी संख्या पर्याप्त है, अलग विद्यालय होने चाहिए, क्योंकि जातिगत भेदभाव के कारण उन्हें अन्य विद्यालयों में पढ़ने की अनुमति नहीं है। शिक्षा की वर्तमान स्थिति में, परिणाम आधारित भुगतान प्रणाली गरीब और अज्ञानी लोगों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं है, क्योंकि उनमें अभी तक शिक्षा के प्रति कोई रुचि पैदा नहीं हुई है। मुझे नहीं लगता कि कोई भी शिक्षक इन लोगों के बीच अपने दम पर स्कूल खोलने का बीड़ा उठाएगा, क्योंकि इससे उसका गुजारा नहीं चल पाएगा। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सरकारी स्कूल और विशेष प्रोत्साहन तब तक आवश्यक हैं जब तक कि उनमें इस तरह की रुचि पैदा न हो जाए। प्रेसिडेंसी में मौजूद कुछ सरकारी प्राथमिक स्कूलों के संबंध में, मैंने पाया है कि उनमें दी जाने वाली प्राथमिक शिक्षा बिल्कुल भी संतोषजनक या सुदृढ़ नहीं है। यह प्रणाली अपूर्ण है क्योंकि यह विद्यार्थियों के भविष्य के करियर में व्यावहारिक और उपयोगी साबित नहीं होती। यदि इसमें ऐसे सुधार किए जाएं जिनसे भविष्य में इसकी उपयोगिता सुनिश्चित हो, तो इस प्रणाली को समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जा सकता है। वर्तमान में उपयोग की जा रही शिक्षण प्रणाली और शिक्षा के वर्तमान पाठ्यक्रम दोनों में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है।

(क) प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक लगभग सभी ब्राह्मण हैं; उनमें से कुछ सामान्य प्रशिक्षण महाविद्यालय से हैं, शेष सभी अप्रशिक्षित हैं। उनका वेतन बहुत कम है, शायद ही कभी 10 रुपये से अधिक होता है, और उनकी योग्यता भी बहुत कम है। लेकिन आम तौर पर वे सभी अव्यावहारिक होते हैं, और उनके अधीन पढ़ने वाले बच्चे आम तौर पर निष्क्रिय

आदतें अपना लेते हैं और अपने पैतृक या अन्य कठिन या स्वतंत्र व्यवसायों से बचने के लिए नौकरी पाने की कोशिश करते हैं। मेरा मानना है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को यथासंभव कृषि वर्ग से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जो उनके साथ सहजता से घुलमिल सकेंगे और उनकी जरूरतों और इच्छाओं को ब्राह्मण शिक्षक की तुलना में कहीं बेहतर समझ सकेंगे, जो आम तौर पर धार्मिक पूर्वाग्रहों के कारण खुद को अलग-थलग रखते हैं। इसके अलावा, ये अन्य वर्गों के शिक्षकों की तुलना में जनता पर अधिक लाभकारी प्रभाव डालेंगे, और आवश्यकता पड़ने पर हल या बढ़ई की कुल्हाड़ी पकड़ने में शर्म महसूस नहीं करेंगे, और समाज के निचले वर्गों के साथ आसानी से घुलमिल सकेंगे। उनके प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सामान्य विषयों के अलावा कृषि और स्वच्छता का प्रारंभिक ज्ञान भी शामिल होना चाहिए। अप्रशिक्षित शिक्षकों को, जब तक वे पूरी तरह से कुशल न हों, कुशल प्रशिक्षित शिक्षकों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। बेहतर श्रेणी के शिक्षकों को प्राप्त करने और उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए, उन्हें बेहतर वेतन दिया जाना चाहिए। उनका वेतन 12 रुपये से कम नहीं होना चाहिए और बड़े गांवों में कम से कम 15 या 20 रुपये होना चाहिए। उन्हें ग्राम प्रशासन में ग्राम लेखा परीक्षक, संपत्ति पंजीकरण अधिकारी, पोस्टमास्टर या डाक विक्रेता के रूप में शामिल करने से उनकी स्थिति में सुधार होगा और इस प्रकार वे अपने आसपास के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकेंगे। बड़ी संख्या में छात्रों को उत्तीर्ण कराने वाले ग्राम विद्यालयों के शिक्षकों को भी उनके वेतन के अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में कुछ विशेष भत्ता दिया जाना चाहिए।

(ख) शिक्षा पाठ्यक्रम में मोदी और बलबोध पढ़ना-लिखना, लेखा-जोखा, सामान्य इतिहास, भूगोल और व्याकरण का बुनियादी ज्ञान, कृषि का प्रारंभिक ज्ञान और नैतिक कर्तव्यों एवं स्वच्छता पर कुछ पाठ शामिल होने चाहिए। ग्राम विद्यालयों में अध्ययन बड़े गांवों और शहरों के विद्यालयों की तुलना में कम हो सकता है, लेकिन व्यावहारिक शिक्षा कम नहीं होनी चाहिए। कृषि पाठों के साथ-साथ, एक छोटा मॉडल फार्म, जहां विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा दी जा सके, एक निश्चित लाभ होगा और यदि वास्तव में कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया जाए, तो देश के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। प्राथमिक और अंग्रेजी भाषा के विद्यालयों में प्रयुक्त पाठ्यपुस्तकों को संशोधन और पुनर्लेखन की आवश्यकता है क्योंकि वे व्यावहारिक और प्रगतिशील नहीं हैं। तकनीकी शिक्षा, नैतिकता, स्वच्छता, कृषि और कुछ उपयोगी कलाओं के पाठों को प्रगतिशील क्रम में इनमें समाहित किया जाना चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों में उपकर देने वाले और उपकर न देने वाले दोनों ही माता-पिता के बच्चों से 1 से 2 अंस शुल्क लिया जाना चाहिए।

(ग) इन प्राथमिक विद्यालयों की निगरानी करने वाली संस्था भी अत्यंत दोषपूर्ण और अपर्याप्त है। उप निरीक्षक का वर्ष में एक बार दौरा शायद ही कोई सार्थक लाभ दे पाता है। इन सभी विद्यालयों का निरीक्षण कम से कम त्रैमासिक रूप से, यदि संभव हो तो इससे अधिक बार किया जाना चाहिए। मैं यह भी सुझाव देना चाहूंगा कि इन विद्यालयों का दौरा अन्य समयों पर और बिना किसी पूर्व सूचना के किया जाए। जिला या ग्राम अधिकारियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि उन पर अनेक प्रकार के दायित्व

होते हैं और वे शायद ही कभी इन विद्यालयों का दौरा करने का समय निकाल पाते हैं, और जब वे दौरा करते भी हैं, तो उनकी जांच अनिवार्य रूप से बहुत सतही और अपूर्ण होती है। यूरोपीय निरीक्षक का पर्यवेक्षण भी समय-समय पर अत्यंत वांछनीय है, क्योंकि इससे शिक्षकों पर सामान्यतः अधिक प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने में सहायता मिलेगी।

(घ) प्राथमिक विद्यालयों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

(1) स्वदेशी विद्यालयों का उचित उपयोग करके तथा उन्हें प्रशिक्षित एवं प्रमाणित शिक्षकों द्वारा संचालित करके, उन्हें उदार अनुदान सहायता प्रदान करके।

(2) स्थानीय उपकर निधि का आधे से अधिक भाग केवल प्राथमिक शिक्षा के लिए आवंटित करके।

(3) किसी वैधानिक अधिनियम के तहत नगरपालिकाओं को अपनी-अपनी सीमाओं के भीतर सभी प्राथमिक विद्यालयों को बनाए रखने के लिए बाध्य करके।

(4) प्रांतीय या शाही निधियों से पर्याप्त अनुदान द्वारा।

विद्यार्थियों को पुरस्कार और छात्रवृत्तियाँ तथा शिक्षकों को प्रति छात्र भत्ता या अन्य भत्ते प्रोत्साहन स्वरूप देने से ये विद्यालय अधिक कुशल बनेंगे। बड़े शहरों की नगरपालिकाओं से उनके क्षेत्र में स्थित प्राथमिक विद्यालयों पर होने वाले व्यय का पूरा हिस्सा वहन करने का अनुरोध किया जाना चाहिए। परन्तु किसी भी स्थिति में इनका प्रबंधन पूर्णतः उन्हें नहीं सौंपा जाना चाहिए। ये विद्यालय शिक्षा विभाग के पर्यवेक्षण में होने चाहिए। नगरपालिकाओं को शिक्षा विभाग के नियमों के अनुसार संचालित होने वाले माध्यमिक और निजी अंग्रेजी विद्यालयों को भी अनुदान देना चाहिए, बशर्ते उनके पास पर्याप्त निधि हो। यह अनुदान प्रति वर्ष उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए। नगरपालिका निधि से इन अंशदानों को वैधानिक अधिनियम द्वारा अनिवार्य किया जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा निधि का प्रशासन सामान्यतः लोक शिक्षा निदेशक के हाथों में होना चाहिए। परन्तु यदि स्थानीय या जिला समितियों में शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती है, तो कलेक्टर या लोक शिक्षा निदेशक के मार्गदर्शन में इन निधियों को सुरक्षित रूप से उन्हें सौंपा जा सकता है। वर्तमान में, स्थानीय बोर्डों में पटेल, इनामदार, सुरदार आदि जैसे अज्ञानी और अशिक्षित लोग शामिल हैं, जो निधियों पर किसी भी प्रकार का बुद्धिमानीपूर्ण नियंत्रण रखने में सक्षम नहीं होंगे।

स्वदेशी स्कूल

शहरों, कस्बों और कुछ बड़े गांवों में, विशेषकर जहां ब्राह्मण आबादी अधिक है, स्वदेशी विद्यालय काफी संख्या में मौजूद हैं। इस प्रेसीडेंसी में सार्वजनिक शिक्षा की नवीनतम रिपोर्टों से पता चलता है कि लगभग 27,694 विद्यार्थियों वाले 1,049 स्वदेशी विद्यालय हैं। ये विद्यालय पुरानी ग्रामीण शिक्षा प्रणाली पर आधारित हैं। लड़कों को आमतौर पर पहाड़े याद कराए जाते हैं, थोड़ा-बहुत मोदी लिपि में लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है और कुछ धार्मिक पाठ सुनाए जाते हैं। शिक्षक आमतौर पर कोई सुधार लाने में सक्षम नहीं

होते, क्योंकि उन्हें शिक्षण कला का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। इन विद्यालयों में शुल्क 2 से 8 आना तक होता है। शिक्षक आमतौर पर ब्राह्मण समाज के निम्नतम तबके से आते हैं। उनकी योग्यता मुश्किल से मराठी पढ़ने-लिखने और तीन के नियम तक हिसाब-किताब करने से अधिक होती है। वे आजीविका कमाने के अंतिम साधन के रूप में शिक्षक बनते हैं। जीवन के अन्य क्षेत्रों में उनकी विफलता या अयोग्यता उन्हें विद्यालय खोलने के लिए विवश करती है। स्वदेशी विद्यालयों के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की देश में कोई व्यवस्था नहीं है। स्थानीय विद्यालयों का भला तभी हो सकता है, जब वर्तमान शिक्षकों को प्रशिक्षण महाविद्यालयों से प्रशिक्षित शिक्षकों और स्थानीय भाषाओं में छठी कक्षा उत्तीर्ण शिक्षकों से प्रतिस्थापित किया जाए। वर्तमान शिक्षक सरकारी सहायता सहर्ष स्वीकार कर लेंगे, लेकिन इस प्रकार खर्च किया गया पैसा व्यर्थ ही जाएगा। मुझे ऐसा कोई उदाहरण नहीं पता, जिसमें ऐसे किसी विद्यालय को अनुदान दिया जाता हो। यदि कहीं दिया भी जा रहा है, तो वह बहुत ही दुर्लभ मामलों में होगा। मेरी राय में, ऐसे विद्यालयों को अनुदान तभी दिया जाना चाहिए जब शिक्षक प्रमाणित हो। लेकिन यदि प्रमाणित या योग्य शिक्षक मिल जाएं, तो अनुदान दिया जाना चाहिए, जिससे बहुत लाभ होगा।

उच्च शिक्षा

कुछ समय से पूरे देश में यह बात गूंज रही है कि सरकार ने उच्च शिक्षा के लिए पर्याप्त व्यवस्था की है, जबकि आम जनता की शिक्षा उपेक्षित रही है। कुछ हद तक यह बात जायज़ भी है, हालांकि उच्च शिक्षा से सीधे लाभान्वित होने वाले वर्ग शायद इसे आसानी से स्वीकार न करें। लेकिन इन सबके बावजूद, कोई भी देशवासी यह नहीं चाहेगा कि सरकार इस समय उच्च शिक्षा से अपना समर्थन वापस ले ले। वे केवल यही चाहेंगे कि चूंकि समाज के एक वर्ग की उपेक्षा हुई है, इसलिए उसकी उन्नति को भी उतना ही महत्व दिया जाए जितना दूसरे वर्ग को। भारत में शिक्षा अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है। उच्च शिक्षा से सरकारी समर्थन वापस लेना शिक्षा के प्रसार के लिए हानिकारक होगा। ब्राह्मणों और पूर्भू जैसे उच्च और धनी वर्गों, विशेषकर उन वर्गों में जो लेखन से अपना जीवन यापन करते हैं, शिक्षा के प्रति रुचि पैदा हो चुकी है, और इन वर्गों के लिए सरकारी समर्थन को धीरे-धीरे वापस लेना संभव हो सकता है; लेकिन मध्यम और निम्न वर्गों में, जिनमें उच्च शिक्षा ने कोई खास प्रगति नहीं की है, ऐसा करना उनके लिए बहुत कष्टदायी होगा। यदि सरकार सरकार से अलग हो जाती है, तो लड़कों को अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर अक्षम और सांप्रदायिक स्कूलों में जाना पड़ेगा, जिससे शिक्षा को भारी नुकसान होगा। ऐसी शिक्षा का कोई भी हिस्सा निजी संस्थाओं को नहीं सौंपा जा सकता। आने वाले लंबे समय तक, संपूर्ण शैक्षिक तंत्र, चाहे वह प्रशासनिक हो या कार्यकारी, सरकार के हाथों में ही रहेगा। उच्च और प्राथमिक शिक्षा दोनों को सरकार की ओर से पूर्ण देखभाल और ध्यान की आवश्यकता है। स्कूलों या कॉलेजों से सरकार की भागीदारी न केवल शिक्षा के प्रसार को बाधित करेगी, बल्कि उस तटस्थता की भावना को भी गंभीर रूप से खतरे में डाल देगी जिसे भारत में प्रचलित विभिन्न राष्ट्रीयताओं और धार्मिक मान्यताओं के कारण सरकार हमेशा से बढ़ावा देने का लक्ष्य रही है। यह भागीदारी कुछ हद तक उच्च और धनी वर्गों में

स्थानीय उद्देश्यों के लिए आत्मनिर्भरता की भावना को जन्म दे सकती है, लेकिन शिक्षा को इतना नुकसान होगा कि आत्मनिर्भरता की भावना को इस क्षति को दूर करने में वर्षों लग जाएंगे। योग्य और शिक्षित पुरुष, जो सरकारी नौकरी पाने में सफल नहीं होते, उदार अनुदान सहायता का आश्वासन मिलने पर उच्च शिक्षा के लिए स्कूल खोलने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। लेकिन कोई भी व्यक्ति आजीविका कमाने के साधन के रूप में अपने निजी खर्च पर ऐसा करने को तैयार नहीं होगा, और यह संदेहजनक है कि ऐसे निजी प्रयास स्थायी या स्थिर हो पाएंगे या नहीं, और न ही उनके परिणाम इतने अच्छे होंगे। पुणे में श्री विष्णु शास्त्री चिपलूनकर और श्री भावे जैसे निजी स्कूल मौजूद हैं, और पर्याप्त अनुदान सहायता मिलने पर इन्हें बहुत प्रभावी बनाया जा सकता है, लेकिन ये उच्च विद्यालय की आवश्यकता को कभी भी प्रतिस्थापित नहीं कर सकते। मिशनरी स्कूल, हालांकि कुछ बहुत ही कुशलता से संचालित होते हैं, उनके परिणाम इतने अच्छे नहीं होते, और न ही वे उच्च विद्यालय की तुलना में आधे छात्रों को आकर्षित करते हैं। सरकारी स्कूलों की श्रेष्ठता मुख्य रूप से शिक्षकों और प्रोफेसरों के उच्च वेतनभोगी स्टाफ के कारण है, जिसे निजी स्कूल बनाए रखना संभव नहीं है। सरकारी उच्च विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा का स्तर बिल्कुल भी व्यावहारिक नहीं है, और न ही यह सामान्य जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप है। केवल इतने सारे क्लर्क और स्कूल मास्टर तैयार करना ही उचित नहीं है। मैट्रिक परीक्षा शिक्षकों और छात्रों का ध्यान अनावश्यक रूप से आकर्षित करती है, और निर्धारित पाठ्यक्रम में व्यावहारिक ज्ञान का अभाव है, जिससे छात्र स्वतंत्र जीवन में अपने भावी करियर के लिए तैयार नहीं हो पाते। यद्यपि देश में ज्ञान के प्रसार को ध्यान में रखते हुए प्रवेश परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या बहुत अधिक नहीं है, लेकिन सरकारी सेवाओं की आवश्यकताओं को देखते हुए यह संख्या बहुत अधिक लगती है। यदि शिक्षा सार्वभौमिक और सभी के लिए सुलभ होती, तो छात्रों की संख्या और भी अधिक होती, और ऐसा होना भी चाहिए, और मुझे आशा है कि भविष्य में ऐसा ही होगा। उच्च शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि वह सभी के लिए सुलभ हो, और मैट्रिक परीक्षा के विषयों पर पुस्तकें सरकारी राजपत्र में प्रकाशित की जानी चाहिए, जैसा कि मद्रास और बंगाल में किया जाता है। ऐसा करने से निजी अध्ययन को प्रोत्साहन मिलेगा और देश में ज्ञान का व्यापक प्रसार सुनिश्चित होगा। यह जनता के लिए वरदान है कि बॉम्बे विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा में बैठने वाले छात्रों के लिए निजी अध्ययन को मान्यता देता है। मुझे आशा है कि विश्वविद्यालय अधिकारी उच्च शिक्षा परीक्षाओं को भी यही सुविधा प्रदान करेंगे। यदि विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए., एम.ए. आदि की डिग्रियाँ प्रदान करते समय निजी अध्ययन को मान्यता दी जाए, तो अनेक युवा अपना समय निजी अध्ययन में लगाएँगे। इससे ज्ञान के प्रसार में और अधिक योगदान होगा। अनेक कारणों से कई मामलों में कॉलेजों में अध्ययन करना लगभग असंभव हो जाता है। यदि विश्वविद्यालय द्वारा निजी अध्ययन को मान्यता दी जाए, तो इससे देश को व्यापक लाभ होगा और उच्च शिक्षा पर सरकारी खजाने का बोझ काफी हद तक कम हो जाएगा। सरकारी विद्यालयों में वर्तमान में चल रही सरकारी छात्रवृत्ति प्रणाली भी दोषपूर्ण है, क्योंकि यह केवल उन्हीं वर्गों को अनुचित प्रोत्साहन देती है, जिन्होंने पहले ही शिक्षा के प्रति रुचि विकसित कर ली है, जिससे अन्य वर्गों को हानि होती है। इस प्रणाली को इस प्रकार व्यवस्थित किया जा

सकता है कि इनमें से कुछ छात्रवृत्तियाँ उन वर्गों को भी प्रदान की जाएँ, जिनमें शिक्षा का कोई विकास नहीं हुआ है। प्रतियोगिता के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की प्रणाली, हालांकि सैद्धांतिक रूप से न्यायसंगत है, अन्य वर्गों में शिक्षा के प्रसार में सहायक नहीं है। शिक्षित मूल निवासियों के लाभकारी रोजगार प्राप्ति के प्रश्न के संदर्भ में, यह याद रखना आवश्यक है कि शिक्षित मूल निवासी, जो अधिकतर ब्राह्मण और अन्य उच्च वर्गों से संबंधित हैं, सेवा कार्य के प्रति अत्यधिक इच्छुक होते हैं। लेकिन चूंकि सार्वजनिक सेवा में विद्यालयों और महाविद्यालयों से उत्तीर्ण होने वाले सभी शिक्षित मूल निवासियों के लिए कोई क्षेत्र उपलब्ध नहीं है, और इसके अतिरिक्त, उन्हें जो प्रशिक्षण प्राप्त होता है वह तकनीकी या व्यावहारिक प्रकृति का नहीं है, इसलिए उन्हें अन्य शारीरिक या लाभकारी रोजगार प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई होती है। यही कारण है कि यह शोर मचाया जाता है कि बाजार में ऐसे शिक्षित मूल निवासियों की भरमार है जिन्हें कोई लाभकारी रोजगार नहीं मिल रहा है। यह कुछ हद तक सच हो सकता है कि कुछ व्यवसायों में अधिकता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि उनके लिए कोई अन्य लाभकारी रोजगार उपलब्ध नहीं है। देश की तुलना में शिक्षित पुरुषों की वर्तमान संख्या बहुत कम है, और हमें उम्मीद है कि वह दिन दूर नहीं जब यह संख्या सौ गुना बढ़ जाएगी और सभी लोग उपयोगी और लाभकारी व्यवसायों में लग जाएंगे, न कि नौकरी की तलाश में। अंत में, मैं शिक्षा आयोग से निवेदन करता हूं कि वह छात्राओं की प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए अधिक उदार उपायों को मंजूरी देने की कृपा करे।

जोतीराव गोविंदराव फूले,
व्यापारी और कृषक और
नगर आयुक्त,
पेठ जूना गांजा।

पुणे, 19 अक्टूबर 1882।

[शिक्षा आयोग, बॉम्बे, खंड II, कलकत्ता, 1884, पृष्ठ 140-154]

कविताएं

हमारी ब्राह्मण प्रधान नीति-शिक्षा प्रणाली

(प्रचारित) एक गाथागीत।

असली मालिक (उत्पाद के) कष्ट भोगते हैं, और पठान (अधिकार हड़पने वाले साहूकार) खूब मुनाफा कमाते हैं। अयोग्य माता-पिता के बच्चों की शिक्षा शूद्रों के खर्चे पर हो रही है। माली (बागवान) और कुनबी (किसान) खेतों में मेहनत करते हैं, लेकिन कर और अंशदान

देकर सरकार को समृद्ध करते हैं, फिर भी वे अधमरे रहते हैं। छोटे बच्चों को बंजर मैदानों में मवेशी चराने पड़ते हैं और उनके नंगे पैर की तलवे गर्मी से झुलस जाते हैं। उनके माता-पिता मन ही मन दुखी होते हैं क्योंकि उनके बच्चे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, और वे अपनी बदकिस्मती को दोष देते हैं। शिक्षा विभाग (एजुकेट) किसानों को उनके बच्चों को शिक्षित करने के झूठे वादे करके उनका शोषण करता है, और इन स्कूलों में केवल ब्राह्मण शिक्षकों को ही नियुक्त करता है। वे कुलकर्णी (कुलपति) की सहायता से कुछ विद्यार्थियों को एकत्रित करते हैं और अपनी रिपोर्टों में एक बड़ी रकम दर्ज करते हैं। वे (ब्राह्मण शिक्षक) महारों (अति-शूद्रों, अछूतों) के बच्चों को पढ़ाना अपने लिए अपवित्रता का कारण मानते हैं, जबकि वे अंग्रेजों से बड़ी तत्परता से हाथ मिलाते हैं। ब्राह्मण शिक्षकों को इन बच्चों को अछूत मानने में कोई शर्म नहीं आती।

एक समय था जब वे (अछूत) आपके सबसे बड़े शत्रु थे, लेकिन अब आपने उन्हें अपना जागीरदार (अधीनस्थ, गुलाम) बना लिया है! यहाँ तक कि अमेरिकी (गुलाम मालिक) भी लज्जित (पराजित) हो गए, जबकि वे स्वयं को धरती-देवता नहीं मानते थे (जैसा कि ब्राह्मण यहाँ मानते थे)।

ब्राह्मण शिक्षक अपने शिक्षण के दौरान ब्रह्मा देवता की महिमा का बखान करते हैं और साथ ही साथ अन्य धर्मों की आलोचना और निंदा करते हैं। यही उनकी शिक्षण पद्धति है। वे शूद्र बच्चों को चालाकी से झूठे धर्म (विधर्म) की शिक्षा देते हैं और उनके भोले-भाले मन में महारानी के प्रति घृणा भर देते हैं। ऐसे धूर्त लोगों को (अंग्रेज़ी सरकार द्वारा) शिक्षक नियुक्त किया जाता है और अयोग्य माता-पिता के बच्चों को शूद्रों के खर्च पर शिक्षा दी जाती है।

ब्राह्मण बच्चे अगर कोई गलती करते हैं, तो ब्राह्मण शिक्षक उन्हें दोबारा पढ़ाने में विशेष परिश्रम करते हैं और नाममात्र की सजा देते हैं। लेकिन शूद्र बच्चे अगर कोई गलती करते हैं, तो ब्राह्मण शिक्षक उन्हें बेरहमी से थप्पड़ मारते हैं और कान खींचकर पीटते हैं। नतीजतन, शारीरिक दंड के डर से शूद्र बच्चे स्कूल से भाग जाते हैं। लेकिन शिक्षक चतुराई से छात्रों की आवश्यक संख्या बनाए रखने का ध्यान रखते हैं। जब शिक्षा निरीक्षक स्कूल का दौरा करता है, तो ब्राह्मण शिक्षक उसकी चापलूसी करता है और उसके प्रति अत्यंत खुशामद करता है। चूंकि शिक्षा निरीक्षक ब्राह्मण है, इसलिए शिक्षक स्वयं छात्रों की उपस्थिति दर्ज करता है। निरीक्षक अपनी निरीक्षण रिपोर्ट में शिक्षक को उत्कृष्ट अंक देता है और उसकी जमकर प्रशंसा करता है। मैंने यहां केवल संक्षेप में इसका सार बताया है।

“शूद्र बहुत अज्ञानी और मूर्ख हैं, और उनके बच्चे शिक्षा में बिल्कुल रुचि नहीं रखते।” निरीक्षक की रिपोर्ट सरासर झूठ है। ब्राह्मण आपस में चापलूसी करते हैं और अपने ही जाति के लोगों के हितों को पूरी लगन से बढ़ावा देते हैं। यह बहुत दुख की बात है कि इन दोषियों को कोई सजा नहीं देता। इस शर्मनाक तरीके से गरीब, अज्ञानी शूद्रों को लूटा जा रहा है और अयोग्य माता-पिता के बच्चों को (शूद्रों के खर्च पर) शिक्षा दी जा रही है।

(ब्राह्मण) शिक्षक अपना अधिकांश समय धार्मिक अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों में व्यतीत करते हैं और छोटे बच्चे हाजिरी लगाते हैं। वे शूद्र बच्चों को बेकार की चीजें पढ़ाने का बहाना करके समय बिताते हैं। इस तरह वे शिक्षक के रूप में अपना कर्तव्य निभाते हैं। वे सुबह आठ बजे स्कूल आते हैं और (कक्षाओं में) कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। वे ब्राह्मण विद्यार्थियों को रात दस बजे तक पढ़ाते हैं और समय देखने के लिए धूपघड़ी का इस्तेमाल करते हैं। कठिन व्यायाम से पूरी तरह थक जाने के कारण, वे अपने माथे से पसीने की बूँदें पोंछते हैं, धीरे से माथे को थपथपाते हैं और अपने थके हुए सिर को मेज पर धीरे से टिका देते हैं। वे विद्यार्थियों के सामने ऐसी हरकतें करते हैं। दोपहर के भोजन के समय वे अपनी सुखद नींद से जागते हैं और तुरंत अपने घरों के लिए निकल जाते हैं।

वे भोजन के बाद की दोपहर की नींद का आनंद लेते हैं। नींद पूरी होने पर वे या तो अखबार पढ़ते हैं या निजी पत्र लिखते हैं। ठंडी दोपहर में वे कुछ देर के लिए स्कूल जाते हैं और अपनी इच्छा और खुशी के अनुसार कक्षा में भाग लेते हैं।

ये ब्राह्मण शिक्षक शूद्र शिष्य को पढ़ाने में पूरी तरह से गड़बड़ी या उपहास करते हैं। मैं यह बात अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ।

वे रात में बागवानों और किसानों के सामने अपने नकली धार्मिक ग्रंथ पढ़ते हैं, ताकि उनका मन बहलाया जा सके, लेकिन वे उनके भोले-भाले मन में ब्राह्मणों की महानता का भाव बिठाने में सफल हो जाते हैं। वे उन्हें गलत बातें सिखाते हैं और अज्ञानी लोगों से तुरंत गेहूं का आटा और धन-दान लेते हैं। अयोग्य बच्चे उनके विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनकी कूटनीति पूरी दुनिया के लिए धोखे का एक आदर्श है और वे शूद्रों का निर्लज्जतापूर्वक शोषण करते हैं। शूद्र किसान अपने बच्चों की शिक्षा के लिए सरकार को कर देते हैं, लेकिन ब्राह्मण शिक्षक अपनी जेबें भरते हैं और आम लोगों के भ्रम को तोड़ते हैं। अति-शूद्र ब्राह्मणों को राजा और पृथ्वीदेव मानते हैं। तब आप गुलामों और दासों की दुर्दशा का अंदाजा लगा सकते हैं। हमारी अंग्रेज़ सरकार खुद को प्रबुद्ध और बुद्धिमान कहती है, लेकिन (यह कितनी अजीब बात है कि) वह स्कूलों में ऐसे पाखंडियों को शिक्षक नियुक्त करने में जल्दबाजी करती है। क्या बाघ चरवाहों को भेड़ों का झुंड मुहैया करा सकते हैं? क्या पक्षी पानी में उड़ सकते हैं? (नहीं, कभी नहीं!)

ज्ञान से पश्चाताप (या मुक्ति) पाकर, ये (तथाकथित) प्रबुद्ध मेंढक सर्पों को शिक्षा देने का साहस करते हैं। वे (ब्राह्मण शिक्षक) अंग्रेज़ शासकों की कृपा पाने के लिए स्वयं को प्रबुद्ध या मुक्त होने का ढोंग करते हैं, परन्तु अपने घरों में पूजा-गृहों में पत्थर की मूर्तियों की पूजा करते रहते हैं।

मैं अंग्रेज़ सरकार से आग्रह करता हूँ कि वह शूद्र बच्चों को पढ़ाने के लिए अन्य (गैर-ब्राह्मण) समुदायों से ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति करे जो स्वस्थ (धार्मिक) ज्ञान (प्रबुद्धता) के आदर्श हों। उन्हें अधिमानतः बागवानों, किसानों या अति-शूद्रों (जैसे मांग और महार) में से

चुना जाना चाहिए। इसे मेरे अनुभव का सार समझें। तब (ज्ञान का) वृक्ष भरपूर फल देगा, शूद्रों की स्थिति में काफी सुधार होगा और इस प्रकार ब्राह्मण, (स्वयं को पृथ्वी-देवता समझने वाले) लज्जित होंगे।

ज्योति मन ही मन दुखी है क्योंकि सरकार शूद्र बच्चों की जरूरतों पर कोई ध्यान नहीं देती, जबकि कुछ ईसाई मिशनरी शूद्र बच्चों की स्थिति सुधारने के लिए प्रयासरत हैं। हे अंग्रेज शासकों, तुम स्वयं को प्रबुद्ध, उदार और परोपकारी कहते हो, परन्तु (यह कितना विचित्र है कि) अयोग्य बच्चे शूद्रों द्वारा दिए गए 'स्थानीय कोष' से वित्तपोषित विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं।

सत्य पर एक कविता ('अखंड')

सत्य हम सबका मूल निवास है। यह समस्त धर्मों की नींव है। इस संसार का समस्त सुख शाश्वत सत्य की ही उपज है। सत्य ही समस्त सुख का आधार है। इसके अतिरिक्त सब अंधकार है। सत्य अत्यंत शक्तिशाली है, क्योंकि यह छल, कपट और असत्य का नाश कर देता है। सत्य में निहित वस्तु पाखंडियों और स्वार्थी व्यक्तियों को भलीभांति उजागर कर देती है। सत्य की शक्ति को जानकर ढोंगी हृदय से लज्जित हो जाते हैं। ढोंगी कभी सुखी नहीं हो सकते, क्योंकि वे सत्य के ईश्वर को पदच्युत करने का व्यर्थ प्रयास करते हैं। ज्योति सभी से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं कि वे छल और पाखंड को व्यर्थ ही आश्रय न दें।

Advice to the Shudras and Ati-Shudras ('Akhand')

वेदों का गहन अध्ययन हमें यह सिद्ध करता है कि आर्यों के ईरान (फारस) में ऊँच-नीच का कोई भेद-भाव नहीं था। गोंड और भील जैसी मूल निवासी उस भूमि (भारत) के मूल स्वामी (शासक) थे, और ईरानी (आर्य) बाद में भारत आए (आक्रमणकारी और घुसपैठिए बनकर)। आर्य ब्राह्मणों ने भारत में भारी उथल-पुथल मचाई, और भारत के मूल निवासी, जो अत्यंत देशभक्त थे, ने वीरतापूर्वक अपनी (और अपनी मातृभूमि की) रक्षा की। आर्य आक्रमणकारियों (ब्राह्मणों) ने यहाँ के पवित्र यज्ञों का अपमान किया, मूल निवासियों को लूटा और उन पर अत्याचार किया तथा उन्हें 'दस्यु' कहकर कलंकित किया। आर्य ब्राह्मणों ने मूल निवासियों को 'दुष्ट' और दुष्ट कहा, जो स्पष्ट रूप से 'दस्यु' का विकृत रूप था। यह विकृत रूप उनकी भाषा में प्रचलित हो गया। 'दस्यु' शब्द बाद में मुसलमानों द्वारा अपनी भाषा (अरबी, फारसी या उर्दू?) में बिगड़कर 'दोस्त' या 'दुश्मन' बन गया। यह मेरा अनुमान

है। आर्य ब्राह्मणों ने युद्धों में यहाँ के मूल निवासियों को हराकर उन पर अपना वर्चस्व और प्रभुत्व स्थापित किया। युद्धप्रिय क्षत्रियों को गुलाम बनाया गया और उन्हें 'क्षुद्र' (तुच्छ) जैसा अपमानजनक नाम दिया गया, जो बाद में बिगड़कर 'शूद्र' हो गया। यह बिगड़ा हुआ रूप बाद में आर्य भाषा में प्रचलित हो गया। (आर्य देवता) परशुराम गर्भवती (क्षत्रिय) महिलाओं का शिकार करते थे और उन्हें बंधक बनाकर रखते थे। जब वे बच्चे को जन्म देती थीं, तो परशुराम उनके नवजात शिशुओं की निर्मम हत्या कर देते थे। अपने पिता के प्रिय होते हुए भी, उन्होंने (अपने पिता के कहने पर) अपनी ही माता रेणुकादेवी की हत्या कर दी। ऐसे में उन्हें देवता कैसे माना जा सकता है? आर्यों ने द्वेषवश उन्हें 'राक्षस', 'दुष्ट आत्माएँ' और 'महा-आरि' जैसे अपमानजनक नाम देकर और भी अपमानित किया, महार का अर्थ है 'महान शत्रु'। आर्यों ने उन्हें केवल जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त भोजन दिया और उनसे कठिन परिश्रम करवाया। उन्होंने उनकी मेहनत का फल छीन लिया, उनके साथ पशुओं से भी बदतर व्यवहार किया, इस मामले में वे दुनिया भर में अमेरिकियों (अपने दासों के साथ दुर्व्यवहार करने में) से भी आगे थे। आर्यों ने शूद्रों और अति-शूद्रों को अनेक प्रकार से प्रताड़ित और अपमानित किया तथा हर समय उनका उपहास उड़ाया। उन्होंने उन पर कभी दया नहीं दिखाई, बल्कि हर संभव तरीके से उन पर अत्याचार करते रहे, और सबसे बुरी बात यह थी कि उन्होंने उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से रोक दिया। उनकी करुणा और क्षमा जैसे गुण, जिनका वे अक्सर बखान करते थे, कहाँ गए? हे राजा मनु! कृपया अपनी नीति या इरादा (एक बार में ही) स्पष्ट कर दें। सार्वजनिक सभा (पुणे में गुड़ी पड़वा (1870) को स्थापित जन संगठन) मासिक धर्म से ग्रस्त स्त्री की तरह वर्जित है (जब उसे 'अछूत' माना जाता है), लेकिन फिर भी यह महारों (अछूतों) के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया क्यों अपनाती है? भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारतीय विधवाओं की तरह असहाय है और बंगाली नेताओं (जैसे डब्ल्यू.सी. बनर्जी) के इशारों पर नाचने में ही संतुष्ट है। भारत में मंग और महारों (अछूतों) को संस्कृत 'ओम नमः' (ईश्वर को प्रणाम) सीखने से मना किया गया है। इसलिए मैं पूछना चाहता हूँ कि भारतीय सिविल सेवा (आईसीएस) किसके लिए है? ब्राह्मण तो मंग और महारों की (अपवित्र) छाया से भी बचते हैं। फिर वे उनके प्रति भाईचारे का दावा कैसे कर सकते हैं? यह (तथाकथित) सार्वजनिक सभा (जन संगठन) अंग्रेजी सरकार को सलाह देने का दावा करती है, लेकिन इसका गूढ़ ब्रह्म दर्शन पूरी तरह व्यर्थ है। इसके पदाधिकारी अभिनेताओं की तरह ढोंग करते हैं और भोले-भाले भारतीय राजकुमारों का समर्थन हासिल करने में सफल हो जाते हैं। स्वयं को पैरवीकार बताकर वे जनता के मध्यस्थ बनने का प्रयास करते हैं और साथ ही श्री ली वार्नर को धोखा देते हैं। श्री गोपाल (हरि) देशमुख (उर्फ लोकहितवादी) ने आर्यों (ब्राह्मणों) के अत्यंत अनैतिक आचरण को स्पष्ट रूप से उजागर किया है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अंग्रेजी शासकों को अनुचित सलाह देने का दावा करती है, लेकिन यदि वह जनता के बीच स्थायी एकता प्राप्त करना चाहती है, तो उसे जनता के साथ व्यवहार में सत्य के मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए। भारतीय सिविल सेवा पर आर्य ब्राह्मणों का (अन्यायपूर्ण ढंग से) एकाधिकार हो चुका है, और मैं यह निवेदन करता हूँ कि यह पूरे राष्ट्र के लिए एक बड़ा खतरा है। मैं अपने शूद्र भाइयों से अत्यंत विनम्रतापूर्वक आग्रह करता हूँ कि वे यह समझें कि ये आर्य ब्राह्मण (सिविल सेवा के अधिकारी) वास्तव में पत्थर दिल हैं। ली वार्नर एक ईमानदार और

असाधारण सत्यनिष्ठा वाले अंग्रेज अधिकारी हैं, और शूद्रों के हिमायती और असहायों के सच्चे मित्र हैं। हे विद्वान शूद्रों! आप कब युगों की नींद से जागेंगे और स्वयं आर्य ब्राह्मणों द्वारा यहाँ उत्पन्न घोर अराजकता का निरीक्षण करेंगे? आप (दुष्ट आर्यों के) इशारों पर पागल (अज्ञानी) स्त्रियों की तरह नाचेंगे, और इस प्रक्रिया में आपके बच्चे पूरी तरह से शोषित (भिखारी) हो जाएँगे। मरे हुए जानवर भी (मनुष्य के लिए) उपयोगी होते हैं क्योंकि उनके चमड़े से हमारे जूते बनते हैं, लेकिन जब तुम मरोगे, (याद रखना कि) तुम केवल हंसी का पात्र और सबके लिए परेशानी का कारण बनोगे। (जब तुम मरोगे) सर्वव्यापी ईश्वर को क्या हिसाब दोगे? तब तुम सचमुच बहुत उलझन में पड़ जाओगे। "धिक्कार है उस पर!" - तुम्हारे मरने के बाद लोग एक स्वर में कहेंगे, और तुम्हारी स्त्रियाँ सार्वजनिक रूप से तुमसे संबंध रखने में शर्म महसूस करेंगी। हे शूद्रों! तुम जानवर नहीं बल्कि मनुष्य हो, ईश्वर की रचना की पराकाष्ठा, ईश्वर द्वारा प्रदत्त बुद्धि से संपन्न, जिसे तुमने, अफसोस! पूरी तरह से बर्बाद कर दिया है।

मुझे सचमुच आश्चर्य होता है कि आप (पेशवा) स्वयं को "श्रीमंत" और "अज्ञानियों के राजा" कैसे कहने लगे (ये उपाधियाँ पेशवाओं ने स्वयं को स्वेच्छा से दे दी थीं, जो जनता का अपमान थीं)। मेरा एकमात्र अफ़सोस यही है कि आप जन्म के समय ही नष्ट नहीं हो गए। अंग्रेज़ शासकों ने यहाँ के प्रशासन में जो परिश्रम किया है, उसे ध्यानपूर्वक देखें और उनका आदर करें। (हे मेरे अज्ञानी लोगों!) मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक विनती करता हूँ कि आप (पुणे के) पेशवाओं की तरह (बेशर्मी से) कृतघ्न न हों। विवेकशील मनुष्य होने के उच्च विशेषाधिकार के अनुरूप शालीनता से व्यवहार करें और अपने सभी बच्चों (लड़कियों और लड़कों दोनों) को शिक्षित करें, जो आशा है कि विद्वान बनेंगे। यदि आप संस्कृत (देवताओं की भाषा) का लगन से अध्ययन करेंगे, तो आपको मेरी (समय पर दी गई) सलाह अवश्य याद रहेगी। (ब्राह्मण विद्वानों ने) आपको संस्कृत का एक शब्द भी सुनने नहीं दिया और इसलिए छिपा दिया। आपको वेदों और अन्य गूढ़ संस्कृत ग्रंथों के खजाने को उजागर करना चाहिए। आपको आर्य ब्राह्मणों की गहरी बुराई को पूरी तरह से उजागर करना चाहिए, क्योंकि यह आपके लिए एक सुनहरा अवसर है, ऐसा ज्योति ने कहा।

शाश्वत सत्य के लिए एक स्तुतिगान (प्रशंसा गीत)
(शाश्वत सत्य के लिए एक जयजयकार)

हमारे शाश्वत सत्य की विजय हो, शाश्वत विजय हो! आइए, हम आपकी शक्ति से अपने सृष्टिकर्ता की खोज करें। आर्य ब्राह्मणों की विजय के बाद उन्होंने क्षत्रियों (भारत के वीर मूल निवासी) की निंदा और अपमान किया। उन्होंने शिक्षा से वंचित करके उन्हें और भी अधिक तुच्छ बना दिया। आर्य ब्राह्मणों ने क्षत्रियों को पशुओं से भी बदतर समझा और स्वयं को पृथ्वीदेव बताते हुए उन्हें अपने चरणों की पूजा करने के लिए विवश किया। अत्याचारी और निरंकुश शासक बनकर उन्होंने अज्ञानी जनता को लूटा। उन्हें अपने

अंतरात्मा की सिसकियों का कभी भय नहीं आया। ब्राह्मणों ने भव्य भोजों का आनंद लिया और इस मामले में वे ब्रह्मा राक्षस से भी आगे निकल गए। वे मृतकों के नाम पर (अपने रिश्तेदारों से) भिक्षा स्वीकार करते हैं और निर्लज्ज दुष्टों की तरह उस भिक्षा का भरपूर आनंद लेते हैं। उन्हें कभी यह विचार ही नहीं आया कि परिश्रमी शूद्रों, अंधों, लंगड़ों और अनाथों को भी अच्छा भोजन करने दिया जाए। सत्य के उदय के समय (शक्तिशाली) वैदिक ज्ञान पूर्णतः पराजित हो जाता है, और गहन जाँच-पड़ताल से उसका खोखलापन (झूठापन) पूरी तरह उजागर हो जाता है। जब (नकली) शास्त्र शाश्वत सत्य की महिमा और श्रेष्ठता को सुनते (अनुभव करते) हैं, तो वे इस प्रकार लज्जित हो जाते हैं मानो उनके चेहरे काले तेल से मढ़ दिए गए हों। हे सत्य, जब विधर्मी आपका चेहरा देखते हैं, तो वे पूर्णतः पराजित हो जाते हैं और लज्जा से अपना सिर झुका लेते हैं। हे सत्य, जब आप अज्ञानी शूद्रों के प्रति उचित करुणा और दया का भाव रखते हैं, तो (तथाकथित) पृथ्वीदेव (ब्राह्मण) भय से काँप उठते हैं। हे सत्य! आप वास्तव में करुणा के सागर हैं (हम शूद्रों के लिए) और आपने हमें ब्राह्मण दासता के बंधनों से मुक्त किया है। आपकी कृपा से ही हमने जीवन का सही मार्ग समझ लिया है और अपने माता-पिता (या अज्ञानी शूद्रों) की सेवा करना शुरू कर दिया है।

हमारी शाश्वत सत्य की विजय हो, शाश्वत विजय हो!

(2) शाश्वत सत्य के लिए हल्लेलुयाह –

आइए हम सत्य के राजा की सेवा करें, जो शुद्ध प्रकाश और महान सत्यनिष्ठा (ईमानदारी) के साक्षात स्वरूप हैं। संत और ऋषि निर्वाण की अवस्था में इसकी खोज करते हैं। यह हमारे मन को सृष्टि के मूल कारण की ओर आकर्षित करता है। यह (सत्य) संसार में लुप्त हो गया है। कोई नहीं जानता कि जीवन का परम लक्ष्य क्या है। आर्य ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए अनेक (मनगढ़ंत, नकली) धर्मों का आविष्कार किया है। सत्य की खोज करते हुए मुझे अंतिम (आवश्यक) रहस्य का ज्ञान हुआ। मैं नकली धर्मों से तंग आ चुका हूँ और इसलिए मैंने नीच (झूठे) रीति-रिवाजों का त्याग कर दिया है। मैं सभी शूद्रों से आग्रह करता हूँ कि वे ईश्वर का स्मरण करें, सत्य के सिद्धांत को अपनाएँ, नकली धार्मिक रीति-रिवाजों का त्याग करें और सभी मनुष्यों के साथ भाईचारे का व्यवहार करें। अहंकार से प्रेरित होकर गरीबों और असहायों का तिरस्कार न करें और वर्जित बातों का पालन करके अहंकार न दिखाएँ। सभी बुराइयों पर विजय प्राप्त करो और राजा बलि की सेवा करो (उस किसान की सेवा करो जो सच्चा राजा है)। अपने परिश्रम से अपने परिवार का भरण-पोषण करो। सदा सत्य बोलो। दुष्ट धार्मिक मान्यताओं का त्याग करो और शूद्रों (और अति-शूद्रों) को शिक्षित करके ब्राह्मणों (पृथ्वी-देवताओं) को लज्जित करो। दलितों की सेवा को ईश्वर को समर्पित करो। सभी पाखंडी (विधर्मी) धर्मों को पराजित करके ज्योति ईश्वर के समक्ष नतमस्तक होती है।

पुस्तक “सत्य का सार्वभौमिक धर्म” के अंत में दी गई

कविताएँ (अखंड)

इस पुस्तक के लेखक द्वारा सभी पुरुषों और महिलाओं से एक हार्दिक अनुरोध (प्रार्थना)।

सृष्टिकर्ता ने इस पृथ्वी (ब्रह्मांड) की रचना की है, जो हम सबका भार वहन करती है। यह विभिन्न प्रकार की घासों और वृक्षों से सुशोभित है। वृक्षों पर अनेक रसीले फल लगते हैं। ये फल और वृक्षों की कोमल छाया हमारे सुख के लिए हैं। पृथ्वी दिन-रात निरंतर हमारे सुख के लिए (अपनी धुरी पर) घूमती रहती है और हम सबकी देखभाल करती है। ज्योति कहती हैं कि विभिन्न मनुष्यों के लिए अलग-अलग धर्म नहीं होने चाहिए, क्योंकि सृष्टिकर्ता एक ही है।

(2)

वर्षा और नदियाँ हमारे सृष्टिकर्ता द्वारा इस पृथ्वी पर सजीव और निर्जीव जीवन की सुविधा और सुख-सुविधाओं के लिए बनाई गई हैं। नदियाँ तीव्र गति से और भव्यता से बहती हैं और सभी प्राणियों को प्रचुर मात्रा में जल प्रदान करती हैं। मनुष्य व्यापार और वाणिज्य के लिए महासागरों में जहाजों में यात्रा कर सकते हैं और अपना जीवन सुखमय बना सकते हैं। फिर अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग धर्म क्यों हैं? ज्योति पूछता है, तुम पागल क्यों हो गए हो?

(3)

एकमात्र सूर्य ही हम सभी को प्रकाश प्रदान करता है और हमें विभिन्न गतिविधियों में संलग्न होने में सक्षम बनाता है। सूर्य सभी सजीव और निर्जीव प्राणियों को जीवंत जीवन प्रदान करता है और हम सभी का पालन-पोषण करता है। वह मनुष्यों में कभी भेदभाव नहीं करता और एक दयालु पिता की तरह हम सभी को सुखी और संतुष्ट रखता है। ज्योति कहती हैं कि सभी मनुष्यों के लिए केवल एक ही धर्म होना चाहिए और उन्हें हमेशा सत्य के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

(4)

एकमात्र चंद्रमा दिन-रात निरंतर आकाश में विचरण करता है और हम सभी के हृदयों को आनंदित करता है। सागर का ज्वार-भाटा उसी के कारण होता है। वह खारे सागर की लहरों और उनके टूटते बल को भी नियंत्रित करती है। वर्षा के बादल उसी खारे पानी को मीठे (पीने योग्य) पानी में परिवर्तित कर देते हैं, जो सभी प्राणियों की प्यास बुझाकर उन्हें तृप्त और प्रसन्न करता है। अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग धर्म क्यों हैं? ज्योति पूछती है, तुम पागल क्यों हो गए हो?

(5)

(सृष्टिकर्ता) ने हवा को विशेष रूप से बनाया है, इसीलिए सभी प्राणी स्वतंत्र रूप से सांस ले सकते हैं (श्वास ग्रहण और निःश्वास)। यह सभी प्राणियों और संसार की प्रकृति (पौधों और वृक्षों) का पोषण और संरक्षण करती है। यह हवा ही है जो वातावरण को शुद्ध रखती है और सभी प्राणियों को दिन-रात सुखी और संतुष्ट रखती है। ज्योति कहती हैं, सभी मनुष्य सत्य के सार्वभौमिक धर्म का पालन करें और ईश्वर की स्तुति करें।

(6)

सृष्टिकर्ता ने सभी प्राणियों को आंखें (दृष्टि) प्रदान की हैं, जिनसे वे एक-दूसरे को देख सकते हैं। उन्होंने उन्हें तर्क शक्ति भी दी है, जिससे वे (वास्तविक) सत्य की खोज कर सकते हैं और अज्ञानियों को (सही) मार्ग पर ले जा सकते हैं। सृष्टिकर्ता ने हम सभी के लिए सत्य का एक सार्वभौमिक धर्म निर्धारित किया है। लोगों का आपस में विभिन्न बातों पर झगड़ा करना क्या उचित है? ज्योति कहते हैं कि सभी मनुष्य सृष्टिकर्ता के प्रति श्रद्धा और भय का भाव रखें और इस प्रकार सुखी जीवन व्यतीत करें।

(7)

सभी पुरुष और स्त्रियाँ ईमानदारी से परिश्रम करें, अपने परिवार के सभी सदस्यों का सम्मानपूर्वक पालन-पोषण करें और इस प्रकार सुख और संतोष से जीवन व्यतीत करें। अपने सभी बच्चों (पुत्र और पुत्रियों) को विद्यालय भेजें और असहाय विद्यार्थियों को नि:शुल्क भोजन कराएँ। अपने दैनिक जीवन में परम सत्य के उपदेशों का पालन करें और विकलांग व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति और करुणा का भाव रखें। ज्योति कहते हैं कि ऐसे आचरण से न केवल दूसरों को सुख और संतोष मिलेगा, बल्कि आप स्वयं भी सुख और संतोष प्राप्त करेंगे।

(8)

जो व्यक्ति व्यसनों का आदी है, वह किसी से भीख पाने का पात्र नहीं है। झूठा व्यक्ति शराबी के समान ही बुरा है, क्योंकि वह अपने अविवेकी व्यवहार पर नियंत्रण नहीं रख सकता। सभी मनुष्य एक दूसरे के लिए भाई-बहन के समान प्रिय हैं, और तुम उन सब में सबसे श्रेष्ठ हो। ज्योति कहते हैं कि तुम्हें अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग एक दूसरे को प्रसन्न करने के लिए करना चाहिए और असहायों की देखभाल करनी चाहिए।

(9)

हम सभी के सृष्टिकर्ता, हम सबके परम स्वामी हैं, और समस्त मनुष्यों को उनका आदर करना चाहिए। हम सभी को जीवन की सुख-सुविधाओं का समान रूप से लाभ उठाना चाहिए, शांति और सद्भाव से रहना चाहिए और कभी भी कलह नहीं करनी चाहिए। मनुष्यों को धर्म या राष्ट्रीयता के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए और सृष्टिकर्ता की इच्छा के अनुसार (सृष्टिकर्ता के निर्देशों के अनुसार) सदा सत्यनिष्ठा से व्यवहार करना चाहिए। मैं आप सभी से सुखी और समृद्ध होने की प्रार्थना करता हूँ। ज्योति समस्त मनुष्यों से यही निवेदन करते हैं।

(10)

सौर मंडल की अंतरिक्ष में गति इतनी अद्भुत है कि यह मानवीय तर्कशक्ति और कल्पना से परे है। अनगिनत अन्य उपग्रह सौर मंडल के चारों ओर गुरुत्वाकर्षण बल से घूमते हैं। पृथ्वी असंख्य जीव-जंतुओं से आबाद है। सृष्टिकर्ता ने सभी मनुष्यों की रचना की है और वह उन्हें अपने बच्चों की तरह सुरक्षित रखता है। ज्योति कहते हैं, 'जैसा तुम अपने साथ चाहते हो, वैसा ही दूसरों के साथ व्यवहार करो' और सभी को शांति और सद्भाव प्रदान करो।

ब्राह्मणों का पाखंड

पाखंडी ब्राह्मणों की लालसा और भट (पुजारियों) के धूर्त प्रयास शूद्रों को लूटने की मंशा से

प्रेरित होते हैं। वे बेशर्मी से कहते हैं कि भगवान ही उन्हें सब कुछ प्रदान करते हैं, और इसीलिए वे शूद्रों को शिक्षा देने का साहस करते हैं। वे भगवान को एक आनंदित और लापरवाह व्यक्ति के रूप में चित्रित करते हैं और उनके नाम पर शूद्रों को धोखा देते हैं। आलस्य मनुष्य का शत्रु है, इसलिए मनुष्य को अपनी आजीविका के लिए शारीरिक श्रम करना चाहिए। दूसरी ओर, धूर्त ब्राह्मण अनैतिक तरीकों से अपना भरण-पोषण करना चाहता है। वह अपनी नाक को हाथ (उंगलियों) से ढककर निरंतर भगवान का नाम जपता है और शूद्रों से खेतों में मेहनत करने और अपने श्रम के फल से ब्राह्मणों का भरण-पोषण करने की अपेक्षा करता है। वे भव्य भोजों का आनंद लेते हैं और रात में नरम पलंगों पर विश्राम करते हैं। वे शूद्रों का विभिन्न तरीकों से शोषण करने के लिए ही कई उच्च सरकारी पदों पर आसीन होते हैं। ब्राह्मण अपने मन ही मन चाहते हैं कि विद्यालयों में केवल ब्राह्मणों को ही शिक्षक नियुक्त किया जाए, ताकि वे शूद्रों को अज्ञानी बनाए रखने के लिए उनके शिक्षण कर्तव्य की घोर उपेक्षा कर सकें। कुछ चतुर और धूर्त ब्राह्मण राजनेता भारत के हित में काम करने का दिखावा करते हैं (भारतीय देशभक्तों के रूप में), लेकिन गुप्त रूप से ब्रिटिश संसद में निर्वाचित होने की महत्वाकांक्षा रखते हैं, और वे शूद्रों से युद्ध के मैदान में लड़ने और मरने की अपेक्षा करते हैं। ब्राह्मण - स्वयं को पृथ्वी देवता मानते हैं - जीवित रहते हुए शूद्रों के कंधों पर भव्य पालकियों में सवार होने की तीव्र इच्छा रखते हैं, और मरने के बाद उन्हीं शूद्रों से शववाहक बनने की अपेक्षा करते हैं। ब्राह्मण भारतीय सिविल सेवा में प्रवेश करने के लिए बेहद उत्सुक रहते हैं, लेकिन सार्वजनिक सभाओं में ब्रिटिश शासकों की आलोचना करने का दिखावा करते हैं। वे उत्तम अंग्रेजी में अंग्रेज़ शासकों के विरुद्ध कटु निंदा करते हैं, जबकि भारतीयों के अधिकारों के लिए लड़ने का ढोंग करते हैं। ज्योति विनम्रतापूर्वक शूद्रों से आग्रह करते हैं कि वे ब्राह्मणों की इस कुटिलता को जड़ से उखाड़ फेंकें, ईमानदारी से परिश्रम करके अपनी आजीविका कमाएँ और पूर्ण विनम्रता के साथ शाश्वत सत्य के मंदिर में उपासना करें।

दिव्य ज्वाला

जय हो ज्योति लूथर! पवित्र ग्रेल के खोजी!
आर्यों के साथ हुए अन्याय को सुधारने वाला वीर योद्धा
चैंपियन - कमजोरों का साहस,
निष्कासन करने वाले पुजारी, मैमन ने एक शानदार मार्ग प्रशस्त किया।

आत्मा भविष्यवक्ता, माली महान,
शूद्रों के बीच कलह दूर करने वाला, मुक्तिदाता
मूर्ति-भंजक और 'खेती करने वाले की चाबुक की रस्सी',
शाश्वत प्रकाशस्तंभ, समुद्र और भूमि के पार।

आने वाली पीढ़ियों के पालक पिता
सत्य की खोज करने वाला, उदार, स्वतंत्र,

मेहनतकश लोग सौहार्द में एकजुट हो जाते हैं
'मिठास और प्रकाश', एक उज्ज्वल सुबह।

-पी. जी. पी.

शूद्रों से स्थानीय निधि (कर) वसूलने की प्रथा की निंदा करने वाली कविताएँ (1 से 11)

(1)
ब्राह्मणों के बच्चे अपनी शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी कर लेते हैं। वे अंग्रेज़ शासकों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार रखते हैं। वे अंग्रेज़ शासकों की जमकर प्रशंसा करके उच्च पदों पर आसीन हो जाते हैं और शूद्रों का जीवन के हर क्षेत्र में शोषण करते हैं। गुमराह ब्राह्मण शिक्षक शूद्र बच्चों को तर्क और धर्म के गलत सिद्धांत सिखाते हैं, क्योंकि वे अंग्रेज़ शासकों से घृणा करते हैं और उनसे ईर्ष्या करते हैं। ज्योति कहती हैं, "हे शूद्रों! तुम्हें सबसे पहले अंग्रेज़ शासकों की अंतरात्मा को जगाना चाहिए, क्योंकि वे तुमसे जबरन स्थानीय निधि वसूल रहे हैं।"
(2)
शूद्र अपने बच्चों की शिक्षा के लिए सरकार को हर साल भूमि कर के साथ-साथ स्थानीय निधि (एक रुपये पर एक आना) भी देते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, धूर्त ब्राह्मण शिक्षा विभाग में सारा पैसा हड़प लेते हैं। कृपया हमें बताइए कि उन्होंने अब तक कितने शूद्र बच्चों को (स्कूलों में) पढ़ाया है और कितने शूद्र अधिकारियों को प्रशिक्षित किया है। श्वेत (अंग्रेज़) अधिकारियों के मन में शूद्रों के लिए सहानुभूति तो है, लेकिन दुर्भाग्य से वे सभी महत्वपूर्ण पदों पर ब्राह्मणों को नियुक्त करते हैं। ज्योति कहती हैं कि उदार शूद्र अब सरकार को स्थानीय निधि देने और उसी निधि से ब्राह्मण (अधिकारियों) का भरण-पोषण करने से तंग आ चुके हैं।
(3)
शिक्षा विभाग के अंग्रेज़ अधिकारियों को गांवों के सभी प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण करना चाहिए, क्योंकि भारत में ब्राह्मण जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक अहंकारी हो गए हैं। उन्हें ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति करनी चाहिए जो निर्विवाद रूप से मानवतावादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण हों, और उन्हें शूद्रों के प्रति ब्राह्मणों के घृणित भेदभाव को पूरी तरह से त्याग देना चाहिए। कट्टर रूढ़िवादी ब्राह्मण शिक्षकों द्वारा शूद्र बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा उनके मन में एक झूठे धर्म का सार भर देती है। मनुस्मृति में वर्णित मनु का सिद्धांत झूठ का पुलिंदा है। हे प्रभु, कब तक उदार शूद्र सरकार को स्थानीय निधि का भुगतान करते रहेंगे, केवल ब्राह्मणों को समृद्ध करने के लिए? ज्योति पूछता है।
(4)
शूद्र समुदाय के युवा लड़कों को शिक्षा प्राप्त करने दें (विद्यालयों में जाकर) और उन्हें शिक्षा

विभाग में शिक्षक के रूप में सेवा करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। विद्यालयों में किसी भी प्रकार के विद्यार्थियों के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षकों को सभी बच्चों को निष्पक्षता और एकरूपता से पढ़ाना चाहिए। शूद्रों को जातिगत भेदभाव (सांप्रदायिकता) के इस कलंक का पूर्णतः त्याग करना चाहिए और पुण्य कर्मों से आर्य ब्राह्मणों को लज्जित करना चाहिए। ज्योति कहते हैं कि स्थानीय कोष में शूद्र अपनी मेहनत से योगदान देते हैं, लेकिन बेईमान आर्य ब्राह्मण इसे हड़प लेते हैं।

ढलान

हे महारानी (सम्राज्ञी विक्टोरिया)! भारत में आपका हुकूमत नहीं चलता। (भारत में आपकी सरकार सो गई है)। कृपया अपनी आँखें खोलें और ब्राह्मण अधिकारियों (नौकरशाही) द्वारा मचाई गई तबाही को देखें। पारंपरिक ब्राह्मण ग्राम लेखाकार (कुलकर्णी) अपनी कलम की शक्ति से अभिलेखों को नियंत्रित करता है। कनिष्ठ राजस्व अधिकारी (महालकारी) अपने उपमंडल में स्वामी है। तहसीलदार शूद्रों को कठोर दंड देता है, और इसलिए उनके लिए मृत्यु के देवता (यम) के समान है। बेचारा कलेक्टर अपने निजी सचिव की कुटिल चालों के आगे सचमुच बेबस है। राजस्व विभाग में अधिकांश ब्राह्मण अधिकारी ही कार्यरत हैं। हर सरकारी विभाग पर ब्राह्मण नौकरशाहों का एकाधिकार है, और इसलिए बेचारे अज्ञानी किसान को उनसे कोई न्याय नहीं मिलता। ज्योति महारानी से शूद्रों (प्रजा) की सहायता करने और उन्हें दुष्टों (भारत में ब्राह्मण नौकरशाही) के चंगुल से मुक्त कराने का अनुरोध करती है।

ब्राह्मण पुरोहितवाद के बारे में अभंग

हे शूद्रों, ब्राह्मण पुरोहितों पर निर्भर मत रहो! वे झूठे धर्म की आड़ में तुम्हें लूटते हैं। अपने मित्रों और जाति के लोगों में से युवा और वृद्ध दोनों को मध्यस्थ चुनो। उन्हें मध्यस्थ नियुक्त करते समय उनकी आयु, अनुभव और तुम्हारे प्रति उनके भाईचारे की भावना का ध्यानपूर्वक विचार करो। दूल्हा और दुल्हन को पहले ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए और फिर एक-दूसरे को माला पहनानी चाहिए। तब तुम सब मिलकर आनंद मना सकते हो। ज्योति कहती हैं कि तुम्हारे विवाहों में ब्राह्मण पुरोहितों की कोई आवश्यकता या औचित्य नहीं है और तुम्हें उन्हें विवाह पंडालों से दूर भगा देना चाहिए।

(5)

लगभग सभी ग्रामीण विद्यालयों में ब्राह्मण शिक्षक के रूप में कार्यरत पाए जाते हैं, लेकिन वे शूद्र बच्चों के मन में राजद्रोह का भाव भरते हैं। वे मांग और महार (अछूत) विद्यार्थियों को अन्य (उच्च जाति) विद्यार्थियों से अलग बैठाते हैं और बिना कोई उपयोगी कार्य किए स्थानीय निधि (कर) का अनुचित लाभ उठाते हैं। ब्राह्मण शिक्षक शिक्षा विभाग के श्वेत (अंग्रेज़) अधिकारियों को चालाकी से धोखा देते हैं और मनगढ़ंत धर्म के सिद्धांतों से महारों का उत्पीड़न करते हैं। अछूत सरकार को 'स्थानीय निधि' का योगदान देते हैं (यह 'स्थानीय निधि' अछूतों के कल्याण के लिए खर्च की जानी चाहिए)। ज्योति पूछती है, फिर ब्राह्मण

अछूतों के साथ यह छल क्यों करते हैं?

(6)

(निर्दयी) ब्राह्मण शिक्षक अपने विद्यालयों में पढ़ने वाले शूद्र बच्चों पर अत्याचार करते हैं और कक्षाओं में (अन्य विद्यार्थियों के सामने) उनका खुलेआम उपहास करते हैं। जातिवादी (जाति-चेतन) ब्राह्मण (शिक्षक) खुलेआम अपनी जातिगत श्रेष्ठता का प्रदर्शन करते हैं और (बेशर्मी से) अपनी जातिगत श्रेष्ठता का ऐलान करते हैं। प्राचीन काल में आर्य ब्राह्मण यज्ञों में घोड़ों और गायों का मांस (गोमांस) खाते थे, जबकि अंग्रेजी शासन में वे बकरियों का वध करके ही संतुष्ट हो जाते हैं। ज्योति कहते हैं कि उनमें अंग्रेजी शासकों की आत्म-धार्मिकता से आलोचना करने का दुस्साहस है, लेकिन साथ ही वे शूद्रों का घोर शोषण भी करते हैं।

(7)

ब्राह्मण परीक्षक (या विद्यालय निरीक्षक) खुलेआम पक्षपात करते हैं और ब्राह्मण विद्यार्थियों को उनकी वास्तविक योग्यता से अधिक अंक देते हैं (विद्यालय परीक्षाओं में)। वे शूद्र विद्यार्थियों को घूरते हैं और इस प्रकार उन्हें परीक्षा में डराते हैं। आर्य ब्राह्मण जो संसार में दूसरों (शूद्रों और अति-शूद्रों) से घृणा करते हैं, वास्तव में प्रथम श्रेणी के नीच (कायर या नीच) हैं और हर समय उनका अपमान और उन्हें नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं छोड़ते। ज्योति कहते हैं कि भोले-भाले, भोले-भाले (पवित्र) अंग्रेज ब्राह्मणों को अनावश्यक रूप से लाड़-प्यार करते हैं और उन्हें (अपनी कुटिलता का अभ्यास करने के लिए) खुली छूट देते हैं।

(8)

सभी शूद्र बच्चों को सरकारी विद्यालयों में प्राथमिकता के आधार पर दाखिला दिलाओ और किसी भी कीमत पर घृणित भाट (ब्राह्मणों) को बख्शो मत। हे शूद्रों! तुम्हें ब्राह्मणों के समान शिक्षक बनने का प्रयास करना चाहिए और सत्य के सिद्धांतों का पालन करने में उनसे श्रेष्ठ होना चाहिए। तुम्हें शूद्र बच्चों को (विद्यालयों में) वास्तविक ज्ञान देना चाहिए और फिर खोखली बातों में लिप्त नहीं होना चाहिए। तुम्हें मनु के (घृणित) सिद्धांत को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास करना चाहिए। हे ब्राह्मणों, इस (उपयोगी सेवा) को करने के बजाय, तुम (शूद्रों से) 'स्थानीय निधि' की मांग करते हो और इस प्रकार शूद्रों को अपमानित या अपमानित करते हो, ज्योति कहते हैं।

(9)

शिक्षा प्राप्त करने के बाद, आपको गाँव-गाँव घूमकर शूद्रों को शिक्षा प्राप्त करने की सलाह देनी चाहिए। सरकार से स्कूलों में शूद्र शिक्षकों की नियुक्ति की मांग करें और आदरणीय आर्य ब्राह्मणों को घर-घर भीख मांगने के लिए कहें। अपने सभी शूद्र बालक-बच्चियों को बिना किसी चूक के विद्यालय भेजें ताकि वे जीवन के सभी क्षेत्रों में (विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए) सुयोग्य (चरित्रवान) बन सकें। शूद्रों को स्थानीय कोष में किन-किन लाभार्थियों को योगदान देना चाहिए? और वे कब तक धूर्त (ब्राह्मणों) का भरण-पोषण करते रहेंगे? ज्योति पूछता है।

(10)

सरकारी स्कूलों की बहुतायत खोलकर (हजारों) दीपक जलाएं। (शूद्र बच्चों के लिए) और

इस देश में (बहुसंख्यक) शूद्रों और उनसे संबंधित लोगों के जीवन को रोशन करें। किसी से भी 'स्थानीय निधि' के रूप में कोई सहायता लिए बिना, शूद्रों को दिखाएं कि आप उनके लिए क्या चमत्कार कर सकते हैं। जनता को ऐसी उपयोगी सेवा प्रदान करने के बजाय, आप उन्हें (विभिन्न तरीकों से) परेशान करते रहते हैं और (अन्यायपूर्वक) दोष उन दुर्भाग्यशाली लोगों पर मढ़ते हैं। ज्योति कहते हैं कि आपको अंग्रेजी सरकार का दिल से धन्यवाद करना चाहिए कि उन्होंने (मनु के विनाशकारी सिद्धांतों को) इस भूमि से निर्वासित कर दिया।

(11)

आपको ध्यानपूर्वक यह पता लगाना चाहिए कि आर्य ब्राह्मण किस प्रकार शूद्रों पर अत्याचार करते हैं और सभी विभागों में सत्ता के सभी पदों पर कब्जा जमा लेते हैं। आर्य ब्राह्मणों द्वारा अब तक आप पर किए गए विभिन्न छल-कपटों और धोखे को उजागर करें और समय-समय पर सभी लोगों के सामने इसका खुलासा करें। सभी अज्ञानी शूद्रों और उनके सहयोगियों के साथ न्यायपूर्ण और उचित व्यवहार करें और इस प्रकार उन्हें ब्राह्मणों के कुकर्मों के प्रति आश्वस्त करें। ज्योति कहते हैं, विश्व को यह सिद्ध करें कि आप शूद्रों के योग्य वंशज हैं।

काव्य चयन

मनुष्य को धर्म या शासन प्रणाली के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए, बल्कि ईश्वर की महिमा के लिए सत्य के मार्ग का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करना चाहिए। हम सभी को ईसाई, मुसलमान, मुस्लिम और ब्राह्मणों को अपने सगे भाई-बहनों की तरह अपनाना चाहिए। हमारे सृष्टिकर्ता द्वारा निर्धारित सत्य का केवल एक ही सार्वभौमिक धर्म है। तो फिर हम विभिन्न धर्मों को लेकर क्यों झगड़ते हैं?

The Shudras Duped

(भट) कुलकर्णी गांवों में रहने वाले (अज्ञानी) शूद्रों को अदालतों में मुकदमे दायर करने के लिए उकसाते हैं (व्यर्थ के मुकदमों में लिप्त होने के लिए)। वे शूद्रों को मुकदमेबाजी जारी रखने के लिए ऋण देते हैं और सभी से रिश्वत लेते हैं। ब्राह्मणों ने शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखा (उन्हें अज्ञानी बनाए रखा) और इस प्रकार उन पर हमेशा के लिए प्रतिशोध लिया। ज्योति कहती हैं कि ब्राह्मणों को शूद्रों से क्षमा मांगनी चाहिए और उन्हें शीघ्र ही शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

किसी प्रवक्ता की आवश्यकता नहीं

दुष्ट ब्राह्मण मांग को अपने से दूर रखता है और अपने लिए आरक्षित कुएँ से पानी भरता है।

यदि मांग प्यास से मर भी जाए तो भी निर्दयी ब्राह्मण जरा भी दया नहीं दिखाता। ब्राह्मण मानवद्वेषी, अहंकार से भरे, सभी बुराइयों के प्रतीक और उपद्रवी होते हैं। (यद्यपि वे मांग को अछूत मानते हैं) फिर भी वे मांग से विवाह समारोह में भाग लेने के बदले (सुरक्षित दूरी से) धन का दान सहर्ष स्वीकार करते हैं। ज्योति कहती हैं कि वे इस अनिवार्य दान (भिक्षा) का आनंद लेते हैं, भले ही यह वर्जित हो।

ब्राह्मण हिंदू धर्म के प्रतिनिधि (प्रवक्ता) हैं और उन्होंने सभी अज्ञानी लोगों (शूद्रों) का शोषण किया है। इन प्रवक्ताओं ने धर्म की आड़ में भोले-भाले लोगों को लूटा है और इस प्रकार अपना स्वार्थ पूरा किया है। ज्योति कहते हैं कि ईश्वर के समक्ष किसी प्रवक्ता, मध्यस्थ या बिचौलिए की आवश्यकता नहीं है और सच्ची श्रद्धा ही वास्तविक है।

सच का

ब्राह्मण, जो धार्मिक वर्जनाओं से ग्रस्त हैं, मांग (अछूत) की निंदा करते हैं, परन्तु उसी क्षण वे अंग्रेजों के साथ भोज में शामिल होते हैं जहाँ वे (ब्राह्मण) मांस खाते हैं और शराब पीते हैं। वे (मुकदमेबाजों से) न्याय करते हुए अवैध रिश्वत लेते हैं और (बेशर्मी से) अन्याय का समर्थन करते हैं। वे आम रखैलियों को खुशी-खुशी चूमते हैं, परन्तु ये निर्लज्ज लोग महारों (अछूत) की निंदा करते हैं। ज्योति कहते हैं कि (शूद्रों को) आर्य ब्राह्मणों को मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु मानना चाहिए और इसलिए उनसे पूरी तरह बचना चाहिए (या उन्हें सिरे से नकार देना चाहिए)।

ब्रैडलॉ

हे अंग्रेजों! अब चुप मत रहो, बल्कि (प्रगतिशील, नास्तिक अंग्रेज संसद सदस्य) चार्ल्स ब्रैडलॉ को शीघ्र भारत लाओ। उसे (श्री ब्रैडलॉ को) कान पकड़कर वेदों की कुटिल शिक्षाओं का पर्दाफाश करो, साथ ही यह भी उजागर करो कि सत्ता के नशे में चूर ब्राह्मण भारत में शूद्रों पर किस प्रकार अत्याचार करते हैं। उसे शूद्रों की दयनीय स्थिति का कोई ज्ञान नहीं है। अब झूठ का प्रकाश नहीं चमक सकता। प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित न होने वाला उपदेश सरासर बकवास है। ऐसे निरर्थक ज्ञान पर धिक्कार! ज्योति कहते हैं।

शूद्रों की दुर्दशा

आर्य ब्राह्मण हमारे शास्त्रों के रचयिता और न्याय के प्रदाता थे। प्राचीन काल में वे हमारे गुरु भी थे। इसीलिए नीच ब्राह्मणों ने हमें (शूद्रों और अतिशूद्रों को) सबसे नीच स्तर पर लाद दिया और स्वयं को श्रेष्ठ मान लिया। हमें किस ब्राह्मण का आदर करना चाहिए और किसे अपने घर में धार्मिक अनुष्ठानों के लिए आमंत्रित करना चाहिए? हे गैर-ब्राह्मणों! कृपया ध्यानपूर्वक विचार करें और सभी मनुष्यों का आदर करें। ज्योति कहते हैं कि वे सह्याद्रि-खंड के निवासी हैं और उनका इतिहास मेरे अखंडों में वर्णित है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

ब्राह्मणों ने (1885 में) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की और कुछ मूर्ख शूद्रों को अपना सदस्य बना लिया। वे भारत में भोले-भाले शूद्रों का शोषण करते हैं और ब्राह्मण वंश से होने के बावजूद रेस्तरां में भोजन करते हैं। चालाक और स्वार्थी आर्य गोरों (अंग्रेजों) की आलोचना करते हैं और अपने लिए उच्च पदों की मांग करते हैं। ज्योति के अनुसार, भाट अधिकारी अधार्मिक तरीकों से धन इकट्ठा करते हैं और शूद्रों पर अत्याचार करते हैं।

एक माफी जो बहुत पहले ही मांगी जानी चाहिए थी

आर्यन भाटों! कृपया कमर कस लें और समस्त संसार से घुटने टेककर क्षमा मांग लें। आपने शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखा और अति-शूद्रों (अछूतों) की छाया को भी अपवित्र समझा। आपको शूद्रों (और अति-शूद्रों, उनसे संबंधित जातियों) के प्रति स्नेह दिखाना चाहिए और सभी मनुष्यों के साथ सच्चाई और ईमानदारी से व्यवहार करना चाहिए। हे ब्राह्मणों, आप इतने कृतघ्न क्यों हो गए हैं और अंग्रेजों की निंदा क्यों करते हैं? ज्योति पूछता है।

स्थानीय निधि

गरीब शूद्र किसान अपने खेत में कड़ी मेहनत करता है और बड़ी मुश्किल से अपने परिवार और बैलों का भरण-पोषण करता है। वह सरकार को स्थानीय निधि और भूमि मूल्यांकन दोनों देता है और साथ ही कुछ अनाज भी देता है। अंग्रेज सरकार सभी कर, उपकर और अंशदान वसूल करती है और छात्रों के लिए नाममात्र के प्राथमिक विद्यालय ही खोलती है। ज्योति कहती हैं कि भाट (शिक्षक) शूद्र बच्चों को केवल धोखा देते हैं और अंग्रेज अधिकारियों को मनगढ़ंत कहानियों से गुमराह करते हैं।

राष्ट्रीय कांग्रेस?

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सभी धर्मों के लोगों का प्रतिनिधित्व हो और आर्य ब्राह्मणों को न्याय के कटघरे में खड़ा किया जाए। उनके पूर्वजों ने घोर शत्रुता के कारण ही कृत्रिम और मनगढ़ंत पुस्तकें और मनगढ़ंत कहानियों से भरे वेद रचे। उन्होंने शूद्रों और म्लेन्छों पर अथाह अत्याचार किया और वे समस्त मानव जाति में सबसे अधिक झगड़ालू हैं। ज्योति कहते हैं, ब्राह्मणों को सत्य और धर्म के श्रेष्ठ मार्ग पर ले आओ और सभी को सुखी और संतुष्ट करो।

संतुष्टि

सृष्टिकर्ता ने समस्त प्राणियों की रचना की और उन्हें हर संभव तरीके से सुख प्रदान किया। उन्होंने विभिन्न वस्तुओं का सृजन किया, सबका पालन-पोषण किया और उनके हृदयों को अनन्त आनंद से भर दिया। समस्त प्राणियों में उन्होंने मनुष्य को बुद्धि प्रदान की, ताकि वह सत्यपरक आचरण करे और एक आदर्श बने। हमें सताहित और पीड़ित लोगों तथा असहाय अनाथों का पालन-पोषण करना चाहिए और उनके प्रति अत्यंत प्रेम और चिंता प्रकट करनी चाहिए, मानो वे हमारे भाई हों। सदा उनकी चिंताओं और उनके कार्यों के प्रति सजग रहें और उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता का भाव रखें। दूसरों को कष्ट देना मनुष्य के लिए निंदनीय है और संसार में कलह का कारण बनता है। हमें सदा उनके प्रति कृतज्ञ और संतुष्ट रहना चाहिए, क्योंकि यही सुख और संतोष का निश्चित संकेत है, ज्योति कहते हैं।

स्वर्ग कहाँ है?

आर्य ब्राह्मणों ने अपनी कल्पना शक्ति और सरल अनुमानों के बल पर स्वर्ग की शाश्वत शांति की कल्पना की है और उसका वर्णन अपने पवित्र ग्रंथों में किया है। “स्वर्ग कहाँ है?” क्या किसी ने उसे स्वयं देखा है? भयभीत न हों, बल्कि हमें वह स्वर्ग दिखाएँ। (यह सिद्ध करें कि वह वास्तव में विद्यमान है)। हे नीम-हकीम या तांत्रिक, मैं यह प्रश्न आपसे पूछता हूँ। हे प्रिय ब्राह्मण भाई, व्यर्थ के तर्कों या कुतर्कों में न उलझें। हर जगह खोजबीन करें, और आप पाएंगे कि झूठा व्यक्ति कभी सुखी और संतुष्ट नहीं रह सकता, ज्योति कहते हैं।

सुकरात

सुकरात सदा सुखी और संतुष्ट रहते थे, और समभाव और संतुलित मन से सुशोभित थे। ['उन्हें तुरंत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है' यह पंक्ति संभवत: पिछले अखंड से स्थानांतरित की गई है। मैंने अंतिम पंक्ति (पिछले अखंड की) का एक अंश लेना उचित समझा है। अनुवादक] सत्य के आधार पर दृढ़ रहते हुए और उसे अपने मन में दृढ़ता से धारण करते हुए, वे गरीबों, असहायों और दुखी लोगों की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देते हैं। (ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में ग्रीस के सोफिस्टों ने महान सुकरात को विष (हेमलॉक) पिलाकर, उनके प्रति घृणा और द्वेष के कारण उन्हें सताया और मार डाला। यदि आप इस दुखद घटना से संबंधित पुस्तकें पढ़ेंगे, तो आपको पता चलेगा कि सुकरात ने मृत्यु के सामने भी अपने मन (आत्मा) का समभाव कभी नहीं खोया), ज्योति कहते हैं।

सहानुभूतिपूर्ण समझ

सृष्टिकर्ता ने सभी मनुष्यों को समान बनाया है, और कोई भी किसी से हीन नहीं है। उसने सभी को अलग-अलग मात्रा में बुद्धि (बुद्धि, तर्क शक्ति) प्रदान की है, लेकिन इसे वंशानुगत रूप से किसी चयनित व्यक्ति को नहीं दिया है। शूद्र और उनसे संबंधित वर्ग किसी भी प्रकार से हीन नहीं हैं, और उनके शारीरिक लक्षण (अंग आदि) आर्यों के समान

ही हैं। शूद्र अपने बहुमूल्य मानवाधिकारों को क्यों भूल गए, और वे मैदान के पशुओं की तरह अति-शूद्र (अछूत) क्यों बन गए? शूद्र कब और कैसे आर्यों के अधीन हो गए? अन्य कब और कैसे आर्यों के गुलाम या दास बन गए? यदि हम आर्यों द्वारा लिखित जाली ग्रंथों का गहन अध्ययन करें, तो हम पाएंगे कि आर्यों का लोभ ही आर्यों और शूद्रों के बीच मूल संघर्ष का कारण था। मनुष्य को धर्म के आधार पर किसी भी अन्य मनुष्य के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए, और सभी को इस संसार में सद्भाव और एकता से रहना चाहिए। मैंने 'सत्य का सार्वभौमिक धर्म' नामक पुस्तक लिखी, लेकिन इसे छापने (और प्रकाशित करने) के लिए मेरे पास धन की कमी थी।

दूसरों का उपकार करने का सिद्धान्त

हे शूद्रों! कुछ दिनों के लिए शराब का त्याग करो और उससे बचाए गए धन से उपयोगी पुस्तकें खरीदो। इन पुस्तकों का अध्ययन करते समय अपने अंतर्मन का चिंतन करो और अपने मन में मनुष्यों के प्रति द्वेष मत रखो। आर्य ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित और पालन किया जाने वाला यह पाखंडी धर्म सत्य पर आधारित नहीं है, और इसका आडंबर (और श्रेष्ठता का दावा) निरर्थक है, जो नीच स्वार्थ से प्रेरित है। आर्य सत्य और सच्चे धर्म का त्याग करके धार्मिकता का अभ्यास करते हैं और 'धर्म युद्धों' में रक्तपात करते हैं। वे पवित्र संतों को धार्मिक संघर्षों से मुक्त रखने का दावा करते हैं और संसार के दुर्भाग्यशाली लोगों (शूद्रों और अति-शूद्रों) को वंशानुगत आधार पर सताते हैं (वंशानुक्रम के आधार पर भेदभाव करते हैं)। ज्योति का कहना है कि परोपकार या सहानुभूतिपूर्ण समझ के बिना वास्तविक संतुष्टि (खुशी) नहीं मिल सकती। बाकी सब एकता में बाधा है।

आर्यन भाटों की धूर्तता

केवल एक ही सच्चा सृष्टिकर्ता है, और समस्त मनुष्य एक हैं। परम सत्य ही उनका राजचिह्न है। उन्होंने समस्त मानवजाति की रचना की है। समस्त मनुष्य उनके बच्चे हैं जिनकी वे प्रेमपूर्वक रक्षा करते हैं। 'जैसा तुम अपने साथ दूसरों से व्यवहार करोगे, वैसा ही दूसरों के साथ करोगे!' और संसार में अपने व्यवहार में समस्त को प्रसन्न और संतुष्ट रखना चाहिए। ज्योति कहते हैं कि हमें अपने आचरण का फल भोगना ही होगा।

दूसरों का उपकार करने का सिद्धान्त

भाटजी ईरान से भारत (बाली की भूमि) आए और लालच के कारण यहाँ के क्षत्रियों (योद्धा वर्ग) पर विजय प्राप्त की। वेदों में इसका लिखित प्रमाण मिलता है कि आर्यों (ब्राह्मणों) ने शस्त्र धारण किए (सेना में सैनिक बनकर युद्ध किया)। उन्होंने पराजितों (क्षत्रियों) को अछूत माना और घोर घृणा के कारण उनकी परछाई को भी अपवित्र समझकर त्याग दिया। उन्होंने उन्हें शिक्षा से वंचित रखा और इस प्रकार उन्हें अज्ञानी बनाए

रखा। इन लूटेरों ने भारतवासियों को लूटकर कंगाल कर दिया और स्वयं को नए स्वामी और शासक घोषित कर दिया। ज्योति कहते हैं कि मांग और महार सच्चे परोपकार की भावना से ओतप्रोत थे, जबकि आर्य (ब्राह्मण) निर्भीक और पराजित हो गए।

साहस या धैर्य

एक सच्चे नैतिक व्यक्ति के मन में सत्य के प्रति गहरा प्रेम, शुद्ध मन और शांत हृदय होता है, और उसके हृदय में साहस और दृढ़ता सदा जागृत रहती है। अपने दैनिक जीवन में इन सभी अनमोल गुणों का उपयोग सत्यपरक या नैतिक आचरण में करें। ऐसा आदर्श व्यक्ति भाग्य के क्रूर प्रहारों को वीरतापूर्वक सहता है, सभी विपत्तियों पर विजय प्राप्त करता है और इस संसार में पीड़ित और विपत्तिग्रस्त लोगों की सहायता करता है। ज्योति कहते हैं कि वे दृढ़ साहस के साथ दूसरों को सुखी बनाते हैं और उनका जीवन गौरवशाली सफलता से परिपूर्ण होता है।

शूद्रों का शोषण किया गया

जब भारत में शूद्रों का साहस और आत्मविश्वास कम हो गया, तो आर्य ब्राह्मणों ने उन्हें अपना गुलाम बना लिया, वे अहंकारी हो गए और (बेशर्म) विलासिता में लिप्त हो गए। डरपोक, भ्रमित और अज्ञानी शूद्रों ने आर्यों के चरणों में गिरकर अपनी सारी गरिमा और आत्मसम्मान खो दिया। अज्ञानता के कारण (गुमराह होकर) उन्होंने मुसलमानों से युद्ध किया और आर्यों के उकसावे पर (युद्ध में) शहीद हो गए। ज्योति कहते हैं कि आर्य ब्राह्मणों ने यहाँ के बहादुर मांग और महारों का शोषण और उन्हें लूटा तथा उन्हें पशुओं के स्तर तक गिरा दिया।

धन्य व्यक्ति

जिसका हृदय शुद्ध हो, जो पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर हो, जिसका आचरण संसार में सत्यनिष्ठ हो, जिसने अपने मन से तुच्छ धार्मिक और सांप्रदायिक विचारों को त्याग दिया हो—ऐसा व्यक्ति ही वास्तव में सुखी और धन्य है। आर्य (ब्राह्मण) सत्य का वर्णन करने का साहस नहीं रखता, और वह वास्तव में चालाक, विचारहीन (मूर्ख) और कपटी है। ज्योति कहते हैं कि मनु अति-शूद्रों (पढ़ों) को असत्य (नकली) वेदों का वर्णन नहीं करते और उन्हें सबके सामने प्रदर्शित करने से इनकार करते हैं।

नीति

ज्योति के अनुसार, सच्ची नैतिकता ही सार्वभौमिक धर्म की जीवन-श्वास है। बाकी सब धर्म का खंडन है। ज्योति का कहना है कि सच्ची नैतिकता ही सार्वभौमिक धर्म की पहचान है

और यही वास्तव में जीवनदायी है। ज्योति के अनुसार, सार्वभौमिक धर्म सत्य और नैतिकता पर आधारित है, और बाकी सब अनैतिक है।

आत्म आत्मनिरीक्षण

आर्य ब्राह्मणों ने अपने विचित्र तर्कों के आधार पर कुछ (धार्मिक) पुस्तकें गढ़ीं और अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए ईश्वर से भी भयभीत नहीं हुए (स्वयं ईश्वर का भी अनादर किया)। वे शूद्रों के घरों में इन (नकली) पुस्तकों का पाठ करते थे और धर्म के नाम पर उन्हें धोखा देते थे। उन्होंने कभी कोई उपयोगी कार्य नहीं किया, बल्कि सभी (अज्ञानी लोगों) को ठगा और स्वयं को पृथ्वीदेव घोषित किया। ज्योति कहते हैं कि उन्होंने आत्मनिरीक्षण का त्याग कर दिया और इस प्रक्रिया में वे मात्र धार्मिकता के अनुयायी बन गए।

आत्म आत्मनिरीक्षण

यदि आप मांग और आर्य (ब्राह्मण) के बीच समानता खोजने का प्रयास करेंगे, तो आप पाएंगे कि दोनों में एक ही आत्मा है। वे खान-पान में लगभग एक समान हैं और एक ही इच्छाओं और आवेगों से प्रेरित होते हैं। मांग और आर्य ब्राह्मण दोनों ही वास्तव में मनुष्य के लिए एक आभूषण हैं, एक विशिष्टता हैं, और दोनों का व्यवहार एक समान है। ज्योति कहते हैं कि आत्मज्ञान समस्त ज्ञान का शिखर है और कोई भी बहिष्कृत (पलायनहीन) नहीं है।

आत्म आत्मनिरीक्षण

जब सभी लोगों को अपने मानवाधिकारों का ज्ञान हो जाएगा, तब आर्य भाटों का रक्षक कौन होगा? शूद्र और अति-शूद्र अवश्य पूछेंगे, यह कैसे संभव है कि हम सभी को नीच और घृणित स्तर पर रखा गया है, जबकि आर्य ब्राह्मणों को बलि (भारत) देश में उच्च स्थान प्राप्त है? विषैले (सांप जैसे) वेद यहाँ अज्ञानी लोगों को डंक मारते हैं और (उन्हें डंक मारकर) पृथ्वी के बिलों में (सांपों की तरह) शरण लेते हैं। यदि तुम आपस में झगड़ा करोगे, तो तुम सभी को हानि (दुःख) होगी, इसलिए तुम्हें सभी विधर्मी प्रथाओं से छुटकारा पाना चाहिए। हे आर्यों, आने वाली विपत्ति से बचने का प्रयास करो और शूद्रों और उनके सहयोगी वर्गों को भाई-भाई मानो। ज्योति कहते हैं, यह आत्मनिरीक्षण करने और अपने सृष्टिकर्ता को याद करने का उपयुक्त समय है।

प्रबुद्ध लोग

सत्य का अनुयायी भूतकाल, वर्तमानकाल या भविष्य से (किसी भी कारण से) भयभीत नहीं होता। वह सदा सत्यपरक आचरण करता है और अपने सभी व्यवहारों में दूसरों को

प्रसन्न रखने का प्रयास करता है। उसके जाने के बाद भी उसकी संतानें (उसके समान) प्रसन्न रहती हैं और उससे संबंध रखने वाले सभी लोग उसे प्रसन्नता और कृतज्ञता के साथ याद करते हैं। ज्योति कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति को 'प्रबुद्ध' या 'महान पुरुष' कहा जाना चाहिए, क्योंकि वह मानव जाति के लिए एक आभूषण है।

जेजुरी के खंडेराव, जो शूद्रों के कुलदेवता थे, ने दो अलग-अलग जातियों की दो पत्नियों से विवाह किया – शूद्र कुनबी जाति की म्हलसाई और शूद्र धनगर (चरवाहा) जाति की बानाबाई। इससे पता चलता है कि कुलवाड़ियों और चरवाहों में अंतर्जातीय विवाह एक आम प्रथा थी।

इसलिए यह कहना उचित है कि कुनबी, माली (बागवान) और धनगर (चरवाहे) तीनों वर्ग एक ही जाति, अर्थात् शूद्र किसान (कृषक समुदाय) से संबंधित थे। इन तीनों जातियों के लोगों को परिस्थितियोंवश खेती छोड़नी पड़ी और उन्होंने जीविका कमाने के लिए अलग-अलग व्यवसाय या धंधे अपनाने शुरू कर दिए। आर्थिक रूप से सक्षम लोग अपनी सूखी ज़मीनों पर खेती करके संतुष्ट हैं। इनमें से अधिकांश, हालांकि अशिक्षित, अंधविश्वासी, अर्धनग्न और भूखे-प्यासे हैं, अपनी सूखी ज़मीनों से मुश्किल से गुज़ारा करते हैं। जिनके पास कोई सहारा नहीं था, उन्हें घर-बार छोड़कर दूसरे काम की तलाश में निकलना पड़ा। कुछ ने घास बेचना शुरू किया, कुछ लकड़ी के व्यापारी बने और कुछ कपड़े के व्यापारी। कुछ छोटे ठेकेदार बन गए, जबकि अन्य ने (अंग्रेज़ी सरकार के अधीन) लिपिकीय कार्य किए और सेवानिवृत्त हो गए।

[3] संभवतः छपाई में त्रुटि है। यह 1851 होना चाहिए।

***** समाप्त *****

sjeet